टीपू सुलतान
(ऐतिहासिक उपन्यास)

टीपू सुलतान

आचार्य चतुरसेन

प्रवीण प्रकाशन
नई दिल्ली-110030

एक

इगलड मे आक्सफोडशायर के अन्तगत चर्चिल नामक स्थान म सन् 1732 ईस्वी की 6 दिसम्बर को एक ग्रामीण गिजाघर वाल पादरी क घर में एक ऐसे बालक ने जन्म लिया जिसन आगे चलकर भारत म अंग्रेजी राज्य की स्थापना का महत्त्वपूर्ण काय किया। इस बालक का नाम वारन हेस्टिग्स पडा। बालक के पिता पिनासटन यद्यपि पादरी थे, परन्तु उन्हाने हैम्टर वाटिन नामक एक कामलागी कन्या स प्रेम प्रसग म विवाह कर लिया। उससे उन्हें दो पुत्र प्राप्त हुए। दूसरे प्रसव के बाद बीमार हान पर उसकी मत्यु हो गई। पिनासटन दोना पुत्रो को अपन पिता की देख रख म छोडकर वहाँ से चले गये और कुछ दिन बाद दूसरा विवाह कर वेस्ट-इडीज मे पादरी बनकर जीवनयापन करने लगे। उन दिना लन्दन नगरी का सामाजिक जीवन पादरिया क प्रभाव स बहुत सुखी नही था। पादरी वहाँ सर्वोपरि बने हुए थे। उन दिनो लन्दन नगर की छ लाख जनसख्या मे पचास हजार वेश्याएँ तथा इतनी ही खानगी व्यभिचारिणी स्त्रियाँ थी। प्रत्येक मुहल्ले के आसपास धनपतिया न अपन-अपने जुआखाने खोल रखे थ जहाँ रात को जुआ खेला जाता, मद्य पी जाती और व्यभिचार के खुले खेल खेले जात थे। जुआघरो क बाहर तख्ती लटकी रहती थी, जिस पर लिखा होता था—साधारण मद्य का मूल्य एक पेंस, बेहोश करन वाली मद्य का मूल्य दो पेंस, साफ सुथरी चटाई मुफ्त।

बालक वारेन अपन दादा के यहाँ पलकर एक छाट स्कूल म पढन लगा। बालक चचल और कुशाग्र बुद्धि था अपना पाठ झट याद कर लेता

था। दादा पहले धनीसम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, परन्तु कालचक्र ने उन्हें झकझोरकर साधारण स्थिति में डाल दिया। जब वृद्धावस्था में वे बालक वारेन को गोद में बिठाकर कभी कभी अपनी पूर्व गौरवगाथा को सुनाया करते थे। वारेन उन सब बातों को बड़े ध्यान से सुनता। उन बातों को सुनने से उसमें साहस और महत्त्वाकांक्षाओं का उदय हुआ। आत्मोन्नति और सकल्प का अमोघ मंत्र दादा ने उसे दिया।

गांव के छोटे स्कूल की शिक्षा समाप्त करके उसके चाचा हावर्ड ने वारेन को न्यू इगटन बटस के बड़े स्कूल में भरती करा दिया। इस स्कूल में पढ़ाई का काम साधारण नहीं था, परन्तु चाचा ने बालक वारेन की प्रतिभा को देखकर उसकी पढ़ाई का भार अपने कंधों पर उठा लिया। वारेन परिश्रम से पढ़ने लगा। दो वर्ष वहां पढ़ने के बाद वह वेस्ट मिनिस्टर में पढ़ने गया। वेस्ट मिनिस्टर में बड़े-बड़े परिवारों के लड़के पढ़ते थे, अत विलियम कूपर, लार्ड शैल बर्न चार्ल्स चर्चिल और इलिजा इम्प उसके सहपाठी बने। वेस्ट मिनिस्टर विद्यालय के प्रिंसिपल डाक्टर निकोलस वारेन की प्रखर बुद्धि और मित्रों से उसका सदव्यवहार देखकर बहुत खुश रहते थे और उन पर विशेष कृपा करते थे। वारेन ने अपने विद्यार्थी जीवन के क्षणों को कभी व्यर्थ नहीं खोया। पढ़ना, मित्रों में वाद विवाद करना तथा तैरना, बोटिंग, दौड़ आदि उसका नियम था। 'किंग्स स्कालर शिप' की परीक्षा में वह सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुआ और छात्रवृत्ति प्राप्त की। दो वर्ष तक यह छात्रवृत्ति मिलती रही। इसी समय वारेन के चाचा की मृत्यु हो गई। अपने चाचा की छत्रछाया हटने से उसे बहुत दुख हुआ। उसकी शिक्षा का व्यय भार उठाने वाला अब कौन था।

इसी समय वारेन का परिचय चिसविक नामक एक सुहृदय व्यक्ति से हुआ जो ईस्ट इंडिया कम्पनी के मनेजिंग बोर्ड में डाइरेक्टर थे। इस समय वारेन की आयु 16 17 वर्ष की थी। उन्होंने उसकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर उसकी शिक्षा समाप्त कर उसे ईस्ट इंडिया कम्पनी में क्लर्की देना तय किया। वेस्ट मिनिस्टर विद्यालय से हटाकर एक अन्य विद्यालय में बहीखाता हुण्डी पुर्जा बीजक आदि लिखने की शिक्षा लेने के लिए भरती कर दिया। एक वर्ष बाद उसे कम्पनी का क्लर्क बनाकर भारत में

कलकत्ता भेज दिया। अक्टूबर 1750 मे वारेन ने भारत-भूमि पर पैर रखा।

कलकत्ते का विलियम फोर्ट इस्ट इडिया कम्पनी के व्यापार की कोठी थी। फोर्ट विलियम के अन्दर सुन्दर उद्यान, तालाव, अस्पताल, गिर्जाघर और परामर्श भवन भी थे। प्रति रविवार को कम्पनी के कर्मचारी गिर्जाघर म आकर प्रार्थना करते और पादरी का उपदेश सुनत थे। वहा दो सौ व्यक्ति रहने थे। इसके जिन दो कमरा म बठकर कम्पनी के गुमाश्त काम करते थे, वह कच्ची ईंटो से बन थे।

अग्रेज और फ्रेंच दोना जातियाँ भारत मे व्यापार बढाने और बसने के लिए प्रयत्नशील थी। फ्रेंच गवनर डयूप्ले अपने देश की हित साधना के लिए सामरिक माग भी अपनाते थे। वारेन से प्रथम क्लाइव ने भारत पहुँचकर कम्पनी के हित मे सामरिक माग को तीव्रता से कार्यान्वित किया जिसके कारण फ्रेंच और अग्रेज दोना विदेशी जातिया अपन व्यापार और स्वामित्व के लिए युद्धप्रिय होती गईं। वारेन के आगमन के समय भारत के दक्षिण प्रान्त के करनाटक मे उत्तराधिकार का झगडा चल रहा था। क्लाइव ने निपुण योद्धा बनकर फ्रासीसियो की आशा नष्ट कर दी थी। परन्तु दक्षिण के इन झगडा का प्रभाव बगाल तक नही पहुँचा था। बगाल मे बसने वाले अग्रेज और फ्रासीसी व्यापारी परस्पर मे मित्रभाव स व्यवहार करते थे। इन व्यापारियो का मुख्य विषय कम्पनी की कोठिया के बहीखाते तथा माल के बीजक थे। कलकत्ते की कोठिया का लेन-देन मध्याह्न तक होता था। मध्याह्न के बाद कम्पनी के कर्मचारी एकत्र होकर भोजन करते थे। भोजन करके कुछ लोग आराम करते, कुछ विचार-विनिमय करते। सध्या होने पर कोठिया से निकलकर बाहर घूमते थे। नौकाविहार, पालकी-पीनसा म बैठकर बाजारहाट घूमना, दो घोड़े अथवा चार घोडा की बग्घियाँ सजाकर उन पर अपनी प्रेयसी सहित नगर भ्रमण करना उनका साध्य-मनोरजन होता था। इनमे कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते थ जो कम्पनी के कर्मचारी होने पर भी अपना पृथक् व्यापार करके माला-माल हो रहे थे। ऐस धनी व्यापारी साध्य-भ्रमण से लौटकर नाचरग और बढिया रात्रि भोजो का भी आयोजन करने रहते थे। कभी-कभी मद्यपान

से उ नत्त होकर उपद्रव भी कर बैठत थे।

वारन हेस्टिग्स इन सब आमोद प्रमोद मे रुचि नहीं लेता था। कोठी का काय समाप्त करके वह अपनी छोटी कोठरी म, जो फोर्ट विलियम म गगा-तट की ओर बनी हुई थी, जाकर भारतीय भाषाओ के सीखने म लग जाता था। अपन मित्रो के साथ काम की ही सब बातें करता था। दो वष तक उसन फोट विलियम कोठी मे काय किया। अक्तूबर 1753 म उस कासिम बाजार की कोठी मे जाकर काम करने की आज्ञा मिली। उस समय कासिम बाजार हुगली नदी के तट पर (गगा और जलगी नदियो के बीच स्थित) बगाल का बहुत समृद्धशाली नगर था। दूर देशो के अनक व्यापारी वहाँ एकत्र होत और व्यापार करत थ। अग्रेज, फ्रासीसी, डच, आर्मिनियन व्यापारियो की बडी बडी कोठियाँ वहाँ बनी हुई थी। रेशम क कारखान, भारतीय जुलाहो की कपडो की दुकानें, बाजार म देश-देशातरो की वस्तुओ का क्रय विक्रय, नदी-तट पर देशी-विदेशी वस्तुओ से भरे हुए जहाजो का आवागमन तथा सब देशो क व्यापारी अपनी-अपनी वेशभूषा म वहाँ आ वाणिज्य व्यवसाय करते थे। अतोल सम्पदा वहाँ भरी हुई थी।

कासिम बाजार म अग्रेजो की कोठी म इगलैड से आया हुआ माल आता और बेचा जाता था। भारत म पैदा हुआ माल और बुना हुआ बढिया रेशमी कपडा इकट्ठा करके इगलैड भेजा जाता था। कोठियो की व्यवस्था एक कौंसिल करती थी। इसकी सुरक्षा के लिए छोटी-सी पल्टन भी रहती थी। हेस्टिग्स न यहाँ आकर अपना काय भार सभाल लिया। कासिम बाजार स दो मील दूर मुर्शिदाबाद था जो बगाल, बिहार और उडीसा के नवाब की राजधानी थी। तत्कालीन नवाब सिराजुद्दौला यहाँ अपने महल म रहते थ। दीवानी फौजदारी अदालतें भी यही थी। हेस्टिग्स को कायवश मुर्शिदाबाद भी जाना पडता था। यहाँ रेशमी माल बहुत मिलता था।

12वी पताब्दी मे शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज चौहान को बन्दी करके दिल्ली की गद्दी गुलाम कुतुबुद्दीन को दी। उसके 10 वर्ष बाद उसने अपने सेनापति बख्तियार खिलजी को बगाल विजय के लिए भेजा। उस समय बगाल मे राजा लक्ष्मणसेन राज्य करता था। उसे हटाकर बख्तियार ने बगाल पर अधिकार कर लिया।

इसके बाद समसुद्दीन अल्तमश ने बगाल के विद्रोह को दमन कर, उस पर अपना अधिकार जमाया। फिर जब अलाउद्दीन मसऊद दिल्ली के तख्त पर था तब मगोलो ने तिब्बत के रास्ते से बगाल पर आक्रमण किया था पर पराजित होकर भाग गये।

इसके बाद खिलजी वश का वहाँ कुछ दिन अधिकार रहा। बुगराखा वहाँ का सूबेदार था।

मुगल-शासन मे कभी हिन्दू और कभी मुसलमान शाहजादे और अमीर बगाल के सूबेदार रहे। शाहजहाँ के जमाने मे शाहजादा शुजा और औरगजेब के जमाने मे प्रथम मीर जुमला और बाद मे शाइस्ताखाँ वहा के सूबेदार रहे।

इसके बाद नवाब अलीवर्दीखाँ बगाल, बिहार तथा बगाल और उडीसा के सूबेदार रहे। जब उन पर मराठो की मार पड़ी और कमजोर दिल्ली के बादशाह ने उनकी मदद न की, तो नवाब ने दिल्ली के बादशाह को मामूली मालगुजारी देना बन्द कर दिया। परन्तु वह बराबर अपने को बादशाह के आधीन ही समझता रहा।

अलीवर्दीखाँ एक सुयोग्य शासक था, और उसके राज्य मे प्रजा बहुत प्रसन्न थी। बगाल के किसानो की हालत उस समय के फ्रास अथवा जर्मनी के किसानो से कही अधिक अच्छी थी। बगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद शहर उतना ही लम्बा चौडा, आबाद और धनवान था, जितना कि लन्दन शहर। अन्तर सिर्फ इतना था कि लन्दन के धनाढ्य से धनाढ्य मनुष्य के पास जितनी सम्पत्ति हो सकती थी, उससे बहुत ज्यादा मुर्शिदाबाद के

बंगाल मे बिना चुंगी महसूल दिये व्यापार करने की आज्ञा दे दी
आज्ञा का खुल्लमखुल्ला दुरुपयोग किया जाता था, और व्यापारिक
पत्र किसी भी हिन्दुस्तानी व्यापारी को बेच दिये जाते थे जिससे
बडी भारी हानि होती थी ।

मरते वक्त अलीवर्दी खाँ ने सिराजुद्दौला को यह हिदायत दी
कि योरोपियन कौमो की ताकत पर नजर रखना । यदि खुदा मेरी
बढा देता, तो मैं तुम्हे इस डर से बचा देता । अब मेरे बेटे ! यह
तुम्हे खुद करना होगा । तिलगो के साथ उनकी लडाइयाँ और राज
पर नजर रखो —और सावधान रहो । अपने-अपने बादशाहो के घ
झगडो के बहाने इन लोगो ने मुगल बादशाह का मुल्क और उनकी प्र
का धन छीनकर आपस मे बाँट लिया है । इन तीनो कौमो को एक सा
जेर करने का खयाल न करना अंग्रेजो को ही पहले जेर करना । जब तुम
ऐसा कर लोगे, तो बाकी कौमे तुम्हे ज्यादा तकलीफ न देंगी । उन्हें किले
बनाने या फौज रखने की इजाजत न देना । यदि तुमने यह गलती की तो
मुल्क तुम्हारे हाथ से निकल जायगा ।

सिराजुद्दौला पर इस नसीहत का भरपूर प्रभाव पडा था और वह
अंग्रेज शक्ति की ओर से चौकन्ना हो गया । उसके तख्तनशीन होने पर
नियमानुसार अंग्रेजो ने उन्हें भेंट नही दी थी । इसका अर्थ यह था कि वे
उसे नवाब स्वीकार नही करते थे । वे प्राय सिराजुद्दौला से सीधा सम्बन्ध
नी नही रखते थे, आवश्यकता पडने पर अपना काम ऊपर-ही-ऊपर निकाल
लेते थे ।

धीरे धीरे नवाब और अंग्रेजो का मन-मुटाव बढता गया । अंग्रेजो ने
जो कासिम बाजार मे किलेबन्दी कर ली थी, नवाब उसका अत्यन्त विरोधी
था । उसने वहाँ के मुखिया को बुलाकर समझाया —"यदि अंग्रेज शान्त
व्यापारियो की भाँति देश मे रहना चाहते हो तो खुशी से रहे । किन्तु सूबे
के हाकिम की हैसियत से मेरा यह हुक्म है कि वे उन सब किलो को फौरन
तुडवाकर बराबर कर दें, जो उन्होने हाल ही मे बिना मेरी आज्ञा के बना
लिये हैं ।'

परन्तु इसका कुछ भी फल न हुआ । अन्त मे नवाब ने कासिम बाजार

मे सेना भेजने की आज्ञा दे दी। अचानक कासिम बाजार में नवाबी सिपाही दीख पडने लगे। होते-होते और भी सैकडो सवार और बरकन्दाज आ आकर शामिल होने लगे। संध्या के प्रथम ही दो लडाके हाथी घूमते घामते कासिम बाजार में आ पहुचे। यह देखकर अंग्रेजो के प्राण कांपने लगे। साठी वाले अंग्रेज एक एक करके भागने लगे। हेस्टिंग्स भी भागकर अपने दीवान कान्ताबाबू के घर में छिप गया। सबने समझ लिया, रात्रि के अंधकार के बढने की देर है बस नवाब की सेना बलपूर्वक किले में घुसकर अंग्रेजो के माल असबाब का सत्यानाश कर लूट-पाट मचा देगी। किले में जो नौकर तथा गोरे लाल सिपाही थे वे तैयार होकर दरवाजे पर आ डटे। परन्तु बुद्धिमान नवाब ने आक्रमण नही किया। उसका मतलब खून बहाने का न था। वह केवल उनकी राजनीति के विरुद्ध, किले बनाने की कार्यवाही का विरोध करने और अपनी आज्ञा के निरादर का दण्ड देने आया था।

सोमवार, मंगल बुध बृहस्पतिवार भी बीत गया। नवाब की अगणित सेना किला घेर खडी रही पर आक्रमण नही किया। उस क्षिद्र किले को राख का ढेर बनाना क्षण भर का काम था। इस चुप्पी से अंग्रेज बडे चकित हुए घबराये भी। न मालूम नवाब का क्या इरादा है! अन्त में साहस करके डा० फोर्थ साहब को दूत बनाकर नवाब की सभा में भेजा गया।

उमराव ने फोर्थ को समझा दिया—"घबराओ मत, नवाब का ज्यादा खून खराबी का नहीं है। आपके प्रधान वाटसन साहब को नवाब के दरबार में एक मुचलका लिख देना होगा और उस के यदि राजी से न लिखेंगे तो जबरदस्ती लिखवाया जायगा। सिर्फ इतनी सेना इसलिए यहाँ आई है।

पर वाटसन साहब को आत्म समर्पण करने का साहस नहीं हुआ। उन्होंने अत्यन्त नम्रतापूर्ण लिख भेजा—

'नवाब साहब का अभिप्राय ज्ञात हो जाने भर की देर है। पश्चात जो उनकी आज्ञा होगी—अंग्रेजों को वह स्वीकार होगा।

इस पत्र का नवाब के दरबार से यही उत्तर मिला — 'किले की चार दीवारी गिरा दो— बस यही नवाब का एकमात्र अभिप्राय है।'

अंग्रेजों ने बड़े शिष्टाचार और नम्रता से कहला भेजा कि—नवाब का जो हुक्म होगा, वही किया जायगा।

परंतु अंग्रेज रिश्वत और खुशामद के जोर से मतलब निकालने की चेष्टा करने लगे। उन्होंने अमीर उमरावों को रिश्वतें देकर अपने वश में कर लिया। अंग्रेज सिराजुद्दौला के स्वभाव और उद्देश्य को नहीं जानते थे। उन्होंने इस अभियान का यही मतलब समझा था कि रिश्वत और भेंट लेने के लिए यह नया जाल फैलाया गया है। काले लोगों को हीन समझने वाले इन बनियों के दिमाग में यह बात न आई कि सिराजुद्दौला युवक और ऐयाश है—तो क्या है, वह देश का राजा है। विद्वान सिराजुद्दौला, इन प्रलोभनों से जरा भी विचलित नहीं हुआ।

अंत में वाटसन साहब हाथ में रूमाल बाँधकर दरबार में हाजिर हुए। नवाब ने उनको अंग्रेजों के उद्दण्ड व्यवहार के लिए बहुत लानत मलामत की। वाटसन बेचारे भयभीत खड़े रहे। लोगों का भय था कि कहीं नवाब इन्हें कुत्तों से न नुचवा दे। परंतु, उसने क्रोधित होने पर भी कर्तव्य का ध्यान किया। उसने साहब को अपने डेरे पर जाकर मुचलका लिखकर लाने की आज्ञा दी। वाटसन साहब ने जल्दी जल्दी मुचलका लिख दिया। उसका अभिप्राय यह था—

"कलकत्ते का किला गिरा देंगे। कुछ अपराधी जो भागकर कलकत्ते जा छिपे हैं, उन्हें बाँधकर ला देंगे। बिना महसूल व्यापार करने की सनद बादशाह से कम्पनी ने पाई है, और उसके बहाने बहुतेरे अंग्रेजों ने बिना महसूल व्यापार करके जो हानि पहुँचाई है, उसकी भर-पाई कर देंगे। कलकत्ते में हॉलवेल के अत्याचारों से—देशी प्रजा जो कठिन क्लेश भोग रही है, उसे उनसे मुक्त करेंगे।"

मुचलका लिखवाकर वाट्सन और हेस्टिंग्स को उनकी शर्तों के पालन होने तक मुर्शिदाबाद में नजरबन्द करके नवाब शान्त हुए। परन्तु पन्द्रह दिन बीतने पर भी मुचलके की शर्तों का कलकत्ते वालों ने पालन नहीं किया। वाट्सन की स्त्री और नवाब की माता में मेल-जोल था। वह अन्तःपुर में आकर बेगम मण्डली में रोने-पीटने लगी। उसके करुण विलापों से पिघलकर नवाब की माता ने पुत्र से दोनों को छोड़ देने का अनुरोध

किया। माता की आज्ञा शिरोधार्य कर, नवाब को बिलकुल अनिच्छा से दोनों बंदियों को छोड़ना पड़ा।

शीघ्र ही नवाब को मालूम हुआ कि अंग्रेज लोग मुचलके की शर्तों का पालन नहीं करेंगे। अतएव उसने व्यर्थ आलस्य में समय न खोकर कलकत्ते को एक दूत भेजा और स्वयं सेना ले चलने की तैयारी करने लगा।

अंग्रेजों ने यह समाचार पाकर झटपट ढाका, बालेश्वर, जगदिया आदि स्थानों की कोठियों को सूचना दे दी कि वहीखाता आदि समेट-समाटकर सुरक्षित स्थानों में चले जाओ। कलकत्ते में वे नवीन ढंग के नगर रक्षा के लिए सैन्य-संग्रह और दुर्ग-मरम्मत करने लगे। वास्तव में वे सिराजुद्दौला को अस्थायी नवाब समझते थे। उनका ख्याल था, उसके परम शत्रु उसे गद्दी से उतारकर वह हमारे इस तुच्छ काम पर क्या दृष्टि डालेगा? इसके सिवा, अभी तक अपनी धन और रिश्वत पर उन्हें बहुत भरोसा था।

पर सिराजुद्दौला वास्तव में नीतिज्ञ पुरुष था। वह जानता था कि मेरे सभी सरदार मेरे विरोधी हैं। वे बार-बार उसे कलकत्ते न जाने की सलाह देते थे क्योंकि प्रायः सभी नमकहराम और घूस खाये बैठे थे। पर नवाब ने किसी की न सुनी। वरन जिस जिस पर उसे षड्यन्त्र का सन्देह हुआ, उस उस को उसने अपने साथ ले लिया जिससे पीछे का खटका भी मिट गया। राजवल्लभ, मीरजाफर जगतसेठ, मानिकचन्द सभी को अनिच्छा होने पर भी नवाब के साथ चलना पड़ा। अंग्रेजों ने स्वप्न में भी न सोचा था कि वह ऐसी बुद्धिमत्ता से राजधानी के सब झगड़े मिटाकर, बिलकुल बे खटके होकर इतनी सेना ले, कलकत्ते पर आक्रमण करेगा।

7 जून को खबर कलकत्ते पहुंची। नगर में हलचल मच गई। अंग्रेज लोग प्राणपण से तैयारी करने लगे। किले में अनेक तोपें लगा दी गईं। जलमार्ग सुरक्षित करने को, बागबाजार वाली खाई में लड़ाई के जहाज लगा दिये। 1500 सिपाही खाई के बराबर खड़े किये गये। चहारदीवारी की समस्त मरम्मत करवाकर उसमें अन्नादि भर दिया गया। मद्रास से मदद मांगने को हरकारा भेजा गया, और जिन फ्रांसीसी शत्रुओं के डर से किला बनाने का बहाना किया गया था, उनसे तथा डचों से भी सहायता

माँगी गई।

डच लोग तो सीधे-सादे सौदागर थे। उन्होंने लड़ाई झगड़े में फँसने से साफ इनकार कर दिया। परन्तु फ्रेंचों ने जवाब दिया "यदि अंग्रेजी शेर प्राणों में बहुत हो भयभीत हो रहे हैं तो वे फौरन ही बिना किसी रोक-टोक के चन्दननगर में हमारा आश्रय लें। आश्रितों की प्राण रक्षा के लिए फ्रान्सीसी वीर सिपाही अपने प्राण देने में तनिक भी कातर न होंगे।

इस उत्तर से अंग्रेज लज्जित हुए, और चौंके। कलकत्ता से ढाई मील पर गंगा के किनारे टाना का एक पुराना किला था। 50 सिपाही उसमें रहते थे। वह कभी किसी काम न आता था। अंग्रेजों ने दो कर उस पर हमला कर दिया। बेचारे सिपाही भाग गये। उनकी तोप तोड़ फोड़कर अंग्रेजों ने गंगा में बहा दी और बड़े गौरव से अपनी विजय पताका उस पर फहरा दी। नागों ने समझ लिया, बस, अब अंग्रेजों की खैर नहीं है। नवाब यह उद्दण्डता न सहन करेगा। दूसरे दिन 2000 नवाबी सिपाही किले के सामने पहुँच गए थे कि अंग्रेज अफसर लज्जा को वहीं छोड़ किले से भागने लगे। भागते जहाजों पर तड़ातड़ गोले बरसने लगे। अंग्रेज अपना गोला-बारूद नष्ट कर, और अपनी झण्डी उखाड़, कलकत्ते लौट आये।

यहाँ आकर, उन्होंने कृष्णवल्लभ, जो राजवल्लभ का पुत्र था, और भागकर विद्रोह के अपराध में अंग्रेजों की शरण आ रहा था, उसे इस डर से कैद कर लिया कि कहीं यह क्षमा माँगकर नवाब से न मिल जाय।

अमीचन्द कलकत्ते का प्रमुख व्यापारी था। सेठों में जैसी प्रतिष्ठा जगतसेठ की थी, व्यापारियों में वही दर्जा अमीचन्द का था। यह व्यक्ति भारतवर्ष के पश्चिमी प्रदेश का बनिया था। अंग्रेजों ने उसी की सहायता से बंगाल में वाणिज्य विस्तार का सुभीता पाया था। उसी की मारफत अंग्रेज गाँव-गाँव रुपया बाँटकर कपास तथा रेशमी वस्त्र की खरीद में खूब रुपया पैदा कर सके थे। उसकी सहायता न होती, तो अंग्रेज लोगों को अपरिचित देश में अपनी शक्ति बढ़ाने और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का मौका कदापि न मिलता।

केवल व्यापारी कहने ही से अमीचन्द का परिचय नहीं मिल सकता।

विशाल महलो से सजी हुई उसकी राजधानी तरह तरह की पुष्प वलियो से परिपूरित उसका वहत्‌राज भण्डार, मशस्त्र सैनिको से सुसज्जित उसके महल का विशाल फाटक देखकर औरो की तो बात क्या है स्वय अग्रेज उसे राजा मानते थे। अनेक बार अमीचन्द ही के अनुग्रह से अग्रेजो की इज्जत बची थी।

अमीचन्द का महल बहुत ही आलीशान था। उसके भिन्न भिन्न विभागो मे सकडो कमचारी हर वक्त काम किया करते थे। फाटक पर पर्याप्त सेना उसकी रक्षा के लिए तैयार रहती थी। वह कोई मामूली सौदागर न था बल्कि राजाओ की भाति बडी शान शौकत से रहता था। नवाब के दरबार मे उसका बहुत आदर था और नवाब उसे इतना मानते थे कि कोई आफत मुसीबत आने पर नवाब सरकार से किसी तरह की सहायता लेने के लिए लोग प्राय अमीचन्द की ही शरण लेते।

जिस समय नवाब की सेना कलकत्ते की तरफ आ रही थी तो अमीचन्द के मित्र राजा रामसिंह ने गुप्त रूप से एक पत्र लिखकर अमीचन्द को चेता दिया था कि 'तुम सुरक्षित स्थान मे चले जाओ तो अच्छा है।' देवयोग से यह पत्र अग्रेजो के हाथ लग गया। बस, इसी अपराध पर धीर वीर अग्रेजो ने अमीचन्द को पकडकर कैदखाने मे ठूस देने का हुक्म अपनी फौज को दिया। अमीचन्द को इस विपत्ति की कुछ खबर न थी। एकाएक फौज ने उसे गिरफ्तार कर लिया, और अभियुक्त की तरह बाँधकर ले चली। कलकत्ते के देशी लोगो मे इस घटना से हाहाकार मच गया।

अमीचन्द का एक सम्बन्धी, जो सारे कारबार का प्रबन्धक था, अत्याचार से डरकर स्त्रियो को कही सुरक्षित स्थान मे पहुँचाने का बन्दोबस्त करने लगा। अग्रेजो ने जब यह सुना, तो अमीचन्द के घर पर धावा बोल दिया। अमीचन्द के यहाँ जगन्नाथ नामक एक बूढा विश्वासी जमादार था। वह जाति का क्षत्रिय था। वह तत्काल अमीचन्द के नौकर चाकरो को इकट्ठा करके महल के फाटक पर रक्षा करने को कमर कस कर तैयार हो गया। अग्रेजो ने आकर फाटक पर लडाई लगा शुरू कर दिया। दोनो पक्षो की मार काट से खून की नदी बह निकली। अन्त मे एक-एक करके अमीचन्द के सिपाही धराशायी हुए। मानुषिक शक्ति ने जो

ाव था, हुआ। अंग्रेज बड़े जोरों से अन्तःपुर की ओर बढ़ने लगे। बूढ़े
नाथ का पुराना क्षत्रिय-रक्त गर्म हो गया। जिन आर्य-महिलाओं को
मान भुवन भास्कर भी नहीं देख सकते थे, वे क्या विदेशियों द्वारा
त होंगी? स्वामी के परिवार की लज्जावती कुल कामिनियाँ क्या
कर विधर्मियों की बन्दी की जायगी?

बस, पल-भर में बिजली की तरह तड़पकर उसने इधर उधर से टूट-
काठ किवाड़ और लकड़ी एकत्र कर आग लगा दी और नंगी तलवार
न्तःपुर में घुस गया, तथा एक एक कर 13 महिलाओं के सिर काट-
कर आग में डाल दिए। अन्त में पतिव्रताओं के खून से लाल — वही
न तलवार अपनी छाती में खोंस ली, और उसी रक्त की कीचड़ में
पटा।

देखते ही देखते आग और धुएँ का तूफान उठ खड़ा हुआ। बड़ी कठि-
से जगन्नाथ को सिपाहियों ने उठाकर कैद किया — उसके प्राण नहीं
ने थे। पर अंग्रेजों को भीतर घुसने का समय न मिला — धाय धाय
के वह विशाल महल जलने लगा।

नवाब हुगली तक आ पहुँचा। गंगा की धारा को चीरती हुई सकड़ों
ज्जित नावें हुगली में जमा होने लगीं। डच और फ्रांसीसी सौदागरों ने
ब में निवेदन किया कि 'योरोप में अंग्रेजों से सन्धि होने के कारण वे
लड़ाई में शरीक नहीं हो सकते हैं।' नवाब ने उनकी इस नीति-युक्त
को स्वीकार कर, उनसे गोला बारूद की सहायता ले, उन्हें विदा
ा।

नवाब के कलकत्ते पहुँचने की खबर बिजली की तरह फैल गई।
ज लोग किले में घुसकर फाटक बन्द कर, बैठे रहे। जिसको जिधर
सूझी, भाग निकला। रास्ता घाटों, जालों और नदियों के किनारों
न-के दल स्त्री पुरुष कुहराम मचाते भागने लगे। पर सबसे अधिक
ा उन अभागों की हुई थी, जिन्होंने काले चमड़े पर टोप पहनकर
न धर्म को तिलांजलि दी थी। इनसे देशवासी भी घृणा करते थे, और
ज भी निदान। उन्हें कहीं आसरा न था। वे सब स्त्री, बच्चे, बूढ़े
ठे होकर किले के द्वार पर सिर पीटने लगे। अन्त में उनके आर्तनाद से

निरुपाय होकर अंग्रेजों ने उन्हें भी किले में आश्रय दिया।

नवाब की बहुसंख्यक तोपें भीषण गर्जन द्वारा जब अपना परिचय देने लगीं तो अंग्रेजों के छक्के छूट गये। उन्होंने अब भी मायाजाल फैलाने, घमण्ड न नजर-भेंट देने की बहुत चेष्टा की पर नवाब ने उनकी नहीं सुनी। उनका यही हुक्म था कि किला अवश्य गिराया जायगा।

फोर्ट विलियम किला पूर्व की ओर 210 गज, दक्षिण की ओर 130 गज और उत्तर की ओर सिर्फ 100 गज था। मजबूत चहारदीवारी के चारों कोनों पर चार बुर्ज थे। प्रत्येक पर दस तोपें लगी थीं। पूर्व की ओर किले के फाटक पर 5 वजनदार तोपें मुंह फैला रही थीं। उत्तर-पश्चिम की ओर गंगा की प्रबल धारा समुद्र की ओर बह रही थी। पूर्व की ओर फाटक के पास से गंगा तक हुई लाल बाजार की बाधा और पूर्व से पश्चिम फाटक तक चली गई थी। इस किले के पूर्व, उत्तर और दक्षिण की ओर तोपों के तीन मोर्चे और भी थे। कलकत्ते के तीन ओर मराठा खाई थी। दक्षिण की ओर खाई न थी — घना जंगल था। पास गंगा में युद्ध सज्जा से सजे जहाज तैयार थे। 18 जून को नवाब की तोपें दगीं। अंग्रेजों ने तत्काल किले और जहाजों से आग बरसाना शुरू किया।

अंग्रेजों का ख्याल था कि लाल बाजार की ओर से ही नवाब आक्रमण करेगा। उस मोर्चे पर उन्होंने बड़ी-बड़ी तोपें लगा रखी थीं। पर अमीचन्द के उस जम्मी जमादार की सहायता से नवाब को यह भेद मालूम हो गया कि नगर के दक्षिण में मराठा खाई नहीं है। अतएव नवाब ने उसी ओर आक्रमण किया।

लाल बाजार के रास्ते के ऊपर पूर्व की ओर जो तोपों का मंच बनाया गया था उसके सामने ही कुछ दूर पर जेलखाना था। अंग्रेजों ने उसकी एक दीवार को फोड़कर कुछ तोपें जुटा रखी थीं। उनकी योजना थी कि लाल बाजार के रास्ते नवाबी सेना अग्रसर होते ही जेलखाने और पूर्व वाले मोर्चों से आग बरसा कर सेना को तहस नहस कर देंगे। परन्तु नवाब की सेना अनजानों की तरह तोपों के सामने सीधी नहीं आई। उसने सावधानी से सड़क वाला रास्ता ही छोड़ दिया। केवल पहरेदारों को मारकर वह उत्तर और दक्षिण को हटने लगी।

देखते-ही-देखते अंग्रेजी तोपों के तीनों मोर्चे घिर गये। अब तो नगर-रक्षा असम्भव हो गई। कलकत्ते के स्वामी हॉलवेल साहब और मोर्चे के अफसर कप्तान क्लेटन किले में भाग गये। मोर्चे नवाबी सेना के कब्जे में आ गये। अब उन्हीं तोपों से किले पर गोले बरसने लगे। किले में कुहराम मच गया।

किले के नीचे गंगा में कुछ नाव और जहाज तैयार थे। उनके द्वारा स्त्रियों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने की व्यवस्था रात को हुई। स्त्रियों को जहाज तक पहुँचाने को दो अफसर मनिहम और फ्रांकलैण्ड रात्रि के अन्धकार में चुपके-चुपके निकले। परन्तु जहाज पर पहुँचकर उन्होंने फिर किले में आने से साफ इन्कार कर दिया।

किले की भीतरी दशा अजीब थी। सब कोई दूसरों को सिखाने में लगे थे। पर स्वयं किसी की बात को कोई नहीं मानना चाहता था। बाहर तो नवाबी सेना उन्मत्ता की भाँति कूद-फाँद और शोर मचा रही थी, भीतर अंग्रेजों का आर्तनाद, सिपाहियों की परस्पर की कलह और सेनापतियों के मतिभ्रम इत्यादि से किले में शासन शक्ति का सर्वथा लोप हो गया था।

बड़ी कठिनता से रात के दो बजे सामरिक सभा जुटी। इसमें छोटे-बड़े सभी थे। बहीखाता समेटकर भाग जाना ही निश्चय हुआ। प्रातःकाल जो भागने को एक गुप्त दरवाजा खोला गया, तो बहुत-से आदमियों ने उतावली में भागकर, किनारे पर आकर कोलाहल मचा दिया और नावों पर बैठने में छीना-झपटी करने लगे। परिणाम बुरा हुआ — नवाबी सेना ने सावधान होकर तीर बरसाने शुरू किये। कितनी नावें उलट गईं। किसी तरह कुछ लोग नाव तक पहुँचे। उस पर गोले बरसाये गये। फिर भी गवर्नर ड्रेक, सेनापति मनचन, कप्तान ग्राण्ट आदि बड़े-बड़े आदमी इस तरह से भाग गये।

अब कलकत्ते के जमींदार हॉलवेल साहब ही मुखिया रह गये। वे क्या करते? अंग्रेज समझते थे कि महामति ड्रेक घबराकर मति-भ्रम होने के कारण भाग गये हैं। शायद, वे विचार कर, सहकारियों को सज्जित करके अपने साथियों की रक्षा के लिए फिर आयें। पर आशा व्यर्थ हुई। ड्रेक

साहब न आये। किलेवाला न लौटन के बहुत सवत किए—बराबर निवेदन किया। गवनर साहब न आय।

अब हारकर हालवेल साहब अपन पुराने सहायक अमीचन्द की शरण म गय जो उन्हीं के कैदखान म बन्दी पड़ा था। अमीचन्द न उस समय उनको कुछ भी लानत-मलामत न कर, उनके कातर क्रन्दन म द्रवीभूत हो नवाब के सेनानायक मानिकचन्द को एक पत्र इस आशय का लिख दिया — *अब नहीं। काफी शिक्षा मिल गई है। नवाब की जो आज्ञा होगी - अंग्रेज वही करेंगे।*

यह पत्र हालवेल साहब न चहारदीवारी पर खड़े होकर बाहर फेंक दिया। पर इसका कोई जवाब नहीं आया। पता नहीं, वह पत्र ठिकाने पहुंचा भी या नहीं। एकाएक किले का पश्चिमी दरवाजा टूट गया, और धुआंधार नवाबी सेना किले म घुस आई। अब अंग्रेज कैद कर लिए गय। किले के फाटक पर नवाबी पताका खड़ी कर दी गई।

तीसरे पहर नवाब न किले म पधारकर दरबार किया। अमीचन्द और कृष्णवल्लभ को खोजा गया। व दोनों आकर जब नवाब के सामने नम्रतापूर्वक खड़े हुए तो नवाब न उनका आदर करके आसन दिया। यही कृष्णवल्लभ था— जिसकी बदौलत इतने झगड़े हुए थ।

इसके बाद अंग्रेज कैदियों की तरह बांधकर नवाब के सामने लाये गय। सामने आते ही हालवेल साहब स नवाब न कहा— 'तुम लोगों के उद्दण्ड व्यवहार के कारण ही तुम्हारी यह दशा हुई है।' इसके बाद सेनापति मानिकचन्द को किले का भार सौंपकर दरबार बर्खास्त किया। थकी-मांदी सेना आराम का स्थान इधर उधर खोजन लगी।

परन्तु हालवेल स नवाब को बदनाम करन के लिए एक असत्य घटना इस अवसर पर गढ़कर अपन मित्रों म प्रचारित की। उसन कहा— 'नवाब न 146 अंग्रेज उस दिन रात को—18 फुट आयतन की कोठरी में बन्द करवा दिय, जिसम सिर्फ एक खिड़की थी और जिसमें लोहे के छड़ लगे हुए थ। प्रातःकाल जब दरवाजा खोला गया, सिर्फ 23 आदमी जिन्दा बचे।"

काल-कोठरी की यह बात इतनी प्रसिद्ध हो गई कि समस्त भारत

प्रमाणित हुई कि यह सिर्फ नवाब को बदनाम करने को हालवेल ने कहानी गढी थी, जो बड़ा मिथ्यावादी आदमी था।

अत्यन्त साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी समझ सकता है कि 18 फुट की व्यास वाली कोठरी म 146 आदमी यदि वे बोरों की तरह भी लाद जाएँ तो नहीं आ सकते। इसका जिक्र न तो किसी मुसलमान लेखक ने किया है, न कम्पनी के कागजों म कहीं इसका जिक्र है। उस समय मद्रासी अंग्रेजों और नवाब मे जो पीछे हर्जाने की बात चली, उसमे भी काल-कोठरी का जिक्र नहीं है। क्लाइव ने जिस तेजी फुर्ती के साथ नवाब के साथ पत्र-व्यवहार किया था, उसमें भी काल कोठरी के अत्याचार का जिक्र नहीं। यहा तक कि सिराजुद्दौला और अंग्रेजों की जो पीछे संधि-स्थापना हुई थी, उसम भी इसका कुछ जिक्र नहीं है। क्लाइव ने नवाब को पद च्युत करने पर कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स को नवाब के अत्याचारों म परिपूर्ण जो चिट्ठी लिखी थी उसम भी काल-कोठरी का जिक्र नहीं है। अंग्रेजों ने मीरजाफर को अपने हरजाने का पैसा-पैसा भरपाई का हिसाब लिखा था, पर उसम भी काल कोठरी का जिक्र नहीं है।

किले पर आक्रमण करने से प्रथम किले म 900 आदमी थे, जिनम 60 यूरोपियन थे। इनमें से बहुतेरे ड्रेक के साथ भाग गये, 70 घायल पड़े थे। तिस पर भी 146 आदमी वहाँ से बन्द किये गये?

हालवेल साहब इसका एक स्मृति-स्तम्भ भी बनवा गये थे, पर पीछे वह अंग्रेजों ने ही गिरा दिया। अंग्रेजी राज्य म इसी कल्पित काल-कोठरी की यातना प्रत्येक जेल म प्रत्येक कैदी को भुगतनी पड़ती थी।

हालवेल साहब पहले डाक्टर थे, और अंग्रेजों की कम्पनी से इन्हें 600 रुपये तनख्वाह मिलती थी। नजर भेंट म भी खासी आमदनी होती थी। पर ये काले लोगों के प्रति बड़े ही निर्दयी थे। इसी से नवाब ने मुचलका लिखाया था। जब कलकत्ता फतह हुआ, तो हॉलवेल साहब का सर्वनाश हुआ। साथ ही वे बन्दी करके मुर्शिदाबाद लाये गये। पर पलासी-युद्ध म मीरजाफर से घूस मे एक लाख रुपया इन्हें मिला। तब उन्होंने कलकत्ता के पास थोड़ी-सी जमींदारी खरीद ली। कुछ दिन कलकत्ते के

गवनर भी रहे। पर शीघ्र ही विलायत क अधिकारियो मे लडने भिडने क कारण अलग कर दिये गय और जिस मीरजाफर ने इतना रुपया दिया था, उस झूठा कलक लगाकर राज्य च्युत किया। अन्त में इगलैंड जाकर मर गये।

कलकत्ते का शासन भार राजा मानिकचन्द को दे, नवाब न कलकत्ते मे चलकर हुगली में पडाव डाला। डच और फ्रासीसी सौदागर गल में दुपट्टा डाल अधीनता स्वीकार करन क लिए सम्मानपूवक नजर भेंट लाय। डचो न साढे चार लाख और फ्रेचो न साढे चार लाख रुपया नवाब को भेंट किया। नवाब न वाटसन और क्लाइव को बुलाकर यह समझा दिया कि— "मैं तुम लोगो को देश से बाहर निकालना नही चाहता, तुम खुशी से कलकत्त में रहकर व्यापार करो।"

नवाब राजधानी को लौट गये। अग्रेज कलकत्ते में वापस आये और अमीचन्द की उदारता की बदौलत उन्होंने अन्न जल पाया।

इस यात्रा से लौटकर 11 जुलाइ को नवाब न राजधानी में गाजे-बाज स प्रवेश किया। तोपो की सलामी दगी। नाच रग होने लगे। नवाब रत्न-जटित पालकी पर अमीर उमरावो के साथ नगर मे होकर जब गाजे बाजे से मोती झील को जा रहा था, उस समय रास्ते में स्थित कारागार में बन्द हॉलवेल साहब पर उसकी नजर पडी। उसने तत्काल सब बाजे बन्द करवा दिये और पालकी से उतर, पैदल कारागार के द्वार पर जाकर चोबदार को हॉलवेल की हथकडी बेडी खुलवाने का हुक्म दिया और हॉलवल और उसके तीन साथियो को सवथा मुक्त कर दिया।

तीन

धीरे धीरे अग्रेज फिर कलकत्ते में आकर वाणिज्य करने लगे। पर शीघ्र ही एक दुघटना हो गई। एक अग्रेज सज्जन न एक निरपराध मुसल-मान की हत्या कर डाली। बस राजा मानिकचन्द की आज्ञा स सब अग्रेज

कलकत्ते से बाहर कर दिये गये। अंग्रेज लोग निरुपाय होकर फालतावन्दर पर इकट्ठे होने लगे। इस अस्वास्थ्यकर स्थान में अंग्रेजों की बड़ी दुर्दशा हुई। प्रचण्ड गर्मी, तिस पर निराश्रय, और खाद्य पदार्थों का अभाव। जहाज का भण्डार खाली, पास में रुपया नहीं। न कोई बाजार। केवल कुछ डच फ्रासीसी और कोई बंगालियों की कृपा से कुछ खाद्य-पदार्थ मिल जाया करते थे।

दुर्दशा के साथ दुर्गति भी उनमें बढ़ गई। किसके दोष से हमारी यह दुर्दशा हुई?—इसी बात को लेकर परस्पर विवाद चला। सब लोग कलकत्ते की कौंसिल को सारा दोष देने लगे। कौंसिल के सब लोग परस्पर एक-दूसरे को दोष देने लगे। घोर वैमनस्य बढ़ा। अन्त में सब यही कहने लगे कि लोभ में आकर कृष्णवल्लभ को जिन्होंने आश्रय दिया, और कम्पनी के नाम से परवाने औरों को बेचकर जिन्होंने बदमाशी की, वे ही इस विपत्ति के मूल कारण हैं।

पाँचवीं अगस्त को मद्रास में भागकर आये हुए अंग्रेजों ने पहुँचकर कलकत्ते की दुर्दशा का हाल सुनाया। सुनकर सबके सिर पर वज्र गिरा। सब हत-बुद्धि हो गये। एक विचार कमेटी बैठी। खूब गर्जन-तर्जन हुआ। उन दिनों फ्रांस से युद्ध छिड़ने के कारण अंग्रेजों का बल क्षीण हो रहा था, इसलिए वे कुछ निश्चय न कर सके।

उधर फालतावन्दर में अंग्रेज चुपचाप नहीं बैठे थे। यदि नवाब फालतावन्दर तक बढ़ा चला आता, तो अंग्रेजों को चोरों की तरह भी भागने का अवसर न मिलता। पर उनका उद्देश्य केवल उनके दुष्ट व्यवहार का दण्ड देना ही था। अनेक बंगाली उन दुर्दिनों में लुक-छिपकर उनकी सहायता कर रहे थे। औरों की तो बात अलग रही—स्वयं अमीचन्द, जिसका अंग्रेजों ने सर्वनाश किया था, और जो इन्हीं की कृपा से शोक-ग्रस्त और मर्म-पीड़ित हो, पथ का भिखारी बन चुका था, वह भी नवाब के दरबार में उनके उत्थान के लिए बहुत कुछ अनुनय-विनय कर रहा था। उसने एक गुप्त चिट्ठी अंग्रेजों को लिखी, जिसका आशय था—

"सदा की भाँति आज भी मैं उस भाव से आप लोगों का भला चाहता हूँ। यदि आप ख्वाजा वाजिद, जगतसेठ [illegible] राजा माणिकचन्द से

गुप्त पत्र व्यवहार करना चाहें तो मैं आपके पत्र उनके पास पहुँचाकर जवाब मँगा दूंगा।

इस पत्र से अंग्रेजों को साहस हुआ। शीघ्र ही मानिकचन्द की कृपा दृष्टि उन पर हुई। उनके लिए बाजार खोल दिया गया, और तरह-तरह की नम्र विनतियों से नवाब के दरबार में व्यापार करने के आज्ञापत्र के साथ प्रार्थना-पत्र जाने लगे और उनके सफल होने की भी कुछ-कुछ आशा होने लगी।

हेस्टिंग्स ने पालता की केम्बिल नामक एक अंग्रेज की विधवा तरुणी से प्रेम प्रसंग उपस्थित होने पर विवाह कर लिया। अब हेस्टिंग्स ने अपनी योग्यता और कार्य निपुणता से ख्याति प्राप्त कर ली थी और वह एक चतुर बुद्धिमान और कुशल सैनिक समझा जाने लगा। उसने गवर्नर ड्रेक को कुछ ऐसी गुप्त सूचनाएँ, सुझाव और सहायता दी कि उसे अपना विश्वस्त सहायक समझने लगे।

कासिम बाजार से हेस्टिंग्स ने लिखा —"मुर्शिदाबाद में बड़ी गड़बड़ी मची है। पूर्निया के नवाब शौकतजंग ने दिल्ली के बादशाह से बंगाल बिहार और उड़ीसा की सनद प्राप्त कर ली है। वह शीघ्र ही मुर्शिदाबाद भारी सैन्य लेकर सिराजुद्दौला को हटाकर स्वयं नवाब बनने आ रहा है। सभी जमींदार उसके पक्ष में तलवार उठायेंगे। अब सिराजुद्दौला का गर्व चूर्ण हुआ चाहता है।"

बस खबर मिलते ही अंग्रेजों के इरादे ही बदल गये। अब वे शौकत जंग से मेल बढ़ाने की व्यवस्था करने लगे। पर नवाब को इसकी कुछ खबर न थी। उसके पास बराबर अंग्रेजों के अनुनय विनय भरे पत्र आ रहे थे। यदि उसे इस राज विद्रोह की कुछ भी खबर लग जाती तो शायद पालताबन्दर ही अंग्रेजों का समाधि-क्षेत्र बन जाता।

इधर मद्रास वाले अंग्रेजों ने दो महीने बाद कलकत्ते की रक्षा का निश्चय बड़े वाद विवाद के बाद किया, और कर्नल क्लाइव तथा एड मिरल वाटसन के साथ अधिक स्थल सेनाएँ भेज दी गईं। ये लोग पाँच सैनिक जहाजों के साथ 13वीं अक्तूबर को चले। 5 जहाजों पर असबाब था। 900 गोरे और 1500 काले सिपाही थे।

दिल्ली में सिहासन पर घोर कलिकाल का काल हाथी सरगर्मी सी रही था। पर अब भी उसके नाम के साथ चमत्कार था। नवाब ने सुना कि शाहजादा शौकतजग आ रहा है तो उसने उसके आने से पूर्व ही शौकतजग को परास्त करने का निश्चय किया। उसे यह मालूम था कि शौकतजग बिलकुल मूर्ख, घमण्डी और दुराचारी आदमी है और उसके साथी—स्वार्थी और खुशामदी। उसे हराना सरल है। परन्तु वह भी अलीवर्दीखा खानदान का था। अतएव उसने शौकतजग को चिट्ठी लिखकर समझाना चाहा। उसका जवाब जो मिला वह यह था—

हम बादशाह की सनद पाकर बगाल, बिहार और उडीसा के नवाब हुए है। तुम हमारे परम आत्मीय हो। इसलिए हम तुम्हारे प्राण लेना नही चाहते। तुम पूर्वी बगाल के किसी निर्जन स्थान मे भागकर अपने प्राण बचाना चाहो, तो हम उसमे बाधा नही देंगे। बल्कि तुम्हारे लिए सुव्यवस्था कर देंगे, जिससे तुम्हारे अन्न-वस्त्र का कष्ट न हो। बस, देर मत करना, पत्र को पढते ही राजधानी छोडकर भाग जाओ। परन्तु—खबरदार! खजाने के एक पैसे मे भी हाथ न लगाना। जितनी जल्दी हो सके, पत्र का जवाब लिखो। अब समय नही है। घोडे पर जीन कसा हुआ है, पाँव रकाब मे डाल चुका हूँ। केवल तुम्हारे जवाब की देर है।"

नवाब सिराजुद्दौला ने यह पत्र उमरावो को पढकर सुनाया। उसे आशा थी, सब कूच की सलाह देंगे, और बागी, गुस्ताख शौकत को सब बुरा कहेंगे। परन्तु ऐसा नही हुआ। मन्त्री से लेकर दरबारियो तक ने विषय छिडने बाद विवाद उठाया। जगतसेठ ने प्रतिनिधि बनकर साफ कह दिया—'जब आपके पास बादशाह की सनद नही है शौकतजग ने उसे प्राप्त कर लिया है, ऐसी दशा मे कौन नवाब है—इसका कुछ निर्णय नही हो सकता।'

नवाब ने देखा, विद्रोह ने टेढे मार्ग का अवलम्बन किया है। उसने गुस्से मे आकर दरबार बरखास्त कर दिया। फिर फौरन आक्रमण करने को पूर्निया के निकट राजमहल की ओर कूच कर दिया।

शौकतजग मूर्ख, घमण्डी और निकम्मा नौजवान था। वह किसी की राय न मान, स्वय ही सिपहसालार बन गया। इसके प्रथम उसने युद्धक्षेत्र

की कभी सूरत भी न देखी थी। अनुभवी सेनापतियों ने सलाह देनी चाही, तो उसने अकड़कर जवाब दिया – 'अजी मैंने इस उमर में एसी एसी सौ फौजों की फौजकशी की है। सेनानायक बेचारे अभिवादन कर-करके लौटने लगे। परिणाम यह हुआ कि इस युद्ध में शौकतजंग मारा गया। सिराजुद्दौला की विजय हुई। पूर्निया का शासन भार महाराज मोहनलाल को देकर और शौकत की मां को आदर के साथ लाकर नवाब राजधानी में लौट आया, तथा शौकत की माँ अन्तःपुर में रहने लगी।

इस बीच में उसे अंग्रेजों पर दृष्टि देने का अवकाश नहीं मिला था। उन्होंने घूस रिश्वत दे दिलाकर बहुत-से सहायक बना लिये थे।

जगतसेठ को मेजर किलपैट्रिक ने लिखा – 'अंग्रेजों का अब आपका ही भरोसा है। वे कतई आप ही पर निर्भर हैं।'

जो अंग्रेज एक वर्ष पहले कलकत्ते में टकसाल खोलकर जगतसेठ को चौपट करने के लिए बादशाह के दरबार में घूस के रुपयों की बौछार कर रहे थे वे ही अब जगतसेठ के तलुए चाटने लगे। मानिकचन्द को घूस देकर पहले ही मिला लिया गया था। सब ने मिलकर अंग्रेजों को पुनः अधिकार देने के लिए नवाब से प्रार्थना की। नवाब राजी भी हुआ।

परन्तु अंग्रेज इधर लल्लो चप्पो कर रहे थे, उधर मद्रास से फौज मँगाने का प्रबन्ध कर रहे थे। मानिकचन्द ने नदी की ओर बहुत सी तोपें सजा रखी थीं। पर सब दिखावा था। वे सब टूटी फूटी थीं। किले में सिर्फ 200 सिपाही थे और हुगली के किले में सिर्फ पचास। ये सब खबरें अंग्रेजों को मिल रही थीं।

क्लाइव और वाटसन धीरे धीरे कलकत्ते की ओर बढ़े चले आ रहे थे। दोनों 'चोर चोर मौसेरे भाई' थे। कुछ दिन पहले मालाबार के किनारे पर युद्ध-व्यापार में दोनों ने खूब लाभ उठाया। मराठों ने उन दोनों की सहायता से स्वर्ण-दुर्ग को नष्ट कर डाला था और इसके बदले उन्हें 15 लाख रुपये मिले थे। उड़ीसा के किनारे पहुँचकर एक दिन जहाज पर दोनों में इस बात का परामर्श हुआ कि यदि बंगाल को हमने लूट पाया तो लूट में से किसे कितना हिस्सा मिलेगा। बहुत वाद विवाद के बाद दोनों में आधम आधा तय हुआ।

वाणिज्य स्थापना करने की हिदायत कर दी थी, और बिना रक्त-पात के यह काम हो, इसीलिए निजाम से सिफारिशी चिट्ठियां भी सिराजुद्दौला के नाम लिखवाई थी। पर ये लोग तो रास्ते ही में लूट के माल का हिसाब लगा रहे थे।

इधर पालताबंदर के अंग्रेजों की विनीत प्रार्थना से नवाब उन्हें फिर से अधिकार देने को राजी हो गया था। सब बखेड़ा का अन्त होने वाला था कि एकाएक नवाब को खबर लगी, कि मद्रास से अंग्रेजों के जहाज फौज और गोला बारूद लेकर पालताबन्दर आ गये हैं। इस खबर के साथ ही वाट्सन साहब का एक पत्र भी आया, जिसमें बड़ी हेकड़ी के साथ नवाब को अंग्रेजों के प्रति निर्दय व्यवहार की मलामत की गई थी, और उन्हें फिर बसने देने और हर्जाना देने के सम्बन्ध में वैसी ही हेकड़ी के शब्दों में बातें लिखी थीं।

इसके साथ ही क्लाइव ने भी बड़ा अभिमानपूर्ण पत्र नवाब को लिखा। जिसमें लिखा —"मेरी दक्षिण की विजयों की खबर आपने सुनी ही होगी—मैं अंग्रेजों के प्रति किये गये आपके व्यवहार का दण्ड देने आया हूँ।"

कलकत्ते के व्यापारी लड़ाई को टालना चाहते थे, क्योंकि नवाब ने उन्हें अधिकार देना स्वीकार कर लिया था। परन्तु क्लाइव और वाटसन के तो इरादे खून-खराबी के थे।

अंग्रेज शीघ्र ही सज्जित होकर कलकत्ते की ओर बढ़ने लगे। गंगा किनारे बजबज नामक एक छोटा किला था। अंग्रेजों ने उस पर धावा बोल दिया। मानिकचन्द ढोंग बनाने को कुछ देर झूठ मूठ लड़ा, पर शीघ्र ही भागकर मुर्शिदाबाद जा पहुँचा। यही हाल कलकत्ते के किले वालों का भी हुआ। सूने किले में क्लाइव ने धूमधाम से प्रवेश किया।

इस बढ़िया विजय पर क्लाइव और वाटसन में इस बात पर खूब ही झगड़ा हुआ कि किले पर कौन अधिकार जमाये? अन्त में क्लाइव ही उस का विजेता माना गया। अब ड्रेक साहब पुनः बड़े गौरव से कलकत्ते आकर गवर्नर बन गये।

किले के भीतर की सब वस्तुएँ ज्या-की-त्या थी। नवाब ने उसे लूटा न था न किसी ने कुछ चुराया था। किला फतह हो गया मगर लूट तो हुई ही नही। क्लाइव को बडी आतुरता हुई। अन्त में हुगली लूटने का निश्चय हुआ। वह पुरानी व्यापार की जगह थी। वाणिज्य भी वहाँ खूब था। मेजर किलपैट्रिक बहुत दिन से बेकार बैठे थे। उन्हे ही यह कीर्ति-सम्पादन का काम सौंपा गया। पैदल गोलन्दाज सभी अंग्रेज हुगली पर टूट पडे। नगर को लूट पाटकर आग लगा दी गई।

हुगली को लूटकर जब अंग्रेज फिर से लौटकर आये, तब उन्हे नवाब का पत्र मिला

'मैं कह चुका हूँ कि कम्पनी के प्रधान ड्रेक ने मेरी आज्ञा के विपरीत आचरण करके मेरी शासन शक्ति का उल्लंघन किया तथा दरबार की निजामी का पावना अदा न कर, मेरी भागी प्रजा को आश्रय दिया। मेरे बार बार रोकने पर भी उन्होने इसकी परवाह नही की। इसी का मैंने उन्हे दण्ड दिया। अतएव राज्य और राज्य के निवासियो के कल्याण के लिए मैं तुम्हे सूचित करता हूँ कि किसी व्यक्ति को अध्यक्ष नियुक्त करो, तो पूर्व-प्रचलित नियम के अनुसार ही तुमको वाणिज्य के अधिकार प्राप्त होंगे। यदि अंग्रेजो का व्यवहार व्यापारियो जैसा रहेगा तो इस सम्बन्ध मे वे निश्चिन्त रहे कि मैं उनकी रक्षा करूँगा और वे मेरे कृपा पात्र रहेंगे।

नवाब के इस पत्र का अंग्रेजो ने इस प्रकार जवाब भेजा —

'आपने इस झगडे की जड का ड्रेक साहब का उद्दण्ड व्यवहार लिखा है—सो आपको जानना चाहिए कि शासक और राजकुमार लोग न आँख से देखते है न कानो से सुनते है। प्राय अन्य के खबर पाकर ही काम कर बैठते है। क्या एक आदमी के अपराध मे सब अंग्रेजो को निकालना उचित था। वे लोग शाही फरमान पर भरोसा रखकर उस रक्त-पात और उन अत्याचारो के बजाय - जो दुर्भाग्य से उन्हे सहने पडे—सदैव अपने जान-माल को सुरक्षित रखने की आशा रखते थे। क्या यह काम एक शहजादे की प्रतिष्ठा के योग्य था? इसलिए आप यदि बडे शहजादे की तरह न्यायी और यशस्वी बनना चाहते है, तो कम्पनी के साथ जो आपने बुरा व्यवहार किया है, उसके लिए उन बुरे सलाहकारो को जिन्होने आपको

वहकाया, दण्ड देकर कम्पनी को सन्तुष्ट कीजिये और उन लोगों को, जिनका माल छीना गया है—राजी कीजिये, जिससे हमारी तलवारों की धार म्यान में रहे, जो शीघ्र ही आपकी प्रजा के सिरों पर गिरने के लिए तैयार है। यदि आपको मि० ड्रेक के विरुद्ध कोई शिकायत है तो आपको उचित है कि आप उसे कम्पनी को लिख भेजिये, क्योंकि नौकर को दण्ड देने का अधिकार स्वामी को होता है। यद्यपि मैं भी आपकी तरह सिपाही हूँ, तथापि यह पसन्द करता हूँ कि आप स्वयं अपनी इच्छा से सब काम कर दें। यह कुछ अच्छा नहीं होगा कि मैं आपकी निरपराध प्रजा को पीड़ित करके आपको यह काम करने पर बाध्य करूँ।'

यह पत्र वाटसन साहब ने लिखा था। जिस समय नवाब को यह पत्र मिला, उस समय के कुछ पूर्व ही हुगली की लूट का भी वृत्तान्त मिल चुका था। नवाब अंग्रेजों के मतलब को समझ गया और अब उसने एक पत्र अंग्रेजों को लिखा—

"तुमने हुगली को लूट लिया और प्रजा पर अत्याचार किया। मैं हुगली आता हूँ। मेरी फौज तुम्हारी छावनी की तरफ धावा कर रही है। फिर भी यदि कम्पनी के वाणिज्य को प्रचलित नियमों के अनुकूल चलाने की तुम्हारी इच्छा हो, तो एक विश्वास पात्र आदमी भेजो, जो तुम्हारे सब दावों को समझकर मेरे साथ सन्धि स्थापित कर सके। यदि अंग्रेज व्यापारी ही बनकर पूर्व नियमों के अनुसार रह सकें—तो मैं अवश्य ही उनकी हानि के मामले पर भी विचार करके उन्हें सन्तुष्ट करूँगा।

"तुम ईसाई हो, तुम यह अवश्य जानते होगे कि शान्ति-स्थापना के लिए मार विवादों का फैसला कर डालना—और विद्वेष को मन में दूर रखना कितना उत्तम है। पर यदि तुमने वाणिज्य स्वार्थ का नाश करके लड़ाई लड़ने हो का निश्चय कर लिया है, तो फिर उसमें मेरा अपराध नहीं है। सर्वनाशी युद्ध के अनिवार्य कुपरिणाम को रोकने के लिए ही मैं यह पत्र लिखता हूँ।'

हुगली की लूट और नवाब को गर्मागर्म पत्र लिख चुकने पर विलायत से कुछ ऐसी खबरें आईं कि फ्रेंचों से भयंकर लड़ाई आरम्भ हो रही है। भारतवर्ष में फ्रेंचों का जोर अंग्रेजों से कम न था। अंग्रेज लोग अब अपनी

करतूतो पर पछतान लगे। शीघ्र ही उन्हे यह समाचार मिला कि नवाब सेना लेकर चढा आ रहा है। अब क्लाइव बहुत घबराया। वह दौडकर जगतसेठ और अमीचन्द की शरण गया। परन्तु उन्होंने साफ कह दिया कि नवाब अब कभी सन्धि की बात न करेगा। हुगली लूटकर तुमने बुरा किया है। परन्तु जब नवाब का उक्त पत्र पहुँचा, तो मानो अंग्रेजो ने चाँद पाया। उनको कुछ तसल्ली हुई।

तदनन्तर महाजनराज अमीचन्द के ही महल में नवाब का दरबार लगा। आगन का बगीचा तरह-तरह के नाग-बहारी और प्रदीपो से सजाया गया। चारो ओर नगी तलवार लेकर सेनापति तनकर खडे हुए। भारी भारी बहुमूल्य रत्नजटित वस्त्र पहनकर लोग दुजानू होकर सिर नवाकर बैठे। बीच मे सिंहासन उसके ऊपर विशाल मसनद, ऊपर सोने के डण्डो पर चन्दोवा जिस पर मोती और रत्नो का काम हो रहा था, लगाया गया। उसी रत्नजटित चम्पे के फूल जैसी खिली मुख-कान्ति से दीप्तमान —बंगाल बिहार और उडीसा का युवक नवाब सिराजुद्दौला आसीन हुआ।

वाटसन और स्क्राफ्टन अंग्रेजो के प्रतिनिधि बनकर आये। नवाब के ऐश्वर्य को देखकर क्षण भर वे स्तम्भित रहे। फिर हिम्मत बाँध, धीरे धीरे सिंहासन की ओर बढे और सम्मानपूर्वक अभिवादन करके नवाब के सामने खडे हुए।

नवाब ने मधुर स्वर और सभ्यक भाषा मे उनका कुशल प्रश्न पूछा, और समझाकर कहा—"मैं तुम्हारे वाणिज्य की रक्षा करना चाहता हूँ, और अपने तथा तुम्हारे बीच मे सन्धि स्थापना करना ही मेरे इतना कष्ट उठाने का कारण है।

अंग्रेजो ने झुककर कहा – "हम लोग भी सन्धि को उत्कण्ठित है, और झगडे-लडाई से हममे बडी बाधाएं पडती है।" इसके बाद नवाब ने सन्धि की शर्तें तय करने के लिए उन दोनो को दोपहर के डेरे मे जाने की आज्ञा दे, दरबार बर्खास्त कर दिया।

षड्यन्त्रकारियो ने देखा—काम तो बडी खूबी से समाप्त हो गया है। उन्होंने इस अवसर पर एक गहरी चाल खेली।

मानिकचन्द ने बड़े शुभचिन्तक की तरह अंग्रेजों के कान में कहा — "दखत क्या हो जान बचाना हो तो भाग जाओ। वहाँ डेरा में तुम्हारी गिरफ्तारी की पूरी पूरी तैयारियां है। यह सब नवाब का जाल है। नवाब की तोपें पीछे रह गई हैं। इसीलिए यह धोखा दिया जा रहा है। भागो, मशाल गुल कर दो।" इतना कह मानिकचन्द झटककर घोड़े पर बैठ गया, और दोनों अंग्रेज हतबुद्धि होकर भाग।

उस दिन रात भर अंग्रेजों ने विश्राम नहीं किया। क्लाइव जलते अंगार की तरह लाल-लाल होकर सैन्य सज्जित करने लगा। हेस्टिंग्स भी अपने नाम्यादय का अवसर देख उसमें सम्मिलित हुआ। वाटसन ने 600 जहाजी गोरे मांगकर अपनी पैदल सेना में मिलाये और रात के तीन बजे नवाब के पड़ाव पर आक्रमण कर दिया। नवाब के पड़ाव में उस समय साठ हजार सिपाही, दस हजार सवार और चालीस तोपें थीं। सब मजे में सो रहे थे। क्लाइव ने यह न सोचा, विशाल सैन्य के जागने पर क्या अनर्थ होगा? उसने एकदम तोपें दाग दीं।

एकदम 'गुड़म-गुड़म' सुनकर नवाब की छावनी में हलचल मच गई। जल्दी जल्दी लोग सजने लगे। सिपाही मशाल जला, हथियार ले, तोपों के पास आने लगे। फिर तो नवाब की तोपें भी प्रचण्ड अग्नि-वर्षा करने लगीं।

सवेरा हो जाने पर चारों तरफ धुआँ था। कुछ न दीखता था—तोपों का गर्जन चल रहा था। जब अच्छी तरह सूरज निकल आया तब लोगों ने आश्चर्य से देखा—क्लाइव की समर-पिपासा बुझ गई है और उसकी गर्वोन्मत्त पल्टन किले की ओर भाग रही है। नवाबी सेना उनका पीछा कर रही थी। अंग्रेजों के कट सिपाही जहाँ-तहाँ धूल में पड़े लोट रहे थे। उनकी तोपें भी छिन गई थीं।

क्लाइव की हठधर्मी से अंग्रेजों का सर्वनाश हो गया। इस तुच्छ सेना में 120 अंग्रेजों के प्राण गये।

नवाब ने जब इस एकाएक युद्ध का कारण मालूम किया, तो उसे अपने मंत्रियों का कूट-कौशल मालूम हुआ। उसे पता लगा, उसका सेना-पति मीरजाफर स्वयं उस नीच काम में लिप्त है। उसने आक्रमण रोकने

की आज्ञा दी। सुरक्षित स्थान पर डेरे लगवाय और अंग्रेजों को फिर संधि के लिए बुला भेजा।

क्लाइव बहुत भयभीत हो गया था और संधि के लिए घबरा रहा था। परन्तु वाट्सन उसकी बात को न माना। नवाब ने अंग्रेजों की इच्छानुसार ही संधि कर ली। अंग्रेजों ने जो माँगा—नवाब ने उन्हें वही दिया। उन्हें व्यापार के पुराने अधिकार भी मिले, किला भी बना रहने देना स्वीकार कर लिया, टकसाल कायम करके शाही सिक्के ढलाने की भी आज्ञा मिल गई। नवाब ने अंग्रेजों की पिछली क्षति की पूर्ति भी स्वीकार की।

इस उदार संधि में अंग्रेजों को किसी बात की शिकायत न रह गई थी। परन्तु नवाब को यह न मालूम था कि फ्रांस के साथ जो जाति 600 वर्ष से लड़कर भी रक्त-पिपासा को शान्त न कर सकी, वह किस प्रकार प्रतिज्ञा-पालन करेगी? नवाब ने समझा था, बनिये हैं, चलो टुकड़े देकर दिलाकर ठंडा करें—ताकि रोज का झगड़ा मिटे।

परन्तु संधि को एक सप्ताह भी न हुआ था, कि अंग्रेज अपने प्रतिद्वन्द्वी फ्रांसीसियों को सदा के लिए निकाल देने की तैयारी करने लगे। उन्होंने इस पर नवाब का भी मन लिया। सुनकर नवाब को बड़ा क्रोध आया और उसने साफ जवाब दे दिया कि अंग्रेजों की तरह फ्रांसीसी भी मेरी प्रजा है। मैं कदापि अपने आश्रितों पर तुम्हारा कोई अत्याचार न होने दूँगा। क्या यही तुम्हारी शांतिप्रियता है? अंग्रेज चुप हो गये। नवाब ने कलकत्ते से प्रस्थान किया, पर मार्ग में ही उसे समाचार मिला कि अंग्रेज फ्रांसीसियों का चन्दननगर लूटने की तैयारियाँ कर रहे हैं। नवाब ने वाटसन को फिर लिखा—

सारे झगड़ों को शान्त करने ही के लिए मैंने तुम्हें सब अधिकार तुम्हारी इच्छा के अनुसार दिए हैं। परन्तु मेरे राज्य में तुम फिर क्या कलह-सृष्टि कर रहे हो? तैमूरलंग के समय से अब तक कभी यूरोपियन यहाँ परस्पर नहीं लड़े। अभी उस दिन संधि हुई, अब तुम फिर युद्ध ठान देना चाहते हो। मराठे लुटेरे थे, पर उन्होंने भी संधि नहीं तोड़ी। तुमने संधि की है। इसका पालन तुम्हें करना होगा। खबरदार, मेरे राज्य में

लडाई झगडा न मचे । मैंने जो-जो प्रतिज्ञाएँ की हैं—उसका पालन करूँगा ।"

पत्र लिखकर ही नवाब शान्त न हुआ । उसने प्रजा की रक्षा के लिए महाराजा नन्दकुमार की अधीनता मे हुगली जमरद्वीप और पलासी मे सेनाएँ भी नियुक्त कर दी ।

मुर्शिदाबाद पहुँचकर नवाब ने सुना कि अंग्रेजो ने चन्दननगर पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया है । उसने फिर एक फटकार-भरा पत्र लिखा—"बाइबिल की कसम और ख्रीष्ट की दुहाई ले लेकर भी सन्धि का पालन न करना शर्म की बात है ।"

अब की बार अंग्रेजो ने जवाब लिखा उसका सार इस प्रकार था—"आप फ्रांसीसियो के साथ युद्ध से सहमत नही है—यह मालूम हुआ । फ्रांसीसी यदि हमसे सन्धि कर लें तो हम न लडेंगे, पर आपको सूबेदार की हैसियत से उनका जामिन होना पडेगा ।"

नवाब ने इस कूट पत्र का सीधा जवाब दिया — फ्रांसीसी यदि तुमसे लडेंगे, तो मैं उनको रोकूगा । मेरा अभिप्राय प्रजा मे शान्ति रखने का है । सन्धि के लिए मैंने फ्रांसीसियो को लिखा है ।"

यथासमय फ्रांसीसियो का प्रतिनिधि सन्धि के लिए कलकत्ते पहुँचा, परन्तु अंग्रेजो ने सन्धि पत्र पर दस्तखत करती बार अनेक विवाद खडे किय । वाटसन साहब इनमे मुख्य थे । निदान सन्धि नही हुई ।

पत्र मे नवाब ने यह भी लिखा था कि दिल्ली से अब्दाली की सेना मेरे विरुद्ध आ रही है । यदि तुम मेरी मदद अपनी सेना से करोगे, तो मैं तुम्हे एक लाख रुपया दूगा ।

अब फ्रांसीसी दूत को वापस भेजकर वाटसन साहब ने लिखा—"यदि आप हमे फ्रांसीसियो को नाश करने की आज्ञा दें, तो हम आपकी सहायता अपनी सेना से कर सकते हैं ।"

इस बार सिराजुद्दौला घोर विपत्ति मे पड गया । दिल्ली की फौज बडे वेग से बढ रही थी । उधर अंग्रेज फ्रांसीसियो के नाश की तैयारिया कर रहे थे । नवाब पदाश्रित फ्रांसीसियो का सर्वनाश करवाकर अंग्रेजो की सहायता मोल ले—या स्वयं संकट मे पडे ।

की आज्ञा दी। सुरक्षित स्थान पर डेरे लगवाये और अंग्रेजों को फिर संधि के लिए बुला भेजा।

क्लाइव बहुत भयभीत हो गया था और संधि के लिए घबरा रहा था। परन्तु वाटसन उसकी बात को न माना। नवाब ने अंग्रेजों की इच्छानुसार ही संधि कर ली। अंग्रेजों ने जो मांगा—नवाब ने उन्हें वही दिया। उन्हें व्यापार के पुराने अधिकार भी मिले, किला भी बना रहने देना स्वीकार कर लिया, टकसाल कायम करके शाही सिक्के ढलाने की भी आज्ञा मिल गई नवाब ने अंग्रेजों की पिछली क्षति की पूर्ति भी स्वीकार की।

इस उदार संधि में अंग्रेजों को किसी बात की शिकायत न रह गई थी। परन्तु नवाब को यह न मालूम था कि फ्रांस के साथ जो जाति 600 वर्ष में लड़कर भी रक्त पिपासा को शान्त न कर सकी, वह किस प्रकार प्रतिज्ञा-पालन करेगी? नवाब ने समझा था, बनिये हैं, चलो टुकड़े दे दिलाकर ठंडा करें—ताकि रोज का झगड़ा मिटे।

परन्तु संधि को एक सप्ताह भी न हुआ था, कि अंग्रेज अपने प्रतिद्वन्द्वी फ्रांसीसियों को सदा के लिए निकाल देने की तैयारी करने लगे। उन्होंने इस पर नवाब का भी मन लिया। सुनकर नवाब को बड़ा क्रोध आया और उसने साफ जवाब दे दिया कि अंग्रेजों की तरह फ्रांसीसी भी मेरी प्रजा है। मैं कदापि अपने आश्रितों पर तुम्हारा कोई अत्याचार न होने दूंगा। क्या यही तुम्हारी शांतिप्रियता है? अंग्रेज चुप हो गये। नवाब ने कलकत्ते से प्रस्थान किया, पर मार्ग में ही उसे समाचार मिला कि अंग्रेज फ्रांसीसियों का चन्दननगर लूटने की तैयारियां कर रहे हैं। नवाब ने वाटसन को फिर लिखा—

'सारे झगड़ों को शान्त करने ही के लिए मैंने तुम्हें सब अधिकार तुम्हारी इच्छा के अनुसार दिए हैं। परन्तु मेरे राज्य में तुम फिर क्यों कलह-सृष्टि कर रहे हो? तैमूरलंग के समय से अब तक कभी यूरोपियन यहां परस्पर नहीं लड़े। अभी उस दिन संधि हुई, अब तुम फिर युद्ध ठान देना चाहते हो। मराठे लुटेरे थे, पर उन्होंने भी संधि नहीं तोड़ी। तुमने संधि की है। इसका पालन तुम्हें करना होगा। खबरदार, मेरे राज्य में

लडाई यगडा न मचे । मैंने जो-जो प्रतिनाएँ की है—उनका पालन करूँगा।"

पत्र लिखकर ही नवाब शान्त न हुआ। उसने प्रजा की रक्षा के लिए महाराजा नन्दकुमार की अधीनता म हुगली, अमरद्वीप और पलासी म सेनाएँ भी नियुक्त कर दी।

मुर्शिदाबाद पहुँचकर नवाब ने सुना कि अंग्रेजो ने चन्दननगर पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया है। उसने फिर एक फटकार भरा पत्र लिखा—"बाइबिल की कसम और खीष्ट की दुहाई ले लेकर भी सन्धि का पालन न करना शर्म की बात है।"

अब की बार अंग्रेजो ने जवाब लिखा, उसका सार इस प्रकार था—"आप फ्रासीसियो के साथ युद्ध से सहमत नही हैं—यह मालूम हुआ। फ्रासीसी यदि हमसे सन्धि कर लें तो हम न लडेंगे, पर आपको सूबेदार की हैसियत से उनका जामिन होना पडेगा।"

नवाब ने इस कूट-पत्र का सीधा जवाब दिया —"फ्रासीसी यदि तुमसे लडेंगे, तो मैं उनको रोकूगा। मेरा अभिप्राय प्रजा म शान्ति रखने का है। सन्धि के लिए मैंने फ्रासीसियो को लिखा है।"

यथासमय फ्रासीसियो का प्रतिनिधि सन्धि के लिए कलकत्ते पहुँचा, परन्तु अंग्रेजो ने सन्धि-पत्र पर दस्तखत करती बार अनेक विवाद खडे किये। वाटसन साहब इनमे मुख्य थे। निदान, सन्धि नही हुई।

पत्र मे नवाब ने यह भी लिखा था कि दिल्ली से अब्दाली की सेना मेरे विरुद्ध आ रही है। यदि तुम मेरी मदद अपनी सेना से करोगे, तो मैं तुम्हे एक लाख रुपया दूगा।

अब फ्रासीसी दूत को वापस भेजकर वाटसन साहब ने लिखा— 'यदि आप हमें फ्रासीसियो को नाश करने की आज्ञा दें, तो हम आपकी सहायता अपनी सेना से कर सकते है।"

इस बार सिराजुद्दौला घोर विपत्ति मे पड गया। दिल्ली की फौज बडे जोरो से बढ रही थी। उधर अंग्रेज फ्रासीसियो के नाश की तैयारियाँ कर रहे थे। नवाब पदाश्रित फ्रासीसियो का सर्वनाश करवाकर अंग्रेजो की सहायता मोल ले—या स्वय सकट मे पडे।

वाटसन का ख्याल था कि नवाब के सामने धर्म अधर्म कोई वस्तु नहीं। अपने मतलब के लिए वह अंग्रेजों को राजी करेगा ही। परन्तु नवाब ने वाटसन को कुछ जवाब न देकर स्वयं सैन्य-संग्रह करने की तैयारियां की।

उधर अंग्रेजों की कुछ नई पल्टनें बम्बई और मद्रास से आ गई। सब विचारों को ताक पर रखकर अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से युद्ध की ठान ली, और नवाब का सैन्य-दर्प देख, वाटसन ने जवाब का निम्न भेजा—

"अब साफ-साफ कहने का समय आ गया है। शान्ति की रक्षा यदि आपको अभीष्ट है, तो आज से दस दिन के भीतर-भीतर हमारा सब पावना रुपया हर्जाना का चुका दीजिए वरना अनेक दुर्घटनाएं उपस्थित होंगी। हमारी बाकी फौज कलकत्ते पहुँचने वाली है, जरूरत पड़ने पर और भी जहाज सेना लेकर आवेंगे और हम ऐसी युद्ध की आग भड़कावेंगे जो तुम किसी तरह भी न बुझा सकोगे।"

नवाब ने इस उद्धत पत्र का भी नम्र जवाब लिखकर भेज दिया—'सन्धि के नियमानुसार मैं हर्जाना भेजता हूं। मगर तुम मेरे राज्य में उत्पात मत मचाना। फ्रांसीसियों की रक्षा करना मेरा धर्म है। तुम भी ऐसा ही करते, यदि कोई शत्रु भी तुम्हारी शरण आता। हां, यदि वे शरारत करें तो मैं उनका समर्थन न करूँगा।'

अंग्रेजों ने समझ लिया, नवाब की सहायता या आज्ञा मिलना सम्भव नहीं है। उन्होंने जल-मार्ग से वाटसन की कमान में और स्थल मार्ग से क्लाइव की अधीनता में सेनाएँ चन्दन नगर पर रवाना कर दीं।

7 फरवरी को सन्धि-पत्र लिखा गया और 7 ही मार्च को चन्दन-नगर के सामने अंग्रेजी डेरे पड़ गए। इस प्रकार बाइबिल और मसीह की कसम खाकर जो सन्धि अंग्रेजों ने की थी, उसकी एक ही मास में समाप्ति हो गई।

फ्रांसीसियों ने किले की रक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध किया था। पास ही महाराज नन्दकुमार की अध्यक्षता में सेना चाक चौबन्द उनकी रक्षा के लिए खड़ी थी। क्लाइव, जो बड़े जोरों से आ रहा था—यह सब देख-कर भयभीत हुआ। अन्त में अमीचन्द की मार्फत महाराज नन्दकुमार को

भरा गया। व तत्काल अपनी सेना ल, दूर जा खडे हुए। फिर मुट्ठी भर फ्रांसीसिया न वडी वीरता से, 23 तारीख तक चन्दननगर क किले की रक्षा की, और सब वीरो के धराशायी हान पर किले का पतन हुआ। इस प्रकार इस युद्ध म अंग्रेज विजयी हुए।

इधर नवाब नन्दकुमार का वहा भेजकर इधर की तैयारी कर रहा था। अहमदशाह अब्दाली की चढाइ की खबर गम थी, और अंग्रेजा न घूस खाकर मीरजाफर, जगतसेठ, रायदुलभ आदि नमकहरामा न नवाब क मन म अब्दाली क विषय म तरह-तरह की शकाएँ भय तथा विभीषिकाएँ भर रखी थीं। खद की बात है नन्दकुमार न भी नमकहरामी की। फिर भी नवाब न अपना कर्तव्य पालन किया। जा फ्रांसीसी भागकर किसी तरह प्राण बचाकर मुर्शिदाबाद पहुँच गय, उन्ह अन्न, वस्त्र, धन की सहायता दे, कासिम बाजार मे स्थान दिया गया।

इस घणित विजय स गर्वित अंग्रेजा न जब सुना कि नवाब न भाग हुए फ्रांसीसिया का सहायता दी है, ता वे बहुत बिगडे। वे इस बात को भूल गय कि नवाब देश का राजा है। शरणागता और ग्रामकर प्रजा की रक्षा करना उसका धम है। पहले उन्हान लल्लो चप्पो का पत्र लिखकर नवाब स फ्रांसीसिया का अंग्रेजो क समपण करन को लिखा। पीछे जब नवाब न दृढता न छाडी, ता गजन-तजन से युद्ध की धमकी दी।

नवाब न कुछ जवाब नही दिया। अब वह चुपचाप सावधान होकर अंग्रेजो क इरादा का पता लगान लगा। इधर अंग्रेज बाहर स ता फ्रांसीसिया क नाश क लिए नवाब स कभी लल्लो चप्पो और कभी घुडक फुडक स काम ले रह थ, और उधर नवाब को सिंहासन स उतारन की तैयारी कर रह थे।

चन्दननगर पर अधिकार होते ही क्लाइव न सबको समझा दिया था कि बस, इतना करके बैठे रहन से काम न चलेगा कुछ दूर और आगे बढकर नवाब का गद्दी मे उतारना पडेगा। उसके इस मन्तव्य से सब सहमत हुए।

अंग्रेजा न गहरी चाल चली। घूस की मदद स नवाब के उमरावा द्वारा यह बात नवाब से कहलाइ कि फ्रांसीसिया के कासिम बाजार मे रहने

वाटसन का ध्यान था कि नवाब के सामने धर्म अधर्म कोई वस्तु नहीं। अपने मतलब के लिए वह अंग्रेजों को राजी करेगा ही। परन्तु नवाब ने वाटसन को कुछ जवाब न देकर स्वयं सैन्य संग्रह करने की तैयारियाँ कीं।

उधर अंग्रेजों की कुछ नई पल्टनें बम्बई और मद्रास से आ गईं। सब विचारों को ताक पर रखकर अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से युद्ध की ठान ली, और नवाब को संकटापन देख, वाटसन ने नवाब को लिख भेजा—

'अब साफ साफ कहने का समय आ गया है। शान्ति की रक्षा यदि आपको अभीष्ट है, तो आज से दस दिन के भीतर भीतर हमारा सब पावना रुपया हर्जाना का चुका दीजिये वरना अनेक दुर्घटनाएं उपस्थित होंगी। हमारी बाकी फौज कलकत्ते पहुँचने वाली है, जरूरत पड़ने पर और भी जहाज सेना लेकर आवेंगे और हम ऐसी युद्ध की आग भड़कावेंगे जो तुम किसी तरह भी न बुझा सकोगे।"

नवाब ने इस उद्धत पत्र का भी नम्र जवाब लिखकर भेज दिया—
'सन्धि के नियमानुसार मैं हर्जाना भेजता हूँ। मगर तुम मेरे राज्य में उत्पात मत मचाना। फ्रांसीसियों की रक्षा करना मेरा धर्म है। तुम भी ऐसा ही करते, यदि कोई शत्रु भी तुम्हारी शरण आता। हाँ यदि वे शरारत करें, तो मैं उनका समर्थन न करूँगा।

अंग्रेजों ने समझ लिया नवाब की सहायता या आज्ञा मिलना सम्भव नहीं है। उन्होंने जल मार्ग से वाटसन की कमान में और स्थल मार्ग से क्लाइव की अधीनता में सेनाएँ चन्दन नगर पर रवाना कर दीं।

7 फरवरी को सन्धि-पत्र लिखा गया, और 7 ही मार्च को चन्दन-नगर के सामने अंग्रेजी डेरे पड़ गये। इस प्रकार बाइबिल और मसीह की कसम खाकर जो सन्धि अंग्रेजों ने की थी, उसकी एक ही मास में समाप्ति हो गई।

फ्रांसीसियों ने किले की रक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध किया था। पास ही महाराज नन्दकुमार की अध्यक्षता में सेना चार-चौकस उसकी रक्षा के लिए खड़ी थी। क्लाइव, जो बड़े जोश में आ रहा था—यह सब देखकर भयभीत हुआ। अन्त में अमीचन्द की मार्फत महाराज नन्दकुमार को

भरा गया। व तत्काल अपनी सेना ले, दूर जा खडे हुए। फिर मुट्ठी भर फ्रान्सीसियों ने बडी वीरता से, 23 तारीख तक चन्दननगर के किले की रक्षा की, और सब वीरों के धराशायी होने पर किले का पतन हुआ। इस प्रकार इस युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए।

इधर नवाब नन्दकुमार को वहाँ भेजकर इधर की तैयारी कर रहा था। अहमदशाह अब्दाली की चढाई की खबर गर्म थी और अंग्रेजों ने घूस खाकर मीरजाफर, जगतसेठ, रायदुर्लभ आदि नमकहरामों ने नवाब के मन में अब्दाली के विषय में तरह तरह की शंकाएँ, भय तथा विभीषिकाएँ भर रखी थीं। खेद की बात है नन्दकुमार ने भी नमकहरामी की। फिर भी नवाब ने अपना कर्तव्य पालन किया। जो फ्रान्सीसी भागकर किसी तरह प्राण बचाकर मुर्शिदाबाद पहुँच गये, उन्हें अन्न, वस्त्र धन की सहायता दे, कासिम बाजार में स्थान दिया गया।

इन घृणित विजय से गर्वित अंग्रेजों ने जब सुना कि नवाब ने भागे हुए फ्रान्सीसियों को सहायता दी है, तो वे बहुत बिगडे। वे इस बात को भूल गये कि नवाब देश का राजा है। शरणागतों और खासकर प्रजा की रक्षा करना उसका धर्म है। पहले उन्होंने लल्लो-चप्पो का पत्र लिखकर नवाब से फ्रान्सीसियों को अंग्रेजों के समर्पण करने को लिखा। पीछे जब नवाब ने दृढता न छोडी, तो गर्जन-तर्जन से युद्ध की धमकी दी।

नवाब ने कुछ जवाब नहीं दिया। अब वह चुपचाप सावधान होकर अंग्रेजों के इरादों का पता लगाने लगा। इधर अंग्रेज बाहर से तो फ्रान्सीसियों के नाश के लिए नवाब से कभी लल्लो चप्पो और कभी घुडक फुडक से काम ले रहे थे, और उधर नवाब को सिंहासन से उतारने की तयारी कर रहे थे।

चन्दननगर पर अधिकार होते ही क्लाइव ने सबको समझा दिया था कि बस, इतना करके बैठे रहने से काम न चलेगा कुछ दूर और आगे बढकर नवाब को गद्दी से उतारना पडेगा। उसके इस मन्तव्य से सब सहमत हुए।

अंग्रेजों ने गहरी चाल चली। घूस की मदद से नवाब के उमरावों द्वारा यह बात नवाब से कहलाई कि फ्रांसीसियों के कासिम बाजार में रहने

तो नवाब ने क्रोध में आकर वाटसन से कहला भेजा— "या तो इसी समय फ्रांसीसियों का पीछा न करने का मुचलका लिख दो, वर्ना इसी समय राजधानी त्यागकर चले जाओ।"

यह खबर पाकर वाटसन ने तुरंत व्यापारी नौकाएं मंगवाईं। उनमें भीतर गोला-बारूद था और ऊपर चावल के बोरे। उनके ऊपर भी 40 सुशिक्षित सैनिक थे। इस प्रकार 7 नावों को लेकर क्लाइव कलकत्ता रवाना हुआ। साथ ही कासिम बाजार के खजाने को कलकत्ता भेजने का गुप्त आदेश भी कर दिया गया।

इसके बाद वाटसन ने नवाब को अंतिम पत्र लिखा—

"एक भी फ्रांसीसी के जिंदा रहते अंग्रेज शांत न होंगे। हम कासिम बाजार को फौज भेजते हैं और शीघ्र ही फ्रांसीसियों को बाँध लाने को पटना फौज भेजी जायगी। इन सब कामों में आपको अंग्रेजों की सहायता करनी पड़ेगी।"

यारलतीफखां, पहले जगतसेठ के यहाँ रोटियों पर नौकर था। समय पाकर सिराजुद्दौला की सेवा में 2000 सवारों का अधिपति हो गया। मीरजाफर द्वारा अंग्रेजों को मदद देने का संदेश सर्वप्रथम उसी के द्वारा अंग्रेजों के पास पहुँचा। दूसरे दिन एक अरमानी सौदागर ख्वाजा विदू न, जो पहले पालतावंदर पर भी अंग्रेजों की जासूसी करता था, खबर दी कि मीरजाफर इस शर्त पर आपकी मदद को तैयार है कि आप उसे नवाब बनाइए, पीछे वह आपकी इच्छानुसार कार्य करने को तैयार है। जगतसेठ आदि सब सरदार आपके पक्ष में होंगे। यह भी सलाह हुई कि इस समय क्लाइव को लौट जाना चाहिए। नवाब शीघ्र ही पटना की तरफ अहमदशाह अब्दाली की फौज से लड़ने को कूच करेगा। तब राजधानी पर हमला करना उत्तम होगा।

क्लाइव तत्काल लौट गया, और नवाब को अंग्रेजों ने लिखा—"हम तो सेना लौटा लाये। अब आपने पलासी में क्या छावनी डाल रखी है?" जो दूत इस पत्र को लेकर गया था, वह वाट्सन साहब के लिए यह चिट्ठी भी ले गया—"मीरजाफर से कहना, घबराये नहीं। मैं ऐसे 5 हजार सिपाहियों को लेकर उसके पक्ष में आ मिलूंगा, जिन्होंने युद्ध में कभी पीठ

नही दिखाई।"

परन्तु अहमदशाह अब्दाली वापस लौट गया इसलिए नवाब का पटना जाना ही नहीं पड़ा। इसके सिवा स्वयं अंग्रेजों की जानी नौकाएँ राह ली और पलासी में ज्यों की त्यों छावनी डाले रहा। अंग्रेजों के पीछे गुप्त चर छोड़ दिए गए। फ्रांसीसियों को भागलपुर ठहरने को कहला भेजा और मीरजाफर को 15 हजार सेना लेकर पलासी में रहने का हुक्म दिया।

इधर मीरजाफर से एक गुप्त सन्धि-पत्र लिखाकर 17 मई को कलकत्ते में उस पर विचार हुआ। इस सन्धि पत्र में एक करोड़ रुपया कम्पनी को दस लाख कलकत्ते के अंग्रेजों, अरमानी और बंगालियों को, तीस लाख अमीचन्द को देने का मीरजाफर ने वादा किया था। इनके सिवा बंगाल के प्रधान सहायकों और पथ प्रदर्शकों की रकमें अलग एक चिट्ठे में दर्ज की गई थी। राजकोष में इतना रुपया नहीं था। परन्तु रुपया है या नहीं—इस पर कौन विचार करता ? चारों ओर लूट ही तो थी !

मसौदा भेजते समय वाटसन साहब ने लिखा—"अमीचन्द जो मांगता है वही मंजूर करना। वरना भण्डाफोड़ हो जायगा।"

पहले तो अमीचन्द को मार डालने की ही बात सोची गयी पीछे क्लाइव ने युक्ति निकाली। उसने दो दस्तावेज लिखाये—एक असली, दूसरा जाली लाल कागज पर। इसी जाली पर अमीचन्द की रकम चढ़ाई गई थी। असली पर उसका कुछ जिक्र न था। वाटसन ने इस जाली दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। पर चतुर क्लाइव ने उसके भी जाली दस्तखत बना दिए।

आगे से काम निकालने में क्लाइव को जरा भी संकोच न होता था, और वह इसमें जरा से भी कष्ट का अनुभव न करता। यही दुर्दान्त अंग्रेज युवक था जिसने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव भारत में जमाई और अन्त में आत्मघात करके मरा।

मीरजाफर से सन्धि पर हस्ताक्षर होने बाकी थे। पर गुप्तचर चारों ओर छूटे हुए थे। वाटसन साहब बहादुर पर्देदार पालकी में घूंघटवाली

स्त्रियों का वेश धर प्रतिष्ठित मुसलमान घरानों की स्त्रियों की तरह सीधे मीरजाफर के जनानखाने में पहुँचे, और मीरजाफर ने कुरान सिर पर रख, तथा पुत्र मीरन पर हाथ धर, सन्धि-पत्र पर दस्तखत कर दिए। इस पर भी अंग्रेजों को विश्वास न हुआ, तो उन्होंने जगतसेठ और अमीचन्द को जामिन बनाया। भाग्यविधान में अन्तिम समय मीरजाफर के हाथ कोढ़ में गल गए, और उसके पुत्र मीरन पर अकस्मात बिजली गिरी थी।

अमीचन्द को धोखा देकर ही अंग्रेज शान्त न रहे बल्कि वे उसे कलकत्ते में लाकर अपनी मुट्ठी में लाने की जुगत करने लगे। यह काम स्क्रैफ्टन के सुपुर्द हुआ। उसने अमीचन्द से कहा— बातचीत तो समाप्त हो गई। अब दो ही चार दिन में लड़ाई छिड़ जाएगी। हम तो घोड़े पर चढ़कर उड़ते होंगे, तुम बूढ़े हो—क्या करोगे! क्या घोड़े पर भाग सकोगे?"

सुख बनिया घबराकर नवाब से आज्ञा ले मुर्शिदाबाद भाग गया।

सिराजुद्दौला को मीरजाफर के साथ हुई इस सन्धि का पता चल गया। वाट्सन साहब सावधान हो, घोड़े पर चढ़ हवाखोरी के बहाने भाग गए। नवाब ने अंग्रेजों को अन्तिम पत्र लिखकर अन्त में लिखा—"ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरे द्वारा सन्धि भंग नहीं हुई।"

12 जून को अंग्रेजों की फौज चली। जिसमें 650 गोरे 150 पैदल गोलन्दाज, 21 नाविक, 2100 देशी सिपाही थे। थोड़े पुर्तगीज भी थे। सब मिलाकर कुल 3000 आदमी थे। गोला बारूद आदि लेकर 200 नावों पर गोरे चले। काले सिपाही पैदल ही गंगा के किनारे-किनारे चले। रास्ते में हुगली कटोपा, अग्रद्वीप पलासी की छावनियों में नवाब की काफी फौज पड़ी थी। परन्तु अंग्रेजों ने सबको खरीद लिया था। किसी ने रोक टोक न की। उधर नवाब ने सब हाल जानकर भी मीरजाफर को उसके अपराधों को क्षमा करके महल में बुला भेजा। लोगों ने उसे गिरफ्तार करने की भी सलाह दी थी, परन्तु नवाब ने समझा - अलीवर्दी के नाम और इस्लाम धर्म का ख्याल कर समझाने-बुझाने से वह सीधे मार्ग पर आ जायगा। पर मीरजाफर डरकर राजमहल में नहीं गया।

अत में आत्माभिमान को छोड़कर नवाब स्वयं पालकी में बैठकर मीरजाफर के घर पहुँचा। मीरजाफर को अब बाहर निकलना पड़ा। उसकी आँखों में शर्म आई। उसने अपने प्यारे मित्र सरदार के मुख में करुणाजनक धिक्कार सुनी। मीरजाफर ने नवाब के पैर छूकर मान स्वीकार किया। कुरान उठायी और सिर से लगाकर ईश्वर और पैगम्बर की कसम खाकर, उसने अंग्रेजों से सम्बन्ध तोड़कर—नवाब की सेवा धर्म पूर्वक करने की प्रतिज्ञा की।

घर की इस फूट को प्रेमपूर्वक मिटाकर नवाब को सन्ताप हुआ। अब उसने सेना का आह्वान किया। पर बागियों के बहकाने में सेना ने पहले बिना वेतन पाये युद्ध-यात्रा में इनकार कर दिया। नवाब ने वह भी चुकाया। मीरजाफर प्रधान सेनापति बना। यारलतीफखां, दुर्लभराय, मीर मदनमोहनलाल और फ्रेंच सिनफ्रे एक एक विभाग के सेनाध्यक्ष बने।

मीरजाफर ने क्लाइव को, नवाब के साथ जो कसम धर्म हुआ था—सब लिख भेजा। साथ ही यह भी लिख दिया—"बढ़े चले आओ, मैं अपने वचनों का वैसा ही पक्का हूँ।"

पर क्लाइव को आगे बढ़ने का साहस नहीं हुआ। वह पाटुली में छावनी डालकर पड़ गया। सामने कोठाया का किला था। यह निश्चय हो चुका था कि सेनाध्यक्ष मीरजाफर कुछ देर बनावटी युद्ध करके पराजय स्वीकार कर लेगा। क्लाइव ने पहले इसी की सचाई जाननी चाही। मेजर कूट 200 गोरे और 300 काले सिपाही लेकर किले पर चढ़ा। मराठों के समय से गहरी-गहरी लड़ाइयों के कारण भागीरथी और अजय के संगम का यह किला वीरों की लीला भूमि प्रसिद्ध हो चुका था। परन्तु इस बार फाटक पर युद्ध नहीं हुआ। कुछ देर नवाबी सेना नाटक सा खेलकर जगह जगह अपने ही हाथों से आग लगाकर भाग गई। क्लाइव ने विजय गर्वित की तरह किले पर अधिकार किया। नगर निवासी प्राण लेकर भागे—अंग्रेजों ने उनका सर्वस्व लूट लिया। केवल चावल ही इतना मिल गया था—जो 10 हजार सिपाहियों को 1 वर्ष तक के लिए काफी था। फिर भी क्लाइव विश्वास और अविश्वास के बीच में चक्कर ले रहा था।

वह वडा ही भयभीत था। यदि कही हार जाता तो हार का समाचार ल जाने के लिए भी एक आदमी को जिन्दा वापस जाने का मौका नहीं मिलता।

22 जून को गगा पार करके मीरजाफर के वनाय सकता पर वह आग वढा, और रात्रि क दो वज पलासी क लक्खीवाग म मोर्चे जमाय। नवाव का पडाव उसके नजदीक ही तजनगरवाले विस्तत मदान म था। परन्तु उसकी सना का प्रत्यक सिपाही मानो उसका सिपाही न था। वह रात-भर अपन मम म चिन्तित वैठा रहा।

रात वीती। प्रभात आया। अग्रेजा न वाग के उत्तर की ओर एक खुली जगह मे व्यूह रचना की। नवाव की सना मीरजाफर, दुलभराय, यारलतीफखाँ—इन तीन नमकहरामो की अध्यक्षता म अद्ध चन्द्राकार व्यूह रचना करके वाग को घेरन क लिए वढ़ी।

अग्रेज क्षण भर को घवराय। क्लाइव न सोचा कि यदि यह चन्द्र-व्यूह तोपा म आग लगा द, तो सवनाश है। पर जव उसन उस सना के नायको को दखा तो धैय हुआ। क्लाइव की गोरी पल्टन चार दलो म विभक्त हुई, जिसके नायक किलप्याट्रिक, ग्राण्टग्रट और कप्तान गय थ। वीच म गोर, दाएँ-वाएँ काल सिपाही थ। नवाव की सना के एक पाश्व म फ्रेंच-सनापति सिनफ्रे, एक म मोहनलाल और उनक वीच म मीरमदन। फौजकशी का भार मीरमदन न लिया। अग्रेजा न दखा—नवाव का व्यूह दुर्भेद्य है।

प्रात आठ वज मीरमदन न तोपो म लाग लगाई। शीघ्र ही तोपा का दोनो ओर स घटाघाप हो गया। आध घण्ट मे 10 गोर और 20 काले आदमी मर गय। क्लाइव की युद्ध पिपासा इतन ही म मिट गई। उसने समझ लिया, इस प्रकार प्रत्यक मिनट मे एक आदमी क मरने और अनको के जख्मी होन स यह 300 सिपाही कितनी देर ठहरेंगे? क्लाइव का पीछे हटना पडा। उसकी फौज ने वाग के पेडो का आश्रय लिया। व छिपकर गोला दागन लग। पर उनकी दो तोपें वाहर रह गई। चार तोपें वाग म थीं। नवाव की तोपो का मोर्चा चार हाथ ऊँचा था। अतएव मीरमदन की तोपो स तडातड गोल दग रह थ।

यह देखकर क्लाइव घवरा गया। उस समय वह अमीचन्द पर

बिगड़ा।

क्लाइव ने अमीचन्द से क्रोधित होकर कहा—"ऐसा ही वायदा था कि मामूली लड़ाई करके शाही फौज भाग खड़ी होगी। ये सब बातें झूठी हो रही हैं।"

अमीचन्द ने कहा—"सिर्फ मीरमदन और मोहनलाल ही लड़ रहे हैं। ये नवाब के सच्चे सहायक हैं। किसी तरह इन्हीं को हराइये। दूसरा कोई सेनापति हथियार न चलायेगा।"

मीरमदन वीरतापूर्वक गोले बरसा रहा था। उस समय मीरजाफर की सेना यदि आगे बढ़कर तोपों में आग लगा देती, तो अंग्रेजों की समाप्ति थी। मगर वे तीनों पाजी खड़े तमाशा देखते रहे। क्लाइव ने 12 बजे पसीने में लथपथ सामरिक मीटिंग की। उसमें निश्चय किया कि दिन भर बाग में छिप रहकर किसी तरह रक्षा करनी चाहिए।

इतने ही में एकाएक मेह बरसने लगा। मीरमदन की बहुत-सी बारूद भीग गई। फिर भी वह वीरतापूर्वक भागी हुई सेना का पीछा कर रहा था। इतने में एक गोले ने उसकी जांघ तोड़ डाली। अब मोहनलाल युद्ध करने लगा। मीरमदन को लोग हाथों हाथ उठाकर नवाब के पास ले गये। उसने ज्यादा कहने का अवसर न पाया। सिर्फ इतना कहा—"शत्रु बाग में भाग गये। फिर भी आपका कोई सरदार नहीं लड़ता। सब खड़े तमाशा देखते हैं।" इतना कहते कहते ही उसने दम तोड़ दिया।

नवाब को इस वीर पर बहुत भरोसा था। इसकी मृत्यु से नवाब मर्माहत हुआ। उसने मीरजाफर को बुलाया। वह दल साथ लेकर सावधानी से नवाब के डेरे में घुसा। उसके सामने आते ही नवाब ने अपना मुकुट उसके सामने रखकर कहा—'मीरजाफर! जो हो गया सो हो गया। अलीवर्दी के इस मुकुट को तुम सच्चे मुसलमान की तरह बचाओ।'

मीरजाफर ने यथोचित रूप से सम्मानपूर्वक मुकुट को अभिवादन करते हुए छाती पर हाथ मारकर बड़े विश्वास के साथ कहा—"अवश्य ही शत्रु पर विजय प्राप्त करूँगा। पर अब शाम हो गई है, और फौजें थक गई हैं। सबेरे मैं क़यामत बर्पा कर दूंगा।"

नवाब ने कहा—"अंग्रेजी फौज रात को आक्रमण करके क्या सर्वनाश

न कर देगी।"

मीरजाफर ने गव मे कहा—"फिर हम किसलिए है?'

नवाब का भाग्य फूट गया। उसे मति-भ्रम हुआ। उसने फौजो को पडाव मे लौटने की आज्ञा दे दी। तब महाराज मोहनलाल वीरतापूवक धावा कर रहे थे। उन्होने सम्मानपूवक कहला भेजा -'बस अब दो ही चार घडी मे लडाई का खातमा होता है। यह समय लौटने का नही है। एक कदम पीछे हटते ही सेना का छत्र-भग हो जायगा। मैं लौटूगा नही, लड़ूगा।"

मोहनलाल का यह जवाब सुन, मीरजाफर थरा गया। उसने नवाब को पट्टी पटाकर फिर आना भिजवाई। बेचारा मोहनलाल साधारण सरदार था – क्या करता? क्रोध म लाल होकर कतारें बाध, पडाव को लौट आया।

मीरजाफर की इच्छा पूरी हुई। उसने क्लाइव को लिखा -"मीरमदन मर गया। अब छिपने का कोई काम नही। इच्छा हो तो इसी समय, वरना रात के तीन बजे आक्रमण करो—सारा काम बन जायगा।

मोहनलाल को पीछे फिरता देख और मीरजाफर का इशारा पा क्लाइव ने स्वय फौज की कमान ली, और बाग मे बाहर निकल धीरे धीरे आगे बढने लगा। यह रग-ढग देख बहुत से नवाबी सिपाही भागने लगे, पर मोहनलाल और सिनफ्रे फिर घूमकर खडे हो गये।

इधर दुलभराय ने नवाब को खबर दी कि आपकी फौज भाग रही है। आप भाग कर प्राण बचाइए। नवाब का प्रारब्ध टूट चुका था। सभी हरामी, शत्रु और दगाबाज थे। उसने देखा—मेरे पक्ष के आदमी बहुत ही कम हैं। राजवल्लभ ने उसे राजधानी की रक्षा करने की सलाह दी। अत नवाब ने 2000 सवारो के साथ हाथी पर सवार हो, रण-क्षेत्र त्यागा। तीसरे पहर तक मोहनलाल और फ्रेंच सिनफ्रे लडे। परतु विश्वासघातियो से खीझकर अन्त मे उन्होंने भी रण भूमि छोडी। नवाब के सूने खेमे पर क्लाइव और मीरजाफर ने अधिकार कर लिया।

जिस सेना ने इस युद्ध म विजय पाई थी—उसके झण्डे पर सम्मानार्थ 'पलासी' लिख दिया गया और उस बाग के एक आम के वृक्ष की लकडी

का एक मकबरा बनाकर अंग्रेजों ने महारानी विक्टोरिया को भेंट किया। आज भी उस स्थान पर एक जय-स्तम्भ अंग्रेजों की वीरता की कहानी कह रहा है।

राजधानी में नवाब के पहुँचने से पहले ही नवाब के हारने की खबर सबसे फैल गई। चारों ओर भाग दौड़ मच गई। अंग्रेजों की लूट के डर से लोग इधर उधर भागने लगे। नवाब ने सरदारों को बुलाकर दरबार करना चाहा। मगर औरतें तथा स्वयं उनके श्वसुर मुहम्मद रहीमखां ही उधर ध्यान न दे भाग खड़े हुए। देखा-देखी सभी भाग गये।

जब सिराजुद्दौला ने स्वयं सैन्य-संग्रह के लिए गुप्त खजाना खोला। सुबह से शाम तक और शाम से रात भर सिपाहियों को प्रसन्न करने को खूब इनाम बाँटा गया। शरीर रक्षक सिपाहियों ने खुला खजाना पाकर खूब गहरा हाथ मारा और यह धर्म प्रतिज्ञा करके कि प्राण प्रण से सिंहासन की रक्षा करेंगे एक एक ने भागना शुरू किया। धीरे धीरे खासमहल के सिपाही भी भागने लगे। एकाएक रात्रि के सन्नाटे में मीरजाफर की विकराल तोपों का गर्जन सुन पड़ा। अभागा सज्जन और ऐयाश नवाब अन्त में गौरवान्वित सिंहासन को छोड़कर अकेला चला। पीछे-पीछे पुराना द्वारपाल और प्यारी बेगम लुत्फुन्निसा छाया की तरह हो लिए।

प्रातः मीरजाफर ने शीघ्र ही सूने राजमहल में अधिकार जमाकर नवाब की खोज में सिपाही दौड़ाये। नवाब की हितू-बन्धु स्त्रियाँ कैद कर ली गईं। मोहनलाल घायल अवस्था में कैद किया गया, और नीच दुर्लभराय ने उसे मार डाला। फिर भी मीरजाफर को सिंहासन पर बैठने का साहस न हुआ। वह क्लाइव का इंतजार करने लगा। पर क्लाइव का कई दिनों तक नगर में आने का साहस न हुआ। 29 जून को 200 गोरे 500 काले सिपाहियों के साथ क्लाइव ने राजधानी में प्रवेश किया।

शाही सड़क पर उस दिन इतने आदमी जमा थे कि यदि वे अंग्रेजों के विरोध का संकल्प करते तो केवल लाठी सोटा, पत्थरों ही से सब काम हो जाता।

अन्त में राजमहल में आकर क्लाइव ने मीरजाफर को नवाब बना कर सबसे पहले कम्पनी के प्रतिनिधि-स्वरूप नजर पेश करके बंगाल और

उड़ीसा का नवाब कहकर अभिवादन किया।

इसके बाद बाँट चूट हो जाना था कर लिया गया। शाहपुर के पास सिराजुद्दौला को भाग मे मीरकासिम न पकड लिया। उसकी असहाय बगम लुत्फुन्निसा के गहने लूट लिए और बाधकर राजधानी लाया गया। मुर्शिदाबाद मे हलचल मच गई। बगावत के डर स नय नवाब न अपन पुत्र मीरन के हाथ से उसी रात का सिराजुद्दौला को मरवा डाला।

वध करने का काम मुहम्मदखा के सुपुर्द हुआ। यह नमकहराम भी जाफर और मीरन की तरह सिराज के टुकडा पर पला था। मुहम्मदखा हाथ म एक बहुत तेज तलवार ले, सिराजुद्दौला की कोठी मे जा दाखिल हुआ। उसे इस तरह सामन देख, सिराजुद्दौला न घबडाकर कहा क्या तुम मुझे मारने आये हो?"

उत्तर मिला 'हाँ।"

अन्तिम समय निकट आया समझ, सिराजुद्दौला न ईश्वर प्राथना के लिए हाथ पैरो की जजीरें खोलने की प्राथना की। पर वह नामजूर हुई। डर के मारे उसका गला चिपक गया था। उसन पानी मागा, पर पानी भी न दिया गया। लाचार हो, जमीन पर माथा रगडकर सिराजुद्दौला बार-बार ईश्वर का नाम लेकर अपने अपराधा की क्षमा मागने लगा। इसके बाद लपटती जबान और टूट स्वर से नमकहराम टुकडेखोर मुहम्मदखाँ से कहा - "तब, वे लोग मुझे तिल-भर भी जगह न देंगे। टुकडा खान को भी न देंगे। इस पर भी वे राजी नही है?" यह कहकर सिराज कुछ देर के लिए चुप हो गया।

फिर कुछ देर मे बोला—"नहीं, इस पर भी राजी नही ह। मुझे मरना ही पडेगा।"

आगे बोलने का उसे अवसर न मिला। देखत ही देखते मुहम्मदखा की तेज तलवार उसकी गर्दन पर पडी। खून का फव्वारा बह निकला और देखत ही-दखते बगाल, बिहार और उडीसा का युवक नवाब ठण्डा हो गया। हत्यारे मुहम्मदखा ने उसके जिस्म के टुकडे-टुकडे करके, उन्हे एक हाथी पर लदवाकर शहर म घुमाने का हुक्म दिया।

क्लाइव से अगले दिन मीरजाफर ने इसका जिक्र करके क्षमा माँगी।

क्लाइव ने मुस्कराकर कहा—"इसके लिए यदि माफी न मांगी जाती, तो कुछ हर्ज न था।'

चार

मीरजाफर नवाब हुआ – और धूर्त स्क्वेफ्न उसका एजेण्ट बनकर दरबार में विराजा। वारेन हेस्टिंग्स उसका सहायक बनाया गया। कुछ दिन बाद जब स्क्वेफ्न कौंसिल में सभ्य नियत हुआ—तब, उक्त गौरव का पद वारेन हेस्टिंग्स को मिला। यह पद बड़ी जिम्मेदारी का था। एजेण्ट के ऊपर दो बातों की कठिन जिम्मेदारियां थीं—एक तो यह कि कम्पनी की आय और उसके स्वार्थ में विघ्न न पड़े। दूसरे नवाब कहीं सिर उठाकर सबल न हो जाय। नवाब यदि वेश्याओं और शराब में अधिकाधिक गहराई में लिप्त हो, तो एजेण्ट को कुछ चिन्ता न थी। उनकी चिन्ता का विषय सिर्फ यह था कि कहीं नवाब सैन्य बल तो पुष्ट नहीं कर रहा है? राज्य रक्षा की तरफ तो उसका ध्यान नहीं है?

इन सबके सिवा जाफर ने नकद रुपया न होने पर सन्धि के अनुसार अंग्रेजों को कुछ जागीरें दी थीं। उनकी मालगुजारी वसूली का भी उसी पर भार था। साथ ही, फ्रांसीसियों की छूत से नवाब को सर्वदा बचाना भी आवश्यक था। हेस्टिंग्स ने बड़ी मुस्तैदी से उक्त पद के योग्य अपनी योग्यता प्रमाणित की।

पर मीरजाफर देर तक नवाब न रह सका। लोगों से वह घमण्डपूर्ण व्यवहार और झगड़े करने लगा। मुसलमान हिन्दू सब उससे घृणा करते थे। उधर अंग्रेजों ने रुपये के लिए दस्तक भेज भेजकर उसका नाक दम कर दिया। मीरजाफर को प्रतिक्षण अपनी हत्या का भय बना रहता था। निदान तीन ही वर्ष के भीतर मीरजाफर का जी नवाबी से ऊब गया और अन्त में अंग्रेजों ने उसे अयोग्य कहकर गद्दी से उतार, कलकत्ते में नजरबन्द कर दिया। उसका दामाद मीरकासिम बंगाल का नवाब बना।

जाफर की पेंशन नियत की गई।

गद्दी पर अधिकार तो मीरन का था—जो मीरजाफर का पुत्र था, पर वहां अधिकार की बात ही न थी। वहां तो गद्दी नीलाम की गई थी। अंग्रेज बनिया की पैसे की प्यास भयंकर थी। मीरकासिम न उसे बुझाया।

अंग्रेजों की अमित धन की मांगों को पूरा करने के लिए नवाबी खजाने में रुपया नहीं था। इसलिए उन्हें अपनी पट्टे की शर्तों की रकम में से आधा ही लेकर सन्तोष करना पड़ा। इस रकम को भी एक तिहाई रकम नवाब के सोने चांदी के बर्तन बेचकर संग्रह की गई, और इस भुगतान के बाद नवाबी खजाने में फूटी कौडी भी न बची थी। मीरकासिम के नवाब होने पर हेस्टिंग्स कौंसिल का मेम्बर होकर कलकत्ते आ गया और उसकी जगह पर एलिस साहब एजेण्ट बने। एलिस साहब कलह प्रिय एवं बहुत ही बुरे आदमी थे, और वे जिस पद पर नियुक्त किये गये थे, उसके योग्य न थे।

नवाब और एजेण्ट की न बनी। बात-बात पर दोनों में झगड़ा होने लगा। आखिर तंग आकर नवाब ने कलकत्ते की कौंसिल को लिखा—

"अंग्रेज गुमाश्ते हमारे अधिकार अवमानना करके प्रत्येक नगर और देहातों में पट्टेदारी, फौजदारी, माल और दीवानी अदालतों की जरा भी परवा नहीं करते, बल्कि सरकारी अहलकारों के काम में बाधा डालते हैं। ये लोग प्राइवेट व्यापार पर भी महसूल नहीं देते और जिनके पास कम्पनी का पास है, वे तो अपने को कर्त्ता धर्त्ता ही समझते हैं। सरकारी और अंग्रेज कर्मचारियों की परस्पर की अनबन का बड़ा आफल प्रजा को चखना पड़ रहा है और उस पर असह्य निष्ठुर अत्याचार हो रहे हैं।

उस समय कम्पनी के कर्मचारियों को केवल यही काम था, कि किसी दौ में सौ-सौ पाउण्ड वसूल करके जितनी शीघ्र हो सके, यहां की गर्मी से पीड़ित होने से पूर्व ही विलायत लौट जायें और वहां किसी कुलीन धनी की कन्या के साथ विवाह कर, कानवाल में छोटे मोटे एक दो गांव खरीदकर सण्ट-जेम्स स्क्वेयर में आनन्दपूर्वक मुजरा देखा करें।

मीरकासिम अपने श्वसुर की तरह नीच, स्वार्थी तथा द्रोही न था। वह सब रंग-ढंग देख चुका था। उसने नवाबी मोल ली थी। वह नवाब ही

बनना चाहता था और अग्रेजा मे प्रजा की तरह व्यवहार करना पसन्द करता था। साथ ही अंग्रेजा क अत्याचार म प्रजा की रक्षा करन का सत्त चेष्टा करता था।

जब उसन देखा कि अंग्रेज बिना महसूल अंधाधुन्ध व्यापार कर दश को चौपट कर रहे हैं, किसी तरह नही मानत तो उसन अपनी लाखो की हानि की परवा न करके महसूल का महकमा ही उठा दिया प्रत्यक को बिना महसूल व्यापार करन का अधिकार द दिया। अंग्रेजा न नवाब क इस न्याय और उदार कार्य का तीव्र विरोध किया, पर कासिम ने उसकी कुछ परवा न की।

अब अंग्रेज कासिम का भी गद्दी स उतारन का प्रबन्ध करन लग, पर मीरजाफर की तरह कासिम अंग्रेजो का पालतू न था। उसन सन्धि की शर्तों का पालन न होत देखकर अपनी तयारी शुरू कर दी। पहल तो वह अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से उठाकर मुगेर ले गया, और सना को सज्जित करन लगा—साथ ही अवध क नवाब शुजाउद्दौला स सहायता के लिए पत्र व्यवहार करने लगा।

इतन ही म अंग्रेजो ने चुपचाप पटन पर धावा कर दिया। पहल तो नवाबी सेना एकाएक हमले से घबराकर भाग गई, पर बाद म उसन आक्रमण कर नगर को वापस ले लिया। बहुत म अंग्रेज कद हो गय। बदमाश एलिस भी कद हुआ। नवाब ने जब पटने पर एकाएक आक्रमण होन के समाचार सुने, तो उसने अंग्रेजा की सब कोठिया पर अधिकार करक वहाँ के अंग्रेजा को कैद करके मुगर भेजन का हुक्म दे दिया।

अंग्रेजा ने चिढकर कलकत्ते म आप ही-आप मीरजाफर को फिर नवाब बना दिया। इसके पीछे मुर्शिदाबाद सेना भेज दी गई। मुर्शिदाबाद को यद्यपि मीरकासिम न काफी सुरक्षित कर रखा था, फिर भी विश्वास घाती, नीच और स्वार्थी सनापतियो के कारण नवाबी सना की हार हुई। नवाब क दो चार वीर सेनापति अन्त तक लडकर धराशायी हुए। अन्त में उदयालन का मुख्य युद्ध हुआ। पलासी मे मीरजाफर सनापति था। यहाँ विश्वासघाती गुरगन सेनापति बना। नवाब की 50 हजार की सना उसके आधीन थी। उस पर अंग्रेजा के सिफ 5 हजार सैनिको न ही विजय

प्राप्त कर ली। धीरे धीरे नवाब के सभी नगरों पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। पटना और मुंगेर का भी पतन हुआ। मीरकासिम भागकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में गया। एक बार अवध के नवाब की सहायता से पटना और बक्सर में फिर युद्ध हुआ। परन्तु विश्वासघात और घूस की घोर ज्वाला ने मुसलमानों तक को विध्वंस किया। इस बार प्रयाग तक मीरकासिम खदेड़ा गया। फल यह हुआ कि प्रयाग भी अंग्रेजों के हाथ आ गया।

मीरकासिम का क्या हाल हुआ, यह नहीं कहा जा सकता। दिल्ली की सड़क पर एक दिन एक लाश देखी गई थी जो एक बहुमूल्य शाल से ढकी हुई थी। उसके एक कोने पर लिखा था—'मीरकासिम'।

मीरजाफर फिर नवाब बन गया। अंग्रेजों ने कासिम की लड़ाई का सब खर्चा और हर्जाना मीरजाफर से वसूल किया। सबको भेंट भी यथायोग्य दी गई। बंगभूमि के भाग्य फूट गए। उसके माथ का सिन्दूर पोंछ लिया गया।

मराठों ने प्रथम ही बंगाल को छिन्न भिन्न कर दिया था। अब इस राज्य विप्लव के पश्चात् मानो बंगाल का कोई कर्ता धर्ता ही न रहा। मीरजाफर फिर गद्दी से उतारकर कलकत्ते भेज दिया गया। इस बार किसी को नवाब बनाने की जरूरत न रही। ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुर ही बंगाल की मालिक बन गई।

पाँच

हेस्टिंग्स तेजस्वी और कर्मठ युवक था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अन्य गुमाश्तों की भाँति वह रिश्वत और अन्याय को पसन्द नहीं करता था। क्लाइव के साथ युद्ध में भाग लेकर उसने अपने देश के प्रति पवित्र कर्तव्य निभाया था। उसने जिस विधवा से विवाह किया था, वह दो पुत्र छोड़कर स्वर्गवासिनी हुई। हेस्टिंग्स ने पिता की भाँति पुत्रों की देखभाल की।

परन्तु एक पुत्र तो बचपन में ही मर गया दूसरे को उसने इंगलैंड अपनी बहन के पास पालन पोषण के लिए भेज दिया। उसका व्यय वह वहाँ भेजता रहता था।

सन 1761 तक हेस्टिंग्स मुर्शिदाबाद की एजेन्टी करते रहे, बाद में उन्हें कौंसिल का मेम्बर बनाकर कलकत्ते भेज दिया गया। उस समय कलकत्ते के गवर्नर वन्सीटार्ट थे, जो हेस्टिंग्स के बहुत प्रशसक थे।

कौंसिल के मेम्बर की हैसियत से हेस्टिंग्स 1762 में पटना की दशा देखने गये। उन दिनों पटना बाहर जन शून्य था। व्यापार बन्द था, दुकानें बन्द थीं। अंग्रेजों की लूट खसोट से डरकर लोग भाग गये थे। इस दयनीय दशा को देखकर उनका युवक हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने कलकत्ता गवर्नर को लिखा—पटना में भारी अन्याय हुआ है, नवाब और हमारे अधिकारियों में समझौता हुए बिना इस प्रकार के अत्याचार नहीं रोके जा सकते।

हेस्टिंग्स ने इन झगड़ों का अध्ययन करके ठोस प्रस्ताव बनाये, जिन्हें लेकर वह मीरकासिम से मिला। हेस्टिंग्स और मीरकासिम के बीच उन प्रस्तावों पर उचित विचार हुआ, जिसे दोनों ही पक्षों ने स्वीकार किया। परन्तु जब कलकत्ता काउन्सिल में हेस्टिंग्स के समझौते की रिपोर्ट पहुँची, तब अधिकांश स्वार्थी अंग्रेजों ने उसका विरोध किया और उसे रद्द कर दिया। इस कारण मीरकासिम से फिर विग्रह छिड़ा जिसमें उसे पराजित होकर बंगाल से भागना पड़ा। अंग्रेजों ने बंगाल में विजय प्राप्त की।

हेस्टिंग्स को इंगलैंड से भारत आये चौदह वर्ष बीत चुके थे। उन्होंने कौंसिल की सदस्यता से त्यागपत्र देकर अपने देश जाने की तैयारी की। उनके मित्र गवर्नर वेनसीटार्ट भी उनके साथ स्वदेश लौटने को तैयार हुए। हेस्टिंग्स चौदह वर्ष बाद अपने घर लौट रहे थे। उन्हें अपनी बहन मिसेज वुडमैन और अपने प्रिय पुत्र की स्मृति बेचैन कर रही थी। अपने पुत्र को अपने हृदय से लगाने की आशा में ज्यों ही वे जहाज से उतरकर इंगलैंड भूमि पर उतरे उनकी बहन उदास मुख उनके स्वागत के लिए तैयार खड़ी थी। पुत्र को उसके साथ न देखकर उन्होंने पूछा "वह कहाँ है?"

बहन ने भाई को अपने गले से लगाते हुए रुँधे कण्ठ से कहा—"अभी दो दिन पहले ही संक्षिप्त बीमारी में उसका निधन हो गया है।'

हेस्टिंग्स यह सुनकर विमूढ हो गये। उन्होंने बहन को कसकर पकड़ लिया। उन्होंने कहा—"मुझे सँभालो, मैं गिर रहा हूँ।'

बहन ने उनके दुख को धीरे धीरे कम किया। हेस्टिंग्स इंगलैंड में रहकर कम्पनी के कर्मचारियों को अधिक शिक्षित करने के उपाय करने लगे। उन्होंने वहा एक ट्रेनिंग कालिज खुलवाया, जिसमें भारत में जाकर नौकरी करने वाले अंग्रेजों को हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषा की शिक्षा देकर वहां की कार्य प्रणाली सिखाई जाती थी।

हेस्टिंग्स जो रुपया भारत से कमाकर ले गये थे, धीरे धीरे सब खर्च हो गया और चार वर्ष बीतते बीतते उन्हें अर्थसंकट रहने लगा। उन्होंने फिर भारत आने के लिए प्रयत्न किया। भाग्य से मद्रास की कोठी के लिए एक सुयोग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी। हेस्टिंग्स को उस पद पर नियुक्त करके भेजा गया। सन 1769 में ड्यूक ऑफ ग्रफ्टन नामक जहाज पर उन्होंने भारत यात्रा की। इसी जहाज में एक जर्मन यात्री बेरनइमहाफ भी भारत आ रहे थे। उनकी अत्यन्त सुन्दर पत्नी भी उनके साथ थी। जहाज प्रवास में उनकी पत्नी का हेस्टिंग्स से प्रेम भाव उत्पन्न हुआ। मद्रास पहुंचकर हेस्टिंग्स बीमार पड़ गये, जिसमें इमहाफ की पत्नी ने उनकी सेवा-सुश्रूषा की। इस समय तक दोनों में प्रगाढ़ प्रेम हो चुका था। इमहाफ उन दिनों घोर अर्थकष्ट में थे तथा अपनी सुन्दर पत्नी की इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते थे।

हेस्टिंग्स और इमहाफ की पत्नी ने परस्पर विवाह करने का निश्चय किया।

एक दिन इमहाफ को अधिक चिन्ताग्रस्त देखकर हेस्टिंग्स ने कहा—"मैं आपको चिन्तामुक्त कर सकता हूँ।'

इमहाफ अपनी पत्नी के विश्वासघात से दुखी तो थे ही, उन्होंने विरक्त मन से पूछा—"कैसे ?'

"आपकी पत्नी को ग्रहण करके।'

इमहाफ कठोर दृष्टि से हेस्टिंग्स को देखने लगे।

"पर इसमें आपका ही हित है। अब वह आपसे प्रेम नहीं करती मुझे करती है। मैं आपको उस पत्नी का मूल्य दे सकता हूँ, आपको इसकी सब चिंताओं से मुक्ति मिल सकती है।'

इमहाफ की आँखों में आँसू भरने लगे। परन्तु हेस्टिंग्स ने उस ओर ध्यान न देकर कुछ स्वर्ण मोहरें उनके सामने बिखेर दीं। उन्होंने इमहाफ के हाथ अपने हाथों में लेकर कहा—"सौम्य मूर्ति और कमनीय मिसेज इमहाफ के सुखी भविष्य के लिए आप यह स्वीकार कीजिए।'

वह उठकर चले गये। इमहाफ आँसू भरे उन बिखरी स्वर्ण मुद्राओं को देखते रह गये।

मिसेज इमहाफ हेस्टिंग्स के घर आ गई। इमहाफ भी वहीं रहने लगे, क्योंकि नियम के अनुसार अभी इमहाफ को अपनी पत्नी के तलाक की स्वीकृति देनी शेष थी। मिसेज इमहाफ ने हेस्टिंग्स के परामर्श और व्यय से फ्रेंकोनियन कोर्ट में तलाक की दरख्वास्त भेज दी। जब तक उसकी कार्यवाही पूर्ण नहीं हो जाती, तब तक लोकाचार के कारण इमहाफ को दिल पर पत्थर रखकर अपनी पत्नी का पति बने रहकर समय व्यतीत करना था। इस समय हेस्टिंग्स की आयु चालीस वर्ष की थी।

मद्रास में उन्हें डूप्ले का सहायक बनकर कार्य करना पड़ा। उस समय कम्पनी के अधिकारी मैसूर के शासक हैदरअली के विरुद्ध षड्यन्त्र का जाल रच रहे थे। बंगाल, बिहार और उड़ीसा के बाद अब दक्षिण अंग्रेजों का अभिमान क्षेत्र था। परन्तु हेस्टिंग्स की दृष्टि इस ओर न थी। वह कम्पनी के व्यापार को अधिक लाभदायक बनाने के उपाय सोच रहा था। मद्रास में वह कम्पनी की कोठी का गुमाश्ते था। इंगलैंड भेजने के लिए जो भारतीय माल खरीदा जाता था उसके जमा-खर्च और लदान का उत्तरदायित्व उन पर था। कम्पनी के कर्मचारी राजनैतिक स्वार्थों में फँसे रहते थे, व्यापार की ओर उनकी व्यवस्था ठीक नहीं थी। जुलाहों से घटिया माल तैयार कराकर बढ़िया माल के दाम बहीखाता में दिखाकर बाकी रुपया आपस में बाँट लेते थे। वे जुलाहों को जबरदस्ती पेशगी रुपये देकर घटिया माल तैयार कराते और लागत मात्र का मूल्य उन्हें देते। इससे कम्पनी के कर्मचारी तो मालामाल होते गये, परन्तु जुलाहे गरीब होते

गय। उन्हें ऋण भी लेना पड जाता था। दलाल अधिक रिश्वत लेकर कम्पनी को भारतीय माल खरीदवाते थे। माल की चौकसी भी ठीक नहीं होती थी। इन कारणों से इगलैंड पहुँचते पहुचते भारतीय माल मे लाभ की सम्भावना नहीं रहती थी।

हेस्टिग्स ने इन सब अव्यवस्थाओं में कडाई से सुधार किया। जुलाहों को कम्पनी के कर्मचारियों और दलालों से मुक्त कराया। माल की पूरी चौकसी की व्यवस्था की, जिससे व्यापार में लाभ होने लगा। उनकी कार्य-दक्षता से करनाटक, मैसूर और निकटवर्ती उत्पादन-क्षेत्रों में व्यापार में वृद्धि हुई।

इसी समय बगाल मे भारी दुर्भिक्ष की घडी आ उपस्थित हुई। 1768 में बगाल में अनावृष्टि के कारण बहुत कम उपज हुई, परन्तु कम्पनी के गुमाश्तों ने किसानों से मालगुजारी बहुत सख्ती से वसूल की। बीज के लिए रखे गये चावलों को भी उनसे वसूल कर लिया गया। अगले वर्ष 1769 में उपज और भी कम हुई। धान के सब खेत सूखे और बिना उपज के पडे हुए थे। इस भयानक दुर्भिक्ष व सकट की घडी मे भी अंग्रेजों ने किसानों को निचोड कर 27-97306 पौंड की लगान राशि अपने देश भेजी जबकि अब से 10 वर्ष पूर्व यह राशि केवल 1395959 पाउंड थी।

उस समय भी कुछ लोग धनी थे। जगतसेठ मानिकचन्द नष्ट हो चुके थे—पर कुछ धनी बच रहे थे। पर, क्या किसान, क्या धनी—अन्न बगाल में किसी के पास न था। अशर्फियां थीं—मगर कोई अन्न बेचने वाला न था।

अंग्रेजों ने बहुत-सा चावल कलकत्ते में सेना के लिए भर रखा था। यह सुनकर पूर्निया, दीनापुर, बाँकुडा, बर्द्धमान आदि चारों ओर से हजारों नर-नारी कलकत्ते को चल दिये। गृहस्थों की कुलकामिनियों ने प्राणाधिक बच्चों को कधे पर चढाकर विकट-यात्रा में पैर धरा। जिन कुल-वधुओं को कभी घर की देहली उलांघने का अवसर नहीं आया था, वे भिखारिन के वेश में कलकत्ते की तरफ जा रही थीं। बहुमूल्य आभूषण और अशर्फियां उनके आँचल में बँधे थे, और वे उनके बदले एक मुट्ठी अन्न चाहती थीं।

पर इनमें कितनी कलकत्ते पहुँचीं? सैकडों स्त्री-पुरुष मार्ग में ही भूखे

मर गए, कितनो के बच्चे माता का सूखा स्तन चूसते-चूसते अन्त मे माता की छाती पर ही ठण्डे हो गए। कितनी कुल वधुओ ने भूख प्यास से उन्मन हो, आत्मघात किया।

घोर दुर्भिक्ष समुपस्थित था। सूखे नर कंकालो से मार्ग भरे पडे थे। सहस्रो नर-नारी मर मरकर मार्ग मे गिर रहे थे। भगवती गगा अपने तीव्र प्रवाह मे भूखे मुर्दों को गगासागर की ओर बहाये लिये जा रही थी। अपने अधमरे बच्चो को छाती से लगाये, सैकडो स्त्रियां अधमरी अवस्था मे गगा के किनारे सिसक रही थी। पापी प्राण नही निकलते थे। कभी-कभी डोम अन्य मुर्दों के साथ उन्हे भी टाँग पकडकर गगा मे फेंक रहे थे। जहाँ तहाँ आदमियो का समूह हिताहित शून्य हो, वृक्षो के पत्तो को खा रहा था। गगा किनारे वृक्षो मे पत्ते नही रहे थे।

कलकत्ता नगर के भीतर रमणियाँ एक मुट्ठी अनाज के लिए अपनी गोद के प्यारे बच्चो को बेचने के लिए इधर-उधर घूम रही थी।

छ

इस दुर्भिक्ष मे बगाल की एक तिहाई प्रजा मर गई जिनमे गरीब किसान ही अधिक थे। किसानो के अभाव मे खेत खाली पडे रहते कोई खेती करने वाला न था। अगले वर्ष जब मालगुजारी वसूल करने का समय आया तो न फसल थी न किसान। इस अवस्था मे कम्पनी को फूटी कौडी भी लगान वसूल नहीं हुआ। कम्पनी के व्यापार मे भी ह्रास हुआ था। इगलैड मे जब लगान के इस भयानक दुर्भिक्ष और वहाँ के व्यापार मे भारी ह्रास की बात पहुँची तो तहलका मच गया। कम्पनी के कर्मचारियो के अत्याचार का भी पता चला। तब इन मामलो की जाच के लिए एक कमेटी बनाई गई, जिसमे कलकत्ते के गवर्नर और कौंसिल के सदस्यो के कुकर्मो का भण्डाफोड हुआ। क्लाइव को भी दोषी पाया गया। अत निश्चय हुआ कि कलकत्ते के गवर्नर को हटाकर अन्य योग्य और ईमानदार व्यक्ति को

गिरफ्तारी का बहुत मानसिक दुख हुआ, उसी परिताप में कुछ दिन रुग्ण रहकर उनकी मृत्यु हो गई।

दूसरे अभियुक्त माहम्मद खाँ दोषी पाए गए। फिर भी हेस्टिंग्स ने उन्हें रिहा कर दिया। परन्तु उनको पदच्युत कर एक अंग्रेज मिडिलटन को उनके स्थान पर नायब बनाया गया। हेस्टिंग्स ने अधिक पदावार और उपज, मालगुजारी अदा करने और वसूल करने के उचित नियम तथा किसानों को ऋण के जाल में न दबे रहने सम्बन्धी सुधारक काय किए। जुलाहों को यह भी छूट दी कि वे अपना माल अपनी इच्छा के *अनुसार चाहे कम्पनी को दे अथवा अन्य किसी को। उन दिनों नागा जाति* तिब्बत, चीन काबुल के पर्वतीय प्रदेशों में रहती और स्वच्छन्द विचरण करती रहती थी। ये लोग नंगे रहते थे। विचरण करते समय किसी भी स्वस्थ बालक को देखकर वे उसे बहकाकर अपने साथ कर लेते थे और नागा बना लेते थे। ये लोग तीर्थस्थानों में धार्मिक पर्वों के अवसर पर बड़ी संख्या में आते थे। बंगाल में वे प्रतिवर्ष बहुत से बालकों को उठाकर ले जाते थे, अतः हेस्टिंग्स ने उनका बंगाल में प्रवेश वर्जित कर दिया। बंगाल प्रवेश के नाकों पर सैनिक पहरा रहने लगा। भूटान, तिब्बत, सिक्किम और कूच बिहार के साथ कम्पनी के सम्बन्ध सुधारे तथा व्यापार किया।

हेस्टिंग्स ने मुर्शिदाबाद में स्थापित और फौजदारी दीवानी अदालतें हटाकर कलकत्ता में स्थापित की। दीवानी अदालत का नाम 'सदर दीवानी' रखा गया। गवर्नर और उसके सदस्य उसके न्यायाधीश बने। 'सदर दीवानी' के नीचे प्रत्येक जिले में एक एक फौजदारी और दीवानी अदालतें खोली गई। फौजदारी अदालतों में तो मुसलमान न्यायाधीश नियत किए गए, *परन्तु दीवानी अदालतों में हिन्दू न्यायाधीश नियत हुए क्योंकि हिन्दू धर्म* शास्त्रों के नियम और विधान वे ही समझ सकते थे। हेस्टिंग्स ने हिन्दू शास्त्रों के विधान को दस हिन्दू विद्वानों से संकलन कराकर उसे फारसी तथा अंग्रेजी में अनूदित किया। 'सदर दीवानी सुप्रीम कोर्ट' कहलाती थी। फौजदारी अदालतों की प्राणदण्ड की सजा देने से पहले सुप्रीम कोर्ट में आनी लेनी होती थी। जिले की अदालतों की आज्ञा के विरुद्ध अपीलें भी

इसी सुप्रीम कोट मे होती थी।

सुप्रीम कोट में प्रजा का हित हान की कोई आशा नही हाती थी। भारतीय अमीरो को अपमानित करना ही उसका ध्यय था। उसमें झूठी खबरें पहुँचाने वाले, झूठी गवाहियाँ दने वाले, झूठे मुकद्दम तैयार करन वाने वदमाशा की भरमार थी। कलकत्ते के दक्षिण में काशीगढ एक दसी रियासत थी। यहाँ के राजा सम्पन्न व्यक्ति थे। उनके महला की डयोडिया पर मनिरा का पहरा रहता था। उनकी प्रजा उन पर श्रद्धा करती थी, अत उनके मुकद्दम उन्ही की कचहरी में निपट दिय जात थे, अग्रेजी काट में नहीं। यह वात अग्रेजा को खटकन लगा। काशीगढ के राजा का एक कारकुन काशीनाथ था। काशीनाथ न अग्रेजी हुक्कामा के वहकाव में आकर राजा के विरुद्ध एक झूठी दरखास्त अग्रेजी अदालत में द दी और अपन पक्ष के समथन मे हलफिया वयान भी दज कर दिया। काशीगढ के राजा के नाम उनकी गिरफ्तारी का वारण्ट और तीन लाख की जमानत दन का हुक्म जारी हुआ। राजा छिप गए। इस पर अदालत ने दो फौजदारा का 86 सशस्त्र सिपाहिया क साथ राजा को पकडन भेजा। इन लोगा न महल में घुसकर तलाशी ली। स्त्रिया पर अत्याचार-बलात्कार किए। लूटपाट की और राजा के पूजा के स्थान को उखाड डाला। मूर्ति और पूजा के वतना की गठरी वाँधकर सील मोहर लगाकर कोट में ला धरी।

परन्तु इस सब व्यवस्था म कम्पनी के खजाने में आमदनी नही वढी। इगलड मे कम्पनी क डायरक्टर वरावर लाखा रुपया भेजन की ताकीद करत रहते थे। भारत में मना और गवनर का वेतन भी पिछड गया था। हस्टिग्स इसस परशान हा उठे। एक बार कम्पनी क डायरक्टरा की सख्त हिदायत आई कि तुरन्त पचास लाख रुपया भेजो। हस्टिग्स चिन्ता में पड गए। अब यही उपाय शप था कि रुपया वसूल करने के लिए सख्त और अनुचित काम किए जाएँ। यही उन्होंने किया।

मुर्शिदावाद के नवाब को जेवखच के लिए कम्पनी तीन लाख पौंड वार्षिक देती थी। इस घटाकर एक लाख 62 हजार पौंड किया गया। क्लाइव न दिल्ली क मुगल वादशाह स वगाल की दीवानी प्राप्त करत समय वादशाह की आर से वगाल की प्रजा स हर प्रकार का कर वसूल

करने का अधिकार प्राप्त किया था तथा बादशाह को बंगाल की आय में से तीन लाख पौंड वार्षिक देते रहने का निश्चय हुआ था। परन्तु उसे अब बिल्कुल बन्द कर दिया। बादशाह पर दोष लगाया गया कि वह मराठों की कठपुतली बन गये हैं। इलाहाबाद और कड़ा के जिले पचास लाख रुपये में अवध के नवाब शुजाउद्दौला के हाथ बेच दिए गए। इतना सब करके भी कम्पनी के डाइरेक्टर और अधिक धन की मांग कर रहे थे।

सात

जिस समय दिल्ली पर शाहआलम का अधिकार था, तब मद्रास की बस्ती अंग्रेजों के अधिकार में थी, और यही उस समय उनके भारतीय व्यापार का मुख्य केन्द्र था। डूप्ले ने मद्रास अंग्रेजों से छीन लेने का विचार किया। दोस्तअली खाँ का उत्तराधिकारी अनवरुद्दीन इस समय करनाटक का नवाब था, अंग्रेजों के विरुद्ध डूप्ले ने नवाब के खूब कान भरे। लाबूरदौन नामक एक फ्रांसीसी के अधीन कुछ जलसेना मद्रास विजय करने के लिए भेजी और नवाब को उसने यह समझाया कि अंग्रेजों को मद्रास से निकालकर नगर उनके हवाले कर दूंगा। लाबूरदौन ने मद्रास विजय कर लिया किन्तु इसके साथ ही अंग्रेजों से चालीस हजार पौंड नकद लेकर मद्रास फिर उनके हवाले कर देने का वादा कर लिया। इसके बाद डूप्ले ने अपने वादे के अनुसार मद्रास नवाब के हवाले कर देने की कोई चेष्टा न की और न लाबूरदौन के वादे के अनुसार इसे अंग्रेजों को वापस किया। नवाब को जब छल का पता चला, तो वह फौरन सेना लेकर मद्रास की ओर रवाना हुआ। डूप्ले अपनी सेना सहित नवाब को रोकने के लिए बढ़ा। 4 नवम्बर, 1746 ई० को मद्रास के निकट डूप्ले की सेना और नवाब करनाटक की सेना में संग्राम हुआ। डूप्ले की सेना में भी अधिकतर भारतीय सिपाही ही थे। सेना तथा अपने तोपखाने के बल से डूप्ले ने विजय प्राप्त की। इतिहास में यह पहली विजय थी जो किसी यूरोपियन

ने किसी भारतीय शासक के विरुद्ध प्राप्त की। इससे विदेशियो के हौसले और भी अधिक बढ गये।

फ्रासीसी, अग्रेजा तथा नवाब करनाटक दोनो को धाखा दे चुके थे, इसलिए ये दोना अब फ्रासीसियो के विरुद्ध मिल गये। सन् 1748 ई० म अग्रेजी सेना ने पाडिचेरी पर हमला किया, किन्तु डूप्ले की सेना न इस बार भी अग्रेजो को हरा दिया। इसी समय यूरोप मे फ्रास और इगलिस्तान के बीच सधि हो गई, जिसमे एक बात यह तय हुई कि मद्रास फिर म अग्रेजा के सुपुर्द कर दिया जाय। इस प्रकार अकस्मात् करनाटक से अग्रेजा को निकाल देन की डूप्ले की आशा को एक जबरदस्त धक्का पहुँचा, जिससे फ्रासीसियो की बरसो की मेहनत पर पानी फिर गया। किन्तु डूप्ले का हौसला इतनी जल्दी टटन वाला न था। फ्रासीसी और अग्रेजी कम्पनिया म प्रतिस्पर्द्धा बराबर जारी रही। ये दोना कम्पनिया इस दश मे अपनी अपनी सेनाएँ रखती थी और जहाँ कही किसी दो भारतीय नरेशा म लडाइ होती थी ता एक एक का और दूसरा दूसरे का पक्ष लेकर लडाई म शामिल हो जाना था। भारतीय नरेशा की सहायता क बहाने इनका उद्देश्य अपन यूरोपियन प्रतिस्पर्द्धा को समाप्त करना होता था।

दक्षिण भारत की राजनैतिक अवस्था इस समय अत्यन्त बिगडी हुई थी। मुगल-सम्राट् की ओर से नाजिरजग दक्षिण का सूबेदार था। नाजिरजग का भतीजा मुजफ्फरजग अपने चचा को मसनद स उतारकर स्वय सूबेदार बनना चाहता था, इसलिए नाजिरजग न अपन भतीजे मुजफ्फरजग को कद कर रखा था। उधर अनवरुद्दीन करनाटक का नवाब था, किन्तु उससे पहले नवाब दोस्तअली खाँ का दामाद चदासाहब अनवरुद्दीन को गद्दी से उतारकर खुद करनाटक का नवाब बनना चाहता था। साहूजी तजोर का राजा था और एक दूसरा उत्तराधिकारी प्रतापसिह साहूजी को हटाकर तजोर का राज्य लेना चाहता था। करनाटक का नवाब सूबेदार के अधीन था और तजोर का राजा नवाब करनाटक का मालगुजार था। इन तीना शाही घराना की इस आपसी फूट स अग्रेज फ्रासीसी और मराठे तीनो फायदा उठाने की कोशिशें कर रहे थे। दिल्ली के मुगल-दरबार मे इतना बल न रह गया

अली करनाटक का नवाब बना दिया गया और नाजिरजग सूबेदारी की मसनद पर कायम रहा। डूप्ले की सब कारवाई निष्फल गई। इस पर भी उसके प्रयत्न जारी रहे। जब खुले युद्ध मे वह न जीत सका तो उसने अपने गुप्त अनुचरो द्वारा सूबेदार नाजिरजग को कत्ल करा दिया और एक बार फिर मुजफ्फरजग को दक्षिण का सूबेदार और चन्दासाहब को करनाटक का नवाब घोषित कर दिया।

किन्तु त्रिचिनापल्ली का दृढ किला मुहम्मदअली के हाथो मे था। त्रिचिनापल्ली मे युद्ध हुआ, जिसमे दक्षिण के इन तीनो राजाओ, अग्रेजो और फ्रासीसियो के भाग्य का फैसला हो गया। चन्दासाहब और फ्रासीसियो की सेनाएँ एक ओर थी, मुहम्मदअली और अग्रेजो की सेनाएँ दूसरी ओर। एक फ्रासीसी सेना इस समय डूप्ले की सहायता के लिए भेजी गई, किन्तु वह कही मार्ग मे ही डूबकर खत्म हो गई। त्रिचिनापल्ली के सग्राम मे फ्रासीसियो की हार रही। इस युद्ध से अग्रेज भारत मे जम गये और फ्रासीसी उखड गये। फ्रासीसियो की भारत विजय की आशा धूल धूमिल हो गई।

अब अग्रेजो की कृपा से मुहम्मदअली करनाटक का नवाब बना। इसके बदले मे उसने 16 लाख की आय का इलाका अग्रेजो को दिया। प्रारम्भ मे मुहम्मदअली की अग्रेजो मे बडी प्रतिष्ठा थी। पर वह शीघ्र ही बगाल के नवाबो की भाति दुरदुराया जाने लगा। उससे नित नई माँगें पूरी कराई जाती थी, और नवाब को प्रत्येक नये गवर्नर को लगभग डेढ लाख रुपये नजर करने पडे थे। अन्त मे इस पर इतने खर्च बढ गये कि वह तग हो गया और अग्रेजो से जान बचाने का उपाय सोचने लगा। इस समय अग्रेज व्यापारियो के कर्जे से वह बतरह दबा हुआ था।

लार्ड कॉर्नवालिस ने नवाब से एक सधि की, जिसके कारण नवाब की तमाम सेना का प्रबन्ध अग्रेजो के हाथ मे आ गया। इसके खर्च के लिए नवाब से कुछ जिले रहन रखा लिये गये। इनकी आमदनी 30 लाख रुपया सालाना थी।

सन 1795 मे मुहम्मदअली की मृत्यु हुई और उसका बेटा नवाब उमदतुलउमरा गद्दी पर बैठा। इस पर गवर्नर ने जोर दिया कि रहन रखे जिले और कुछ किले वह कम्पनी को दे दे। पर उसने साफ इन्कार

कर दिया। परन्तु इसी बीच म अंग्रेजो ने प्रतापी टीपू का ह्र डाला था और रगपट्टन का अटूट खजाना उनके हाथ लगा था। उसम गवनर को कुछ एस प्रमाण भी मिल कि जिनम करनाटक क नवाव का टीपू क साथ पडय त्र पाया जाता था। परन्तु नवाब के जीत-जी यह बात या ही चलती रही। ज्याही नवाव मत्यु शय्या पर पडा, कम्पनी की सना न महल को घेर लिया और यह कारण बताया कि नवाब की मत्यु पर बदअमनी का भय है। नवाब बहुत गिडगिडाया, पर अंग्रेजा न उसे हर समय घर रखा और बराबर अपनी मित्रता का विश्वास दिलात रह। उस समय नवाब का बेटा शाहजादा अलीहुसन उसी महल मे था। ज्याही नवाब के प्राण निकल कि शाहजाद को जबरदस्ती महल मे बाहर ल जाकर अंग्रेजा ने कहा—"चूकि तुम्हार दादा और बाप ने अंग्रेजा के खिलाफ गुप्त पत्र व्यवहार किया है, इसलिए गवनर जनरल का यह फसला है कि तुम बजाय अपन बाप की गद्दी पर बैठन के मामूली रिआया की भांति जिन्दगी बिताओ और इस सधि-पत्र पर दस्तखत कर दो।" जहाँ यह बातें हो रही थी—वहाँ अंग्रेजी सिपाही नगी तलवारें लिय फिर रह थ। परन्तु अलीहुसैन न मजूर न किया। तब नवाब के दूर के रिश्तदार आजमुद्दौला स अंग्रेजा न बातचीत की। उसने सधि की शर्तें स्वीकार कर लीं। तब उस मसनद पर बैठा दिया गया। इस सधि के अनुसार तमाम करनाटक प्रात कम्पनी के हाथ आ गया और आजमुद्दौला केवल राजधानी अरकार और चिपोक के महलो का स्वामी रह गया। नवाब को चिपाक के महल मे रखा गया और उसी म शाहजादा अलीहुसैन और उसकी विधवा माँ को कैद कर दिया। कुछ दिन बाद वह वहीं मर गया। सन्देह किया जाता है कि उसे जहर दिया गया।

मुगल-साम्राज्य म सूरत एक सम्पन्न बन्दरगाह और सूबा था। बहुत दिन से वहाँ बादशाह का सूबेदार रहता था। जब साम्राज्य की शक्ति ढीली पडी, तब वहा का हाकिम स्वतन्त्र नवाब बन बठा। पीछे जब योरोप की जातियो न भारत म पैर फलाय और अंग्रेजो की शक्ति बढ़न लगी, तब सूरत के नवाब स भी अंग्रेजा न सधि कर ली। धीरे धीरे नवाब अंग्रेजा के हाथ की कठपुतली हो गया। चार नवाबा के जमाने मे यही

हाना रहा। व रजर्नी न अपनी नीनि क आधार पर नवाव को भी सेना भग करन और रम्नमी की मना रखने की सलाह दी। नवाव न वहुत नां-नू की, मगर अन्त म एक ला. रुपया वार्षिक और 30 हजार रुपय सालाना की और रियायतें करनी ही पडी। रसी समय नवाब मर गया। इसर बाद इसका चाचा नसिरुद्दीन गद्दी पर बैठा। इसने शीघ्र ही दीवानी और फौजदारी अधिकार अंग्रेजा को दे दिय और स्वय व-मुल्क नवाब बन बैठा।

दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के वजीर आसफजाह न वजारत से इस्तीफा देकर दक्षिण म जा, हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाकर एक नया राज्य स्थापित किया और 10 वष तक मराठा स लडकर अपने राज्य का दृढ कर लिया। धीर धीरे दक्षिण म तीन शक्तियाँ प्रबल हा गइ। एक निजाम, दूसरी पशवा और तीसरी हैदरअली।

अंग्रेजी शक्ति न इन तीना का न मिलन देने म ही कुशल समझी। निजाम न अंग्रेजी शान्ति के अधीन हाकर बार-बार हैदरअली स विश्वास-घात किया। ज्योंही टीपू की समाप्ति हुई, अंग्रेजी-शक्ति निजाम के पीछे लगी। पहले गुण्टूर का इलाका उमस ले लिया गया।

इसक बाद एक गहरी चाल यह खेली गई कि वजीर स लकर छोटे-छोटे अमीरा तक का रिश्वतें देकर इस बात पर राजी कर लिया गया कि नवाब की सब सना, जो फ्रांसीसियों के अधीन थी, टुकडे टुकडे करके बर्खास्त कर दी जाय और कम्पनी की सबसीडियरी सेना चुपके स हदरा-बाद आकर उसका स्थान ग्रहण कर ले। इसकी नवाब को कानो-कान खबर नहीं हो।

वजीर यद्यपि सहमत हो गया था, घूस भी खा चुका था, परन्तु ऐसा भयानक काम करत झिझकता था। किन्तु अंग्रेजा न सेना के भीतर ही जाल फना दिए थ। फलत निजाम की सेनाएँ विद्राह कर बैठी क्योंकि उन्ह कई मास का वेतन नहीं मिला था। उचित अवसर देखकर कम्पनी की सना न हैदराबाद का घेर लिया और निजाम की सना को बर्खास्त करके अपना आधिपत्य कर लिया।

शिवाजी की मत्यु के 80 वष बाद मरहठा की सत्ता बहुत बढ चुकी

थी और मुगल साम्राज्य की शक्ति घट रही थी। एक बार ता समस्त भारत म मरहठा का प्रभुत्व छा चुका था। मरहठा म पशवा सर्वोपरि शासक था, परन्तु धीरे धीरे गायकवाड, भासन होल्कर और सिंधिया अपनी पथक सत्ता स्थापित करन लग। उन्होंन पशवा के स्वामित्व म स्वय को पृथक कर लिया।

वारेन हेस्टिग्स बगाल और अवध को हस्तगत करने के साथ ही मराठा मण्डल म भी फूट डालकर मध्य भारत म ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रभुत्व की नीव डाल रहा था। उस समय मालवे का शासन महारानी अहिल्याबाई के हाथो मे था। अहिल्याबाई अग्रेजो की कूटनीति भली-भाँति समझती थी और उसने इसका भारी विरोध किया। अत वारेन हेस्टिग्स को पेशवा के विरुद्ध सिंधिया को फोडना पडा। इस समय होलकर और सिंधिया मराठा-साम्राज्य के सबसे अधिक शक्तिशाली सदस्य थ। महादजी सिंधिया ग्वालियर पर शासन कर रहा था और मल्हरराव होलकर मालवे और बुन्देलखण्ड पर।

मलहरराव होलकर के कुण्डीराव नामक एक ही पुत्र था, किन्तु वह असमय मे ही कुम्भेरू की लडाइ मे मारा गया। कुण्डीराव का विवाह सिंधिया परिवार की एक लडकी अहिल्याबाई के साथ हुआ था। अहिल्या बाई की दो सन्तानें थी। मालीराव पुत्र और मुक्ताबाई कन्या। मलहर राव की मत्यु के पश्चात उसका पौत्र मालीराव होलकर राज्य का स्वामी हुआ। किन्तु दुर्भाग्यवश मालीराव सिंहासन पर बैठन के नौ महीने बाद स्वर्गवासी हुआ। मालीराव निस्सन्तान मरा। अत राज्य का सारा भार *अहिल्याबाई के कधो पर आकर पडा।*

सिंहासन पर बैठने ही अहिल्याबाई को एक विकट कठिनाई का सामना करना पडा। उसका गद्दी पर बठना उसके एक ब्राह्मण मन्त्री गगाधर यशवन्त को बहुत बुरा लगा। राघोबा दादा उस समय पेशवा की मध्य भारत की सेना का प्रधान सेनापति था। गगाधर न राघोबा के सामन अपनी यह योजना पेश की कि अहिल्याबाई अपने एक दूर के रिश्त के छोटे से लडके को गोद ले - स्वय गद्दी पर बठने का इरादा छाड द व गगाधर उस लडके का वारिश बनकर राज्य-भार सभाले। इस काय के

उपलक्ष म राघोवा को गगाधर न एक बहुत बडी रकम नजराने म देन का वादा किया। किन्तु अहिल्याबाई के सदगुणो और प्रतिभा स उनकी प्रजा भली भाँति परिचित थी। इसलिए प्रजा कही असन्तुष्ट न हो जाय, इसका भय भी गगाधर को था। फिर भी राघोवा न गगाधर की इस योजना पर अपनी स्वीकृति दे दी।

किन्तु गगाधर को अपनी भूल शीघ्र मालूम हो गइ। जब उसने अहिल्याबाई को इस सारे विषय की सूचना दी, तो अहिल्याबाइ न उत्तर दिया कि तुम्हारी इस योजना को स्वीकार करना होलकर वश के लिए नितात लज्जास्पद है, और मैं कभी इसम अपनी सम्मति न दूगी। उसन गगाधर को भली भाँति समझा दिया कि रानी और राज-माता की हैसियत से राज्य का शासन प्रबन्ध करन का अधिकार केवल मुझे है किसी अन्य का नही।

अहिल्याबाई न राघोवा को भी सूचना भेज दी कि एक स्त्री स युद्ध छेडन म आपको पल्ले कलक पड सकता ह, प्रतिष्ठा नही। होलकर राज्य की समस्त प्रजा अहिल्याबाई के पक्ष म थी।

राघोवा ने इस अपना अपमान समझा। वह इसका बदला खून स लेन को तैयार हो गया। अहिल्याबाई भी शान्त होकर नही बैठी। होलकर-राज्य म राघोबा के विरुद्ध युद्ध का एलान कर दिया गया। राज्य की समस्त सेना अपनी राज माता के अपमान का बदला लेन को तयार हो गई विशेषकर जब सैनिको को यह ज्ञात हुआ कि अहिल्याबाई स्वय युद्ध के मैदान म अपनी सेना का नेतृत्व अपन हाथो म लेंगी, तो सैनिको के उत्साह का पारावार न रहा। अहिल्याबाई न अपन हाथी पर रत्न-जटित हौदा कसवाया। हौदे के चारो कोनो पर बाणो से भरे हुए तूणीर और चार धनुष रखवाए।

परिस्थिति गम्भीर होते देखकर महादजी सिंधिया और तुकोजी भोसले न राघोवा का विरोध किया। उधर स्वय पेशवा न राघोवा को आज्ञा दी कि तुम अहिल्याबाई के विरुद्ध कार्यवाही न करो। राघोवा न परिस्थिति विपरीत देखकर अहिल्याबाइ के विरुद्ध युद्ध करने का विचार छोड दिया।

अपनी असाधारण क्षमता से प्रेरित होकर अहिल्याबाई ने राघोबा को राजधानी म बुलाकर आदर सत्कार किया और गगाधर यशवन्त को भी फिर बहाल कर दिया गया।

गद्दी पर बठन के बाद अहिल्याबाई न तुकाजी होलकर को अपना सेनापति नियुक्त किया और आज्ञा दी कि सेना को भली भाँति सगठित किया जाय।

सेना के सगठन हो जान पर महारानी अहिल्याबाइ न अपनी समस्त शक्तियाँ राज्य प्रबन्ध की ओर लगा दी। मालवा और नीमाड का कर अहिल्याबाई ही वसूल करती थी और बुन्देलखण्ड तथा दक्षिण का कर तुकाजी वसूल करता था। फौजी और दीवानी खच निकालकर सारा धन सावजनिक खजान मे चला जाता था। अपने खच के लिए चार लाख रुपय सालाना की जागीर पथक रखी थी।

अहिल्याबाई के दूत पूना, हैदराबाद, श्रीरगपत्तनन नागपुर लखनऊ और कलकत्ता म थे। अहिल्याबाई के जितने सामत राजा थ, सबके यहाँ उसके दूत रहा करत थ।

महाराष्ट्र-स्त्रियो म पर्दे की प्रथा कभी नही रही इसलिए अहिल्याबाई स्वय रोज खुले दरबार मे बैठकर दरबार की कायवाही सचालन करती थी। अहिल्याबाई के शासन का पहला सिद्धात था कि प्रजा म हलका लगान लिया जाय। किसान और गरीबो पर उसकी बडी कृपा रहती थी। उसन प्रजा के न्याय क लिए अदालत और पचायतें खोल रखी थी, लेकिन फिर भी वह स्वय उनकी प्रत्यक शिकायत सुना करती थी। प्रजा क हर मनुष्य की पहुँच उस तक थी।

महारानी अहिल्याबाइ अत्यन्त परिश्रमशील थी। राज्य के कार्यों स अवकाश पाकर वह अपना सारा समय भक्ति और परोपकार म लगाती थी। उसक प्रत्यक काम पर धार्मिकता की गहरी छाप रहती थी। वह बहुधा कहा करती थी कि अपन शासन के एक एक काम क लिए मुझे परमात्मा के सामन जवाब दना होगा।

जब उसक मन्त्री शत्रु पर किसी प्रकार की सख्ती करन की सलाह दत थे, तो अहिल्याबाइ कहती—हम उस सव शक्तिमान के रच हुए

पदार्थों को नष्ट न करें।

महारानी अहिल्याबाई नित्य ब्रह्ममुहूर्त में उठा करती थीं। नित्य कर्म से निवृत्त होने के उपरान्त वह ईश्वर की उपासना करती थी। फिर कुछ देर तक धार्मिक ग्रन्थों का पाठ सुनती थी। इसके बाद अपने हाथों से निर्धनों को दान देती और ब्राह्मणों को भोजन कराकर तब स्वयं भोजन करती थी। वह सर्वथा निरामिष-भोजी थी। भोजन के उपरान्त वह फिर ईश्वर प्रार्थना करती थी। फिर थोड़ी देर के लिए विश्राम करती थी। इसके बाद उठकर कपड़े पहनकर मध्याह्न दो बजे दरबार में पहुँच जाती थीं। दरबार में वह प्रायः छः बजे शाम तक रहती थी। दरबार समाप्त होने के पश्चात पूजा पाठ और थोड़े से आहार के बाद नौ बजे रात को वह फिर दरबार में आ जाती थी और ग्यारह बजे रात तक काम करती रहती थी। इसके बाद अहिल्याबाई के सोने का समय होता था। इस दैनिक कार्यक्रम में सिवाय, व्रतों, विशेष त्यौहारों अथवा राज्य की विशेष आवश्यकताओं के कभी परिवर्तन न होता था।

महारानी अहिल्याबाई के राज्य की समृद्धि और शांति अधिक प्रशंसनीय थी। इसका केवल एक कारण था और वह यह कि उसे प्रजा पर शासन करना ज्ञात था। अहिल्याबाई अपनी शान्त प्रजा के साथ दयावान थी और अपनी उपद्रवी प्रजा के साथ उसका व्यवहार कड़ा, किन्तु न्यायपूर्ण होता था। राज्य के मंत्रियों को वह कभी नहीं बदलती थी।

इन्दौर पहले एक छोटा सा गाँव था। अहिल्याबाई की ही विशेष कृपा से वह बढ़ते-बढ़ते एक विशाल सम्पन्न नगर हो गया।

अपने सामन्त-नरेशों के साथ महारानी अहिल्याबाई का व्यवहार अत्यन्त उदार होता था। सामन्त-नरेश अहिल्याबाई की इस उदारता का लाभ उठाकर कभी कभी खिराज भेजने में असाधारण देर कर देते थे। किन्तु दो चार बार अहिल्याबाई की कड़ी ताड़ना पाकर फिर भेज देते थे। कई छोटे मोटे राजपूत सरदार अहिल्याबाई के राज्य में उपद्रव मचाकर लोगों को लूट लेते थे। अहिल्याबाई ने उन्हें प्रेम से जीतकर अपने राज्य के अत्यन्त शान्त और स्वामिभक्त नागरिक बना दिया।

अहिल्याबाई अपने राज्य में चारों ओर खुशहाली पैदा करने का

अथक प्रयत्न करती थी। जब वह अपने राज्य के महाजनो, व्यापारियों, किसानों और काश्तकारों को उन्नति करते देखती, तो उसे बड़ी प्रसन्नता होती। उन पर टैक्स बढ़ाने के बदले महारानी अहिल्याबाई की उन पर कृपा बढ़ती।

सतपुड़ा घाट के गोंड और भील होलकर-राज्य में अक्सर उपद्रव मचाया करते थे। अहिल्याबाई ने पहले उनसे प्रेम से काम चलाना चाहा, किंतु जब समझौते से काम न चला, तो उसे विवश होकर कई आदमियों को पकड़कर सूली पर लटकाना पड़ा। गोंड, भील उसके इस भीषण दण्ड को देखकर काँप गए। उन्होंने क्षमा की प्रार्थना की। उदार रानी ने उन्हें क्षमा कर दिया। उन्हें खेती करने के लिए जमीनें दीं। उन्हें यह अधिकार दे दिया कि उनके पहाड़ों से जो माल से लदी हुई गाड़ियाँ गुजरें, उन पर वे दो पैसे प्रति गाड़ी कर वसूल करें। इस तरह धीरे धीरे अहिल्याबाई ने उन्हें शांत और सुखी नागरिक बनाने की चेष्टा की।

महारानी अहिल्याबाई ने अपने राज्य में कई किले बनवाए। उसने विन्ध्याचल पर्वत पर ऐसी जगह जहाँ पर कि पहाड़ जमीन से बिल्कुल सीधा ऊपर को जाता है बड़ी लागत पर एक सड़क बनवाई और चोटी के ऊपर जौम नाम का किला बनवाया। अहिल्याबाई ने अपनी राजधानी माहेश्वर में बहुत सा रुपया खर्च करके कई मंदिर और धर्मशालाएँ बनवाईं। होलकर राज्य भर के अन्दर उसने सड़कें, कुएँ खुदवाए। किन्तु उसकी यह उदारता अपने राज्य तक ही परिमित न थी। उसने भारत के समस्त तीर्थ-स्थानों में द्वारिकापुरी से लेकर जगन्नाथ धाम तक और केदारनाथ से लेकर रामेश्वरम तक मंदिर और धर्मशालाएँ बनवाईं। साधुओं के लिए सदाव्रत खुलवाए। बनारस का प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट महारानी अहिल्याबाई का ही बनवाया हुआ है।

दक्षिण के अनेक दूर-दूर के मंदिरों में मूर्तियों के स्नान के लिए प्रतिदिन गंगाजल पहुँचने का प्रबंध अहिल्याबाई ने अपने खर्च पर कर रखा था। वह रोज गरीबों को खाना खिलाती थी और विशेष त्योहारों पर दानों में छोटी जातियों के लिए खेल-तमाशे और आमोद प्रमोद का प्रबंध किया करती थी। गर्मी के मौसम में प्यासों को ठण्डा जल पिलाने का

प्रबंध करती थी और जाडे म गरीबो को कम्बल बँटवाती थी। नदियो म मछलियो को खाना खिलवाती थी और गर्मी के दिनो मे उसक आदमी किसान के हल मे जुत बैलो को रोककर पानी पिलात थ। चूंकि किसान पक्षियो को अपन खेत से उडा देत है, इसलिए उसने पक्षियो के लिए फल के अनक बाग लगवा दिए थे, ताकि पक्षी स्वतन्त्रतापूवक उसमे अपना पट भर सकें।

इन्ही कार्यों के कारण लोग उसस शत्रुता करना पाप समझत थ। इतना ही नहीं, वरन किसी भी शत्रु के विरुद्ध अहिल्याबाई की सहायता करना अपना धार्मिक कतव्य समझत थे। अन्य राजा भी उसका आदर करत थे। दक्षिण के निजाम और टीपू सुल्तान अहिल्याबाई का उतना ही आदर करत थे, जितना पेशवा करता था, और मुसलमान एव हिन्दू—दोनो अहिल्याबाई को चिरजीवी होने और उसकी सौख्य-वद्धि की ईश्वर स प्राथना करत थे।

60 वप की अवस्था मे 30 वप तक राज्य करन के बाद सन 1795 म महारानी अहिल्याबाई की मृत्यु हुई। कडे उपवास और व्रतो न उसके शरीर को दुबल बना दिया था।

अहिल्याबाई मध्यम कद की दुबली-पतली स्त्री थी। रग उसका गहरा गेहुँआ था और जीवन की अतिम घडी तक उसके चेहर से शान्ति और भलाई झलकती थी। अहिल्याबाई बडी हँसमुख थी, किन्तु लोगो के जुल्म और ज्यादतियो से जब उसे क्रोध आता था तो लोग कापन लगत थे। धार्मिक ग्रन्थो स उसे विशेष प्रेम था। वह उन्ह पढ और समझ लेती थी। अहिल्याबाई राज्य प्रबन्ध मे अत्यन्त चतुर और दक्ष थी। अहिल्याबाई जब बीस वप की भी न थी, उसके पति युद्ध म मारे गये। पुत्र भी उसका केवल नौ महीन राज्य करके मर गया। पति वियोग और अपन पुत्र की असामयिक मृत्यु का उसके हृदय पर बडा गहरा असर पडा। पति मत्यु के बाद उसन कभी रगीन कपडे नही पहने, और सिवाय एक हीरा की माला के कोई दूसरा आभूषण भी नही पहना। खुशामद स उसे सख्त नफरत थी।

एक ब्राह्मण कवि उसकी प्रशसा म एक पुस्तक लिखकर लाया।

अहिल्याबाई ने उसे बडे धैय के साथ सुना। जब वह समाप्त कर चुका ता कहन लगी—'मैं तो एक पापी और दुबल स्त्री हूँ। मैं इस प्रशसा की पात्र नही।

यह कहकर कवि की पुस्तक नमदा नदी म फिकवा दी गइ।

उसम अभिमान न था। वह अपन धम की कट्टर विश्वासी थी, किंतु उसमे अनुदारता न थी। अपनी प्रजा के उन लोगा के साथ, जिनक धार्मिक विश्वास उससे भिन्न थे, अहिल्याबाई का व्यवहार विशेष अनुग्रह और उदारता का होता था। अहिल्याबाई की मृत्यु के बाद अग्रेजा न मालवा पर अधिकार कर लिया।

आठ

सत्रहवी शताब्दी के मध्यकाल मे इगलड न अपन राजा चार्ल्स प्रथम का सिर कुल्हाडे स काट डाला। उस समय वहा रोमन कथालिक और प्रोटेस्टट सम्प्रदाया म झगडे बढे हुए थ। राजसत्ता सुदढ नही थी। ईसाई सम्प्रदाय दो भागो म विभक्त था। एक सम्प्रदाय दूसर सम्प्रदाय स वैर रखता था, इसी कारण चार्ल्स प्रथम को अपना सिर कटाना पडा। 1625 ई० म जेम्स प्रथम की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम के नाम से इगलैंड के सिंहासन पर बठा। उस समय इगलैंड की राजनतिक अवस्था प्रोटेस्टेन्ट और रोमन कथालिका के झगडो के कारण अत्यन्त डाँवाडोल हो रही थी। चार्ल्स स्वय अनुभवहीन था, इस पर उसे मत्रि मण्डल भी उद्दण्ड तथा स्वेच्छाचारी मिला। परिणाम यह हुआ कि प्रजा पर नाना प्रकार के अत्याचार होन लग। लोगा म क्रान्ति की लहर फलन लगी। चार्ल्स न क्रान्ति को निदयतापूवक कुचलना चाहा परन्तु कृतकाय न हुआ, उलटे प्रजा कुचले हुए सप की भाति उसे नष्ट करन पर उतारू हो गई। राज्य क्रान्ति हुइ। पार्लियामेण्ट क नता क्रामवल न जम जम शान्ति स्थापित की, परन्तु चार्ल्स के प्रति उनके घणा क भाव कम न हुए। सेनाओ का क्रोध इतना बढ़ गया कि वे सब साथियो को मार डालन पर

भी तप्त न हुइ। सब लोग चाल्स के लहू के प्यासे बन गये तथा उस पर अभियोग चलाने का आयोजन करने लगे। पार्लियामेण्ट के अधिकाश सदस्या ने इसका विरोध किया, परन्तु कर्नल प्राइड ने तलवार के बल पर म मत विरोधियो को बाहर निकाल दिया तथा बचे हुए सभासदा से चार्ल्स पर अभियोग चलाने का बिल पास करवा दिया। बाद म विद्वान के लिए, इस बची हुई पार्लियामेण्ट का नाम रम्प रख दिया गया। बिल पास हो गया, परन्तु हाईकोर्ट के अनेक विचारको ने इस काय म भाग लेने की अनिच्छा प्रकट की। इतने पर भी 150 सदस्यो की एक विचार-सभा बनाई गई तथा जॉन ब्राडशा को उसका सभापति नियुक्त किया गया।

चार्ल्स ने विचार सभा में आते ही ललकारकर कहा—"प्रजा को उस पर अभियोग चलाने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि राजा की नियुक्ति परमात्मा की ओर से होती है, अतएव मनुष्य का तथा विशषतया उसकी प्रजा का उसमे हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं हो सकता।'

उसने अपने पक्ष म कोई प्रमाण देने से इनकार कर दिया। परन्तु शत्रु ता तुले हुए बैठे थे। विचार सभा म पाँच दिन बहस के बाद उसे मृत्यु दण्ड दिया गया और व्हाइटलहाल जेल भेज दिया गया। विचार-सभा के फसले को पार्लियामेन्ट ने भी पास कर दिया और अपने राजा को मृत्यु दण्ड देने की आज्ञा दे दी।

यद्यपि चार्ल्स के मित्रो को ऐसी आशका थी, पर उन्हे इस निणय पर बडा दुख हुआ। राजा के परम मित्र डी आटगनन ने ऐसे सकट और नाजुक समय म बडी धीरता और विचार से प्रतिज्ञा की कि मैं यथाशक्ति यह कत्ल न होने दूगा। पर किस प्रकार? इस समस्या को वह अभी तक सुलझा न पाया। यह सब कुछ अवसर पर निर्भर था। पर इतना समय भी कहाँ था? यदि किसी प्रकार वधिक को वहाँ स एक दिन के लिए हटा दिया जाता तो भी यथेष्ठ समय मिल सकता था। वास्तव मे उसकी प्राण रक्षा का एकमात्र उपाय वधिक को लन्दन से बाहर हटा देना था। पर उसे लन्दन से बाहर कैसे किस जाय? डी आटगनन के सामने यही सबसे कठिन समस्या थी।

अपने इस प्रयत्न को चार्ल्स स्टुअट पर व्हाइटहाल जेल म पहुँचकर प्रकट करना अनिवाय था, जिसम वह निकल भागन मे सावधान रह। एक दूसर मित्र अरमिम ने यह नाजुक काल अपन जिम्मे लिया। चार्ल्स का पादरी जुक्सन से जेल मे मुलाकात करन की आना मिल गइ थी। अरमिम ने इस अवसर पर लाभ उठाना चाहा आर यह ठहरी कि वह जुक्सन क कपडे पहनकर और उसका पूरा भेप बनाकर उसकी जगह मिलन जाय और इस बात क लिए जुक्सन किसी न किसी प्रकार राजी कर लिया जाय। व्हाइटहाल जेल पर तीन पलटना का पहरा रखा गया था।

राजा क कमर मे सिफ मामबत्तियाँ जल रही थी। धीमा प्रकाश उसम फल रहा था। राजा उदास भाव स बठे हुए अपन जीवन पर विचार कर रह थ। मत्यु शय्या पर पडे मनुष्य को अपना जीवन कितना ज्यातिमय और आनन्ददायक दीखता है, ठीक वही दशा इस समय उनकी था। उनका सेवक परी अब भी अपन स्वामी के साथ था और कत्ल की आज्ञा सुनन के समय म ही रो रहा था।

चार्ल्स स्टुअट मेज पर झुके हुए अपन तमगे की ओर दख रह थ, जिस पर उनकी स्त्री और लडकी के चित्र अंकित थे। वे दोना की प्रतीक्षा म थे—पहले जुक्सन की और फिर मृत्यु की। स्वप्न जसी दशा म व फ्रेंच वीरा का स्मरण कर रहे थे। कभी कभी वे स्वय ही प्रश्न कर बठत थ—क्या यह सब कुछ स्वप्न नही है? क्या मै पागल हूँ?

अंधेरी रात थी। पास वान चर्च से घण्टा बजने की आवान आ रही थी। कमरे मे मन्द प्रकाश फला हुआ था। उन्ह कुछ प्रतिविम्बित मूर्तिया दिखाई दी, पर वास्तव मे कुछ था नही। वाहर कोयले की आग जल रही थी उसी का यह प्रतिविम्ब था।

अचानक किसी के पैरो की आहट सुनाई दी। दरवाजा खुला और मशालो के प्रकाश से कमरा चमक उठा। श्वेत वस्त्र धारण किये हुए एक शान्त मूर्ति अन्दर आइ।

"जुक्सन," चार्ल्स न कहा—'धन्यवाद, मेरे अंतिम बन्धु! तुम खूब मौके पर आय।'

पादरी न सशंक भाव से कोने की ओर देखा, जहा परी सुबक-सुबक

कर रो रहा था।

राजा ने कहा—"परी, अब रोओ मत। पवित्र पिता हमारे पास आए है।"

पादरी ने कहा—"यदि यह परी है तो फिर डरने का कोई कारण नहीं। श्रीमान् मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपका अभिवादन करूँ। आज्ञा हो तो मैं अपना परिचय भी दूं और आने का कारण बताऊँ।'

आवाज को पहचानकर चार्ल्स चिल्लाने ही वाला था कि अरमिस ने उसका मुँह बन्द कर दिया और झुककर अभिवादन किया।

चार्ल्स ने धीरे से कहा—'क्या तुम ?"

"जी हाँ श्रीमान आपकी इच्छानुसार पादरी जुक्सन हाजिर है।

"यह यहाँ से आ पहुँचे ? यदि वे तुम्हें पकड़ लें तो तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे?"

अरमिस खड़ा था। उसकी आकृति इस समय देव-तुल्य थी। उसने कहा—'श्रीमान मेरी चिन्ता न कीजिए। आप अपनी फिक्र कीजिए। आपके मित्रों की दृष्टि आपके ऊपर लगी हुई है। हम क्या करेंगे, यह अभी तक मैं भी नहीं जान पाया हूँ, पर हम चार आदमी हैं और चारों ही आपकी रक्षा करने पर तुले हुए हैं। रात-भर का समय है। आप सोइये, किसी बात पर चौंकिये भी नहीं। क्षण-क्षण की प्रतीक्षा कीजिये।"

चार्ल्स ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी।

फिर कहा—'मित्र तुम्हें ज्ञात है कि तुम्हारे पास व्यर्थ समय नहीं है। यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो बहुत जल्दी करो। कल प्रातः दस बजे मैं जरूर मर जाऊँगा।'

"श्रीमान, इस बीच में कोई ऐसी घटना हो जायगी, जिससे आपका वध असम्भव हो जायगा।"

राजा ने अरमिस की ओर विस्मित दृष्टि से देखा। उसी समय नीचे खिड़की के पास लकड़ी के लट्ठे के उतारने की आवाज सुनाई दी।

राजा ने कहा—'यह आवाज सुनते हो ?"

आवाज के साथ मारे चिल्लाने का शोर भी था।

अरमिस ने कहा—"सुन रहा हूँ। पर यह शोर कैसा है, यह नहीं

समझ आता।"

"क्या जाने, पर यह आवाज कैसी है यह मैं बता सकता हूँ। तुम जानते हो कि मेरा कत्ल इसी खिड़की के बाहर होगा ?

हाँ श्रीमान, यह तो जानता हूँ।"

तो ये खटके मेरी फाँसी बनाने के लिए लाए जा रहे हैं। ... मनुष्य को तो इस इमारत उतनी चोट लग चुकी है।"

अरमिस काँप उठा।

राजा ने कुछ ठहरकर कहा—'देखो जीवन की आशा व्यर्थ है। मुझे प्राण ... की आशा मिल चुकी है। तुम मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दो।'

अरमिस ने कहा—"श्रीमन, वे लोग फाँसी बना सकते हैं, पर वधिक को कहाँ से लायेंगे ?

'इसका क्या मतलब ?'

"यहाँ कि अब तक तो वधिक बहुत दूर निकल गया होगा, इसलिए आपका वध अगले दिन के लिए स्थगित करना पड़ेगा।"

"अच्छा ?"

कल रात को हम लोग आपको यहाँ से ले भागेंगे।'

'किस तरह ?" —राजा ने चौंककर पूछा। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिला हुआ था।

परी ने हाथ जोड़कर कहा—"आपको और आपके साथियों को ईश्वर सफलता दे।

'मुझे तुम्हारी बात तो मालूम होनी चाहिए ताकि मैं भी तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।"

'सो तो मैं नहीं जानता श्रीमन्। लेकिन हम चारों में जो सबसे अधिक चतुर, वीर और धुन का पक्का आदमी है उसी ने चलते वक्त मुझसे कहा था कि महाराज से कह देना कि कल रात को दस बजे हम उन्हें भगा लायेंगे। जब उसने यह कहा है तो वह अवश्य पूरा करेगा।'

"मुझे उस उदार सज्जन का नाम तो बताओ, ताकि मैं अन्त समय तक उसे धन्यवाद देता रहूँ, चाहे वह अपने काम में सफल हो या न हो।'

डी आटगनन श्रीमन। ये वही सज्जन हैं जो आपको उस समय

बचाने म सफन रह थे, जबकि कनन हैरीसन महला मे घुम आय ये।'

"तुम सचमुच विचित्र आदमी हो। यदि मुझम काइ ऐसी बात कह तो मैं कभी विश्वास न करूँ।"

"श्रीमान हम प्रत्यक क्षण आपकी रक्षा के लिए प्रयत्नशील हैं। छोटी से छोटी चेष्टाएँ धीमी मे धीमी कानाफूसी और गुप्त म गुप्त सकत जो शत्रु आपकी बाबत करते रहत है, हमसे छिपा नही रह सकता।'

"आह! मैं क्या करूँ? मेरे अन्तस्तल म कोई शब्द नही निकलता है। मैं तुम्हे कैसे धन्यवाद दू? यदि तुम अपन काय मे सफल हुए तो मैं यही नही कहूँगा कि तुमन एक राजा को बचाया ह बल्कि तुमन एक स्त्री का पति बचाया है बच्चा का पिता बचाया है। अरेमिस मेरा हाथ ता दबाओ। यह हाथ तुम्हार ऐस मित्र का है जो अन्तिम श्वास तक तुम्ह प्यार करता रहेगा।"

अरेमिम न चाहा कि राजा के हाथ चूम लू। पर उसन तुरन्त हाथ खीचकर अपने हृदय पर रख लिया।

अकस्मात एक व्यक्ति ने बिना द्वार खटखटाए अन्दर प्रवेश किया। बहुत से गुप्तचर आस-पास लगे रहत थे। उन्ही म स एक यह भी था। यह पादरी था।

राजा ने उससे पूछा—"आप क्या चाहते है?"

"मैं जानना चाहता हूँ कि चाल्स स्टुअर्ट की स्वीकृति खत्म हुई या नही?"

'इससे आपका क्या मतलब है? हम लोग तो एक ही पथ क मानन वाले नही हैं न?"

"सब आदमी भाई भाई है। मेरा एक भाई मरन वाला है और मैं उसे मत्यु के लिए तैयार करन आया हूँ।"

पेरी न कहा—"हमार स्वामी को शिक्षा की जरूरत नही है।

अरमिस न धीरे से राजा से कहा—"इनस नर्मी का व्यवहार करें, यह ता एक सवक मात्र ह।'

राजा न कहा—"पवित्र पिता से मुलाकात करने के बाद मैं आपसे प्रसन्नता से बातें कर सकूगा।"

एक सदिग्ध दृष्टि फेरता हुआ वह व्यक्ति वहाँ से चला गया। जुक्सन वशधारी पादरी को भी उसने सन्देह की दृष्टि से देखा है यह बात राजा से छिपी न रही।

दरवाजा बन्द हो जाने पर राजा ने कहा—"मुझे विश्वास हो गया है कि तुम ठीक कहते थे। यह आदमी किसी बुरे भाव से आया था। जब तुम लौटो तो सावधान रहना। कोई आपत्ति न आ जाए।"

"श्रीमन, मैं आपका धन्यवाद देता हूँ, पर आप व्याकुल न हों। इस लबादे के नीचे मैं एक कवच पहने हुए हूँ और एक खंजर भी मेरे पास है।"

"तब जाओ मशेर। ईश्वर तुम्हें सकुशल रखे। यही आशीर्वाद जब मैं राजा था तब भी दिया करता था।"

अरेमिस बाहर चला गया। चार्ल्स द्वार तक पहुँचाने आए। अरेमिस ने आशीर्वाद दिया। पहरेदारों ने मस्तक झुका दिए, और बड़ी शान के साथ सैनिकों से भरे उस कमरे में से निकलकर वह अपनी गाड़ी में आ बैठा। गाड़ी पादरी साहब के घर की ओर चल दी।

जुक्सन व्याकुलता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। अरेमिस को देखकर उसने कहा—"आ गये ?

अरेमिस ने कहा—"जी हाँ, मेरी इच्छानुसार सब कुछ सफल हुआ। सिपाही, पहरेदार, सभी ने मुझे समझा कि आप ही हैं। राजा ने आपको आशीष दी है और आपकी आशीष के लिए भी व्याकुल हैं।"

"मेरे पुत्र, ईश्वर ने तुम्हारी रक्षा की है। तुम्हारे इस कार्य से मुझे बहुत कुछ आशा और साहस हुआ है।"

अरेमिस ने फिर अपने कपड़े पहने और जुक्सन से यह कहकर कि मैं फिर आऊँगा, चल दिया।

वह मुश्किल से दस गज गया होगा कि एक आदमी को लबादा पहने हुए अपनी ओर आते देखा। वह सीधा आकर उसके पास खड़ा हो गया। वह पोरथस था।

पोरथस ने अरमिन से हाथ मिलाते हुए कहा—"मैं तुम्हारी देख रख कर रहा था। क्या तुम राजा से मुलाकात कर चुके ?"

"हाँ मब ठीक है। पर हमारे और साथी कहाँ हैं ?'

"हमने उस होटल में ग्यारह बजे मिलन का निश्चय किया था न ?"

'तो फिर अब समय नष्ट नहीं करना चाहिए।"

गिर्जे की घड़ी ने साढे दस का घण्टा बजाया। वे जल्दी जल्दी चले और वहाँ सबसे पहले पहुँच गये। इनके बाद अयम पहुचा।

अयम ने पूछा - "सब ठीक है न ?"

अरमिस ने कहा—"हाँ, तुम क्या कर आए ?

"मैंने एक नाव किराये पर तय की है। वह नाव बहुत तेज चलने वाली है। डाग्स टावर के ठीक सामने ग्रीनविच पर वह हमारी प्रतीक्षा करेगी। उस पर एक कप्तान है और चार सिपाही हैं। तीन रात के लिए पचास पौण्ड मे तय हुए हैं। वे हमारी इच्छानुसार काम करेंगे। पहले तो हम टम्स में दक्षिण दिशा को चलेंगे, फिर करीब दो घण्टे में खुले समुद्र में पहुँच जावेंगे। वहाँ पहुँचकर असली समुद्री डाकुओं की तरह किनारे-किनारे, और यदि समुद्र अनुकूल हुआ तो बोलोगने की ओर चलेंगे। कप्तान का नाम रागस है और नाव का नाम लाइटनिंग है। निशानी के लिए एक रूमाल है, जिसके कोनों मे गाँठें बँधी हुई हैं।'

थोड़ी देर पीछे ही आटगनन ने प्रवेश किया।

उसने कहा —"अपनी जेबों में से निकालो क्या है, और सौ पौण्ड इकट्ठे करके मुझे दो।"

रकम फौरन इकट्ठी कर दी गई। डी आटगनन बाहर चला गया और जल्दी ही लौट आया। उसने कहा—"अच्छा यह काम भी पूरा हुआ।"

अयस ने पूछा—"क्या वकिल लन्दन छोड़कर चला गया ?

"वह एक द्वार से जा सकता था और दूसरे से आ सकता था। इसलिए सावधानी की दृष्टि से बन्द कर दिया है।"

'वह है कहाँ ?"

"होटल में एक कोठरी में कैद है। मौसक्यटन दरवाजे पर बैठा है। यह लो उसकी ताली।"

अरमिस ने कहा, "शाबास, पर तुमने उसे बाहर आने तक राजी कैसे

आधी रात के समय राजा ने खिड़की के नीचे बहुत शोर गुल सुना। यह सब कुछ हथौड़े की चोटों और चीखने-फाड़ने में हो रहा था। उस अंधकार और निस्तब्धता में वह पहले से ही भयभीत हो रहे थे। इस शोरगुल में उनकी रही-सही हिम्मत भी जाती रही। उन्होंने परी को द्वार-पाल के पास यह कहला भेजा कि "जरा इन मजदूरों से कह दो कम शोर मचावें। कम से कम इस अंतिम रात्रि में तो मुझे सुख से सो लेने दें।"

परी ने बाहर जाकर पहरेदार से कहा परन्तु वह अपनी ड्यूटी से हट नहीं सकता था। इसलिए परी को ही वहाँ जाकर मना कर आने की आज्ञा उसने दे दी। महल का चक्कर काटकर परी ने उस खिड़की के नीचे पहुँचकर देखा कि पाड़ अभी पूरी नहीं हो पाई है और वे लोग उसमें कीलों से काला कपड़ा लटका रहे हैं।

पाड़ की ऊँचाई जमीन से 20 फीट ऊँची खिड़की तक थी। इसमें नीचे दो मंजिल था। परी घृणा से उन आठ-दस मजदूरों को जो अभी तक शीघ्रता से काम कर रहे थे, देखने लगा। वह देखना चाहता था कि किस आदमी के कार्य से राजा कष्ट पा रहे हैं। दूसरी मंजिल की ओर उसने देखा कि दो आदमी नाप की कमानी सरका रहे हैं। हथौड़े की चोट पड़ते ही पत्थर चीर-चीर होकर बिखर जाता है और एक आदमी घुटने टेक इधर उधर पड़े हुए कंकड़ों को हटाता जाता है। उसे निश्चय हो गया कि यही वे शोर था राजा शिकायत कर रहे थे।

परी जीने पर चढ़कर उनके पास गया और कहने लगा 'दोस्तो अपना काम जरा धीरे धीरे करो, जिससे शोर न मचे। मैं आपसे यही प्रार्थना करने आया हूँ। राजा इस समय सो रहे हैं और उन्हें पूर्ण विश्राम की जरूरत है।'

हथौड़े से काम करने वाला व्यक्ति रुक गया और पीठ फेरकर उधर देखने लगा, पर अंधेरे के कारण परी उसका मुँह न देख सका। दूसरा आदमी जो घुटने टेक काम कर रहा था वह भी मुड़ा। यह कम लम्बा था अतः इसका चेहरा लालटेन के प्रकाश में दिखलाई पड़ रहा था। उस आदमी ने परी पर एक कड़ी दृष्टि डाली और उसके मुँह पर उँगलियाँ रख दी। पेरी हड़बड़ाकर पीछे हट गया।

उस मजदूर न कहा—"राजा से कह दो कि यदि आज रात का सुख मे न सो सकेंगे तो कल रात का सुख स भा लेंगे।"

दूसरे मजदूरो ने भी कठोरता मे हाँ म हाँ मिलाई। परी वहा स चल दिया। उसे ऐसा मालूम पडता था, मानो वह स्वप्न देख रहा है।

चार्ल्स वेचनी मे परी की बाट देख रह थे। जब परी अन्दर आया तो पहरेदार ने यह जानने की इच्छा मे कि राजा क्या कर रहे हैं, अन्दर झाँका। राजा कुहनी के सहारे पलग पर लेटे हुए थ। परी ने दरवाजा बन्द कर दिया। उसका चेहरा प्रसन्नता से लाल हो रहा था।

परी ने धीरे स कहा—"श्रीमन आपको पता है इतना शोर मचाने वाले वे मजदूर कौन हैं?"

राजा न उदास भाव म सिर हिलाकर उत्तर दिया—"नहीं, मैं कैसे जान सकता हूँ? क्या वे आदमी मेरे परिचित ह?"

परी ने पलग पर झुककर जरा और धीरे स कहा—"श्रीमन, वे हैं अथस और उनके साथी।"

"मेरी पाड क्या वे बना रहे है?"

"हा, और साथ ही साथ दीवार म सूराख भी कर रहे हैं?"

राजा ने चारो ओर भयभीत दृष्टि से देखते हुए कहा—"सच! क्या तुमने देखा?"

"मैं तो बात भी कर आया।"

राजा न दोनो हाथ जोडकर ईश्वर म प्रार्थना की। वे खिडकी के पास गय और परदा को हटा दिया। पहरेदार अब भी पहरे पर थ। ठीक उसी के नीचे एक काले स चबूतरे पर वे परछाई की तरह घूमते नजर आते थे। चार्ल्स को अपने पैरो के नीचे चोट पडने की आवाज सुनाई दी।

परी न अथस को पहचान लिया था। यह पारथस की सहायता से लट्ठा रखने के लिए दीवार म छेद कर रहा था। इस छेद का सम्बन्ध राजा के कमरे म था। कुदाल लगाकर कमरे के फर्श की ईंटें निकाली जा सकती थी और राजा इस छेद म होकर बाहर निकल सकते थे और पाड के एक कोने म, जहा काला कपडा ढका हुआ था छिप सकते थ। वहा छिप ही छिप मजदूर जैसे कपडे पहनकर व अपने चारो साथियो सहित भाग

सकते थे। पहरेदार बिना सन्देह किये ही उन मजदूरों को चले जाने की आज्ञा दे सकते थे, क्योंकि ये लोग पाड़ बनाने वाले थे। उधर काम भी खत्म होने ही वाला था। उनके भागने की युक्ति सीधी सच्ची और सरल थी। अयस के कामल हाथ पत्थर निकालते निकालते छिल गये थे इसलिए पोरथस इस काम को करने लगा। आटगनन ने फ्रेंच कारीगरों का छद्म वेश बना रखा था। उसने थैले ऐसी तरकीब से लगाए थे कि एक चतुर कारीगर मालूम पड़ता था। अरमिस ने ऐसा लबादा पहन रखा था जो जमीन तक लटकता था। उसकी पीठ पर पाड़ का नक्शा रखा हुआ था।

प्रभात हुआ। सर्दी के दिन थे। कारीगर लोग अपना काम छोड़ छाड़ कर आग जलाकर तापने के लिए वहाँ आ बैठे। केवल अयस और पोरथस ने अपना काम अभी तक नहीं छोड़ा था। सवेरा होने तक उन्होंने सूराख पूरा कर लिया। एक काले कपड़े में राजा के पहनने योग्य कपड़े लपेटकर अयस घुस गया। पोरथस ने उसे कुल्हाड़ी पकड़ा दी और तभी आटगनन ने कीलों में एक कपड़ा टाँग दिया, जिससे सूराख छिप गया।

अयस को सूराख के अंदर जहाँ अभी दूसरी दीवार और पार्टीशन थी तक वहीं जाकर वह राजा के पास तक पहुंच सकता था। इन चारों ने सोचा कि अभी तो सारा दिन पड़ा है, बधिक तो आवेगा ही नहीं चलो ब्रिस्टल में एक साथी और पकड़ लाएं।

आटगनन और पोरथस अपने अपने कपड़े बदलने चले गये और अरमिस पादरी से सहायता प्राप्त करने की आशा से उनके पास चला गया।

नीना ने व्हाइटहॉल के सामने दोपहर को मिलने का निश्चय किया ताकि वे वहाँ की कार्यवाही देख सकें। पाड़ छोड़ने से पहले अरमिस उस सूराख के पास, जहाँ अयस छिपा हुआ था, गया और उससे बोला कि मैं जाता हूँ। एक बार मैं चार्ल्स से मिलने का फिर प्रयत्न करूँगा।

अयस ने कहा— साहस न खोना। राजा से सारा मामला कह सुनाना। उससे कहना कि जब वे अकेले हों तो फर्श पर खटखटा दें ताकि मैं निश्चयपूर्वक अपना काम करता रहूँ। अगर वह चिमनी का पत्थर हटाने में मेरी सहायता करता और भी अच्छा है। यदि कमरे में कोई

पहरेदार हों तो फौरन उसे मार डालो। और जो दो हों तो एक को परी मार डालेगा और एक को तुम मार डालना। पर यदि तीन हों तो चाहे तुम मर भी क्यों न जाओ किसी न किसी प्रकार राजा की रक्षा करना।"

अरमिस ने कहा— मैं दो पहरेदार न आऊँगा। इनमें से एक परी को दूगा।'

हाँ, जब जाओ पर राजा को सावधान कर देना कि खुशी में बहुत फन नहीं। जब तुम लड़ रहे हो और उन्हें मौका मिले तो उनसे कह देना कि वे भाग जाएं। फिर तुम चाहे मरो या जीओ। दस मिनट तो ता सुराख का पता लग ही न सकेगा कि राजा किधर भाग गये। इन दस मिनटों में हम अपने रास्ते लगेंगे और राजा की प्राण रक्षा हो जायगी।'

जैसा तुम कहते हो वह तो होगा ही अथस। लाओ हाथ मिलाओ। शायद अब हम कभी न मिलेंगे।'

अथस ने अपनी बाहें अरमिस के गले में डाल दीं और दोनों बगल-गीर होकर मिले।

उसने कहा— तुम्हारी खातिर अब यदि मैं मर भी जाऊँ तो आर्ट-गनन से कहना कि मैं उसे अपने बच्चे की तरह प्यार करता था। मेरी तरफ से उसे गले लगा लेना। हमारे वीर पारथस को भी गले लगाना।'

अरमिस ने कहा— मन जम राजभक्त शायद संसार में बिरले हों।'

अरेमिस चल दिया और होटल में पहुँचा। वहाँ उसके दोनों साथी आगे के सामने बैठे हुए शराब पी रहे थे और बातें कर रहे थे। पोरथस खाना जाता था और पार्लियामेण्ट वालों की उनकी करतूतों के ऊपर बाम रहा था। आर्टगनन चुपचाप बैठा हुआ कुछ विचार कर रहा था।

अरमिस ने सब हाल कह सुनाया। आर्टगनन ने सिर हिला दिया।

पारथस ने कहा— ठीक है परन्तु राजा के भागने के समय हम वहाँ हाजिर होना चाहिए। पाड़ के नीचे छिपने की अच्छी जगह है। आर्टगनन, मैं ग्रीमाड और मास्कीटन हम सब उनके आठ आदमियों को मार सकते हैं।"

अरमिस ने जल्दी में एक ग्रास खाकर एक गिलास शराब पी और अपने कपड़े बदल दिये।

उसने कहा —"अब मैं पादरी के घर जाता हूँ। हथियारों को सभाल लो। बधिक के ऊपर निगाह रखना आटगनन।"

अरमिस ने आटगनन को गले लगाया और चल दिया। चलकर वह पादरी जुक्सन के घर पहुँचा और अपने आने की खबर दी। पादरी महाशय उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने उसे तुरन्त अन्दर बुला भेजा।

कुछ बातचीत कर चुकने पर वे दोनो गाडी मे बैठकर चल दिए। अभी नौ भी न बजे होगे कि गाडी व्हाइट हाल के सामने पहुँच गई। इस बीच मे कोई विशेष घटना नही हो पाई थी। दो सिपाही तो दरवाजो पर तैनात थे और दो पाड के तख्तो पर इधर-उधर टहल रहे थे।

राजा अरमिस को देखकर प्रसन्न हुए। उन्होने जुक्सन को गले लगा लिया। पादरी जुक्सन ने पहरेदारो से वहा से हट जाने को कहा। सब चले गए।

दरवाजा बन्द होने पर अरमिस ने कहा—"श्रीमान, आप बच गए है। लन्दन का बधिक गायब है। उसके सहायक ने उसकी जाघ तोड दी है। हम पूरा निश्चय है कि बधिक यहा नही है और दूसरा बधिक ब्रिस्टल के सिवा यहा कही आस-पास मिल भी नही सकता। उसे वहा से बुलाने के लिए काफी समय चाहिए। इस हिसाब से कल तक प्रतीक्षा करनी पडेगी।"

राजा ने कहा— लेकिन अथस ?'

'आपसे दो फीट दूर है श्रीमान। लोहे का डण्डा लेकर तीन बार खटखटाइए। देखिए वह आपको इसका उत्तर देता है कि नही।

राजा ने ऐसा ही किया और उत्तर मे तुरन्त ही फर्श के नीचे से खटपट की आवाज सुनाई दी।

राजा ने पूछा — 'क्या वही उत्तर दे रहा है?"

जी हाँ अथस ही रास्ता बना रहा है, जिससे श्रीमान निकल भागेंगे। परी यदि चिमनी के पत्थर को उठा लेगा तो आर-पार रास्ता बन जायगा।

परी ने कहा — 'पर मेरे पास औजार कहाँ है?"

अरेमिस ने कहा— "लो, यह खजर लो पर इसकी धार बिगडने न

पावे, क्योंकि इससे अभी और काम है।"

नीचे अधम अपना काम कर रहा था। उसकी ध्वनि प्रतिक्षण पास आती मालूम होती थी। पर अचानक कुछ शोर सुनाई दिया। अरमिस ने लोहे का डण्डा लेकर खटखटा दिया और अधम को काम बन्द करने का संकेत किया।

शोर बढ़ता ही गया। अब पैरों की आवाज स्पष्ट आने लगी। चारों व्यक्ति चुपचाप खड़े हो गए। उनकी आँखें दरवाजे पर लग रही थीं। दरवाजा धीरे-से खुला।

कुछ पहरेदार एक कतार बाँधे राजा के कमरे में आकर खड़े हो गए। पार्लियामेण्ट का एक कमिश्नर काली वर्दी पहने गम्भीर भाव से अन्दर आया। उसने राजा का अभिवादन किया और चमड़े की थैली को खोल कर एक वाक्य पढ़कर सुना दिया। फाँसी पर मरने के लिए जब कोई जाता है तो उसे इसी प्रकार यह वाक्य सुनाने का नियम है।

अरेमिस ने जुक्सन से पूछा — "इसका क्या अर्थ है ?"

जुक्सन ने संकेत द्वारा उत्तर दिया कि मैं भी नहीं जानता।

राजा ने जुक्सन और अरमिस की ओर देखते देखते पूछा — "तब क्या आज का ही वध निश्चय रहा ?"

कमिश्नर ने कहा — 'क्या आपसे पहले ही नहीं कह दिया गया था श्रीमान, कि आज का ही दिन निश्चय हुआ है।"

राजा ने कहा — 'क्या मैं एक साधारण व्यक्ति की भाँति लन्दन के एक वधिक के हाथों मारा जाऊँगा ?'

'राज्य के वधिक का तो कुछ पता नहीं। पर एक अन्य व्यक्ति ने यह काम अपने हाथ में ले लिया है। वध कुछ समय के लिए रोक दिया है, ताकि आप इहलोक और परलोक का भली भाँति चिन्तन कर लें।

यह सुनकर राजा के रोम रोम में पसीना बहने लगा, और अरमिस का रंग एकदम काला पड़ गया। उसके हृदय की धड़कन मानो बंद हो गई। उसने आँखें बंद कर मेज पर हाथ टेक दिए। उनके इस गहरे दुख को चार्ल्स ने देखा। वह अपना दुख भूल गए और उसे गले लगा लिया।

उन्होंने उत्तम भाव से मुस्कराहट के साथ कहा — धैर्य रखो।

फिर कमिश्नर की ओर मुडकर कहा —"महोदय। मैं तैयार हूँ। दो बाता की मेरी इच्छा है। आपको इसमे कुछ दर न लगेगी। एक तो मै काम्यूनियन का स्वागत करूँ और दूसर अपन बच्चो को गले लगाकर अतिम विदा ल नू। क्या मुझे इनकी आज्ञा मिलगी ?"

"हा श्रीमान।" कमिश्नर यह कहकर चला गया।

राजा न अपन घुटने टेककर कहा—'जुक्सन मरी स्वीकृति सुन लीजिय।"

अरमिस जान लगा, परन्तु राजा ने उसे रोककर कहा— ठहरो परी स्वीकृति तुम भी सुन लो।"

जुक्सन बठ गये और राजा सेवक की भाति अपनी स्वीकृति कहने लग।

स्वीकृति समाप्त कर चुकन पर चार्ल्स अपन बच्चा स मिलन दूसर कमर म चन गय। कुछ दर बाद वे लौट आए।

जनता की भीड इकट्ठी हो चुकी थी, वध का समय ठीक दस बजे रखा गया था। आस पास की गलिया मे भी लोग भर गय थे। राजा उनक शोरगुल को भेदपूर्ण दृष्टि से देखन लगे। वे सोचने लगे, यह भयकर कोलाहल जनता की अपार भीड का है या समुद्र का ? जनता उत्तेजित अवस्था मे और समुद्र अपन तूफान के समय ही एसा कोलाहल करता है।

राजा क चारो ओर सिपाही खडे हुए थ। उन्ह भय हुआ कि कही आहट होत ही अथस अपना काम शुरू न कर दे, इसीलिए वे मूर्तिवत चुप चाप खडे रह।

राजा का अनुमान ठीक था। अथस ठीक उनके नीचे था। राजा ने सुना कि वह मरुत पाने की बाट मे है। कभी-कभी ता वह बचैन होकर पत्थर काटन लगता था। पर कोई सुन न ले, इस भ्रम से तुरत ही बन्द भी कर देता था। दो घण्टे तक यही भयानक क्रम चलता रहा। मृत्यु की निस्तब्धता उस बन्दीगह मे छा गई।

अथस न सोचा, मैं देखू तो, लोगा ने कसा शारगुल मचा रखा है। वह परदा खोलकर पाड की पहली मजिल म उतर आया। यही पाड थी। उस शोरगुल अब और भी जोर जोर से सुनाई दन लगा। वह पाड के

किनारे पहुँचा और काले कपड़े को खोला। उसने देखा कि सिर काटने का यन्त्र तैयार है। उसके पीछे बन्दूकधारी सिपाही हैं।

जथस न भयभीत हो मन ही मन कहा —"यह क्या मामला है?" आदमी बढ़े चले जा रहे हैं, सिपाही हथियारबन्द हैं? और ये दर्शक लोग खिड़की की ओर एकटक क्या देख रहे हैं? मैं डी आटगतन को भी देख रहा हूं, वह क्या घूमता है? हे भगवान क्या वधिक भाग निकला?'

अचानक टान बजा। उसके सिर के ऊपर पैरों की भारी आवाज सुनाई दी। उसे ऐसा लगा जैसे ह्वाइटहाल में कोई जुलूस निकल रहा है। फिर उसने किसी को पाट पर उतरते भी सुना। आशा, भय और विस्मय उसे परेशान कर रहे थे। वह कुछ समझ नहीं सका।

भीड़ की गुनगुनाहट बिलकुल बन्द हो गई थी। सबकी आँखें ह्वाइट हाल की खिड़की की ओर लगी हुई थीं। अधखुले मुख और रह रहकर सांस यह बताती थी कि कुछ अनिष्ट होने वाला है।

लोगों ने देखा कि एक आदमी चला आ रहा है। उसके हाथ में नर घाती कुल्हाड़ी थी। इसी से वह वधिक मालूम पड़ता था। तख्त पर पहुँचकर उसने कुल्हाड़ी रख दी।

वधिक के पीछे शान्त भाव से दो पादरियों के बीच चार्ल्स आए।

वधिक को देखते ही सब लोग सब कुछ समझ गये। सबको यह जानने की उत्सुकता थी कि यह अजनबी वधिक कौन है, जो ठीक मौके पर इस भयानक खून के लिए तैयार हुआ है। लोगों का विचार था कि बात कल के लिए टल गई है। वधिक मँझले कद का था। उसके वस्त्र काले थे। उसकी उमर पक चुकी थी। उसकी पेशानी पर सफेद बाल लटक रहे थे।

राजा की शान्त, सुन्दर और सजी हुई मूर्ति देखकर निस्तब्धता छा गई। लोग उनकी अन्तिम अभिलाषा चाहते थे।

चार्ल्स ने अधिकारी से कहा—"मैं लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ।

उन्हें आज्ञा दे दी गई।

राजा ने कहना शुरू किया। उन्होंने जनता को समझाया कि मेरा

तुम्हारे प्रति कैसा व्यवहार रहा है। उन्होंने उसे इंगलैंड की शुभकामना मनाने की सलाह दी।

वधिक ने कुल्हाड़ी सँभाली परन्तु राजा ने उससे कहा—"कुल्हाड़ी को अभी मत उठाओ।" और फिर कुछ कहने लगे।

प्रथम वे सिर पर जैसे वज्र गिरा। उनके माथे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं। जनता चुप और शान्त थी।

राजा ने दया भाव से भीड़ पर दृष्टि डाली। फिर उन्होंने अपना लिबास उतारा, जिसे वे पहने हुए थे। यह वही हीरे का स्टार था, जिसे रानी ने उनके पास भेजा था। इसे जुक्सन ने साथी पादरी को दे दिया गया। फिर उन्होंने छाती पर लटकता हुआ हार का क्रास निकाला। यह भी रानी ने भेजा था।

उन्होंने पादरी से कहा—"मैं इस क्रास को अंतिम क्षण तक अपने हाथ में रखूंगा। जब मैं मर जाऊँ, तब इसे आप ले लें।"

"जो आज्ञा।" एक आवाज आई जिसे सबने पहचान लिया कि यह जरमिम की है।

चार्ल्स ने अपना टोप उतार लिया। इसके बाद उन्होंने एक एक करके बटन खोल डाले और कोट को भी उतारकर फेंक दिया। सर्दी का समय था, इसलिए उन्होंने अपना ऊनी बनियान पहनने को मांगा जो दे दिया गया। ऐसा प्रतीत होता था कि राजा शैया पर मानो जा रहे हैं।

अन्त में अपने बाल उठाये हुए राजा ने वधिक से कहा—"यदि ये तुम्हारे कार्य में बाधा डालें तो उन्हें बांध सकते हो।" यह कहकर उन्होंने एक दृष्टि उस पर डाली। कैसी चितवन थी, शान्त और सौजन्य से परिपूर्ण!

वधिक आँख से आँख न मिला सका। उसने पीठ फेर ली। जरमिम उसकी ओर ज्वालामय नेत्रों से देख रहा था।

राजा ने जब देखा कि मेरी बात का वधिक कुछ भी उत्तर नहीं देता है, तो उन्होंने फिर दुबारा वही प्रश्न किया।

वधिक ने भर्राई हुई आवाज में कहा—"यदि आप इन्हें गर्दन पर से हटा लें तब भी काम चल जायगा।"

राजा न अपन हाथा स बाला का गदन के दाता ओर इकट्ठा कर लिया और सिर काटन की लकडी दखकर बोले—"यह तो बहुत नीची दीखती है। क्या जरा ऊची न हो सकेगी ?"

"यह ता जसी हानी है वैसा ही है।' बधिक ने कहा।

क्या तुम्ह निश्चय ह कि एक ही चोट स तुम मेरा सिर काट लाग ?'

मुझे ता यही आशा है।

ठीक है। अच्छा जरा सुना ता।"

बधिक राजा की ओर चला और अपनी कुल्हाडी क बल झुक गया।

मैं प्रायना करन को चुकूगा, उसी समय मुझ पर चाट मत करना ?'

'तो मैं कब चोट करूँ ?'

'जब मैं अपना सिर टिकटी पर रख दू और अपन हाथ फला दू और कहूँ— सावधान' मर कहत ही तुम जार स चाट करना।"

बधिक न झुककर स्वीकार किया।

राजा न अपन पास खड़े लोगा स कहा—"ससार-त्याग करने का समय आ गया ह। म तुम्हें मँसदार म छोड देता हूँ और स्वय उस देश मे जाता हूँ जहाँ स फिर काई नही लौटता। विदा।'

उन्हान अरमिस की ओर दखा और सिर हिलाकर एक विशष सकत किया। उन्हान कहा—'अब सब चल जाओ और मुझे प्रायना करने दो।"

बधिक की तरफ मुह करके कहा— 'मै तुमस भी यही विनती करता हूँ। जरा-सी दर की वात है फिर म तुम्हारा ही हो जाऊँगा।'

चार्ल्स झुक गय। श्रास का सकत हुआ। उन्हान तख्त को चूमना चाहा।

उन्हान फ्रेंच भाषा म कहा— अथम ! क्या तुम वहा हो ? मैं बाल सकता हूँ ?

अथम के हृदय को इस आवाज न ठेस पहुँचाई। उसन काँपत हुए कहा—' हा श्रीमान्।"

"दास्त, मैं अब किसी प्रकार भी बच नही सकता। मैंने ऐसे पुण्य ही नही किए थे। मैं इन सबसे बोल चुका हूँ, ईश्वर स भी बोल चुका हूँ, अब अन्त म तुमसे बालता हूँ। एक पवित्र हतु को दृढ रखने के कारण ही मेरे पूवजो की, मर बच्चा की राजगद्दी मुझसे छीनी जा रही है। सोने की एक लाख माहरें चुन्नासिन की छत मे, वहाँ से चलते समय छिपाकर रख दी थी। इस रुपए स तुम मेरे बडे बेटे की व्यवस्था करना। अयस ! अब विदा दो।"

"विदा। बलिदान होन वाले पवित्र राजा, विदा।" अयस ने कापती हुई आवाज म धीरे से कहा।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। फिर राजा न गरजती आवाज मे कहा—"सावधान !"

कठिनता स यह शब्द निकले होंगे कि एक भयानक चोट से पाड हिल गई। नीचे की धूल उडने लगी। तुरन्त ही अयस ने अपना सिर उठाया। खून की गरम बूद उसके मस्तक पर पडी। पर वह अन्दर हो गया। खून की बूदें अब जमीन पर गिर रही थी।

अयस घुटन के बल गिर पडा, और थोडी देर तक पागलो की भाति पडा रहा। कोलाहल कम हो गया था, भीड चली गई थी। अयस फिर उधर चला और अपने रूमाल का छोर मृतक राजा के खून से रग लिया। भीड कम होती जा रही थी। वह नीचे उतरा। कपडे को खोला और दो घोडो के बीच म धीरे-स खिसककर भीड मे मिल गया।

नौ

ई० 1754 म इगलैंड और फ्रास मे राजनैतिक स्थितिया विभिन्न थी। जबकि इगलड सम्पूर्ण रूप से भारत की ओर समय-समय पर उचित सहायता भेजता रहा, तब फ्रास अपने आतरिक झगडो म फँसा रहा। इगलड के राज्य परिवार मे कभी पारिवारिक झगडे उत्पन्न नही हुए,

परन्तु फ्रांस का राज्य-परिवार आन्तरिक झगड़ों में फँसा रहा। त्रिचनापली के युद्ध में हार होने के बाद डूप्ले को फ्रांस बुला लिया गया। फ्रांस और अंग्रेजों ने परस्पर में सन्धि कर ली परन्तु अंग्रेज कब सन्धियों का पालन करते थे।

18वीं शताब्दी के मध्य में फ्रांस का राज्य वंश अपनी भोगलिप्सा में डूबकर राजकोष को ऐश्वर्य और विलासिता में खाली कर रहा था। तत्कालीन फ्रांस का बादशाह लुई पंद्रहवां राजकोष को बिल्कुल समाप्त करके और अपनी अतृप्त भोगलिप्सा को अपने हृदय में लिये सन 1774 में मर गया। उसके बाद लुई सोलहवाँ सिंहासन पर बैठा।

नया बादशाह नवयुवक था और उसकी पत्नी आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी आन्तोनेत बहुत सुन्दरी थी। पति-पत्नी का प्रेम आपस में बँटा हुआ था, परन्तु उन्होंने भी अपने ऐश्वर्य और सुख भोग के लिए राजकोष को अंधाधुंध खर्च किया। प्रतिवर्ष प्रधानमंत्री राजकोष को भरने के लिए उपाय करते परन्तु उनका प्रयत्न सफल नहीं होता था। 12 वर्ष के बाद बादशाह से कह दिया गया कि अब फ्रांस का दिवाला निकलने वाला है। बादशाह ने अमीरों, पादरियों और प्रजा के विशिष्ट व्यक्तियों का साथ लेकर कुछ उपाय करना चाहा परन्तु फ्रांस भर में प्रजा इतनी दुखी और पीड़ित हो चुकी थी कि महान क्रांति का सूत्रपात 1789 में देश भर में हुआ। फ्रांस में तीन राजनैतिक दल बन गये। गिराण्डिस्ट, कार्डिलियर और जकोबिन। तीनों ही दल अपनी महारानी को आस्ट्रिया की राजकुमारी होने के कारण विदेशी समझ उसका तिरस्कार करते रहे और राजवंश का अन्त करने पर तुल गये। राज्यक्रांति हुई। खून बहाया जाने लगा और राज्य-सत्ता राज्यवंश से निकलकर राजनैतिक दलों के हाथों में आती जाती रही। प्रजा के पास खाने को अन्न और पहनने को वस्त्र नहीं बचे थे। चारों ओर अराजकता और खून-खराबी का बोलबाला था।

मेरी आन्तोनेत का शैशव अपनी गरिमामयी माता मेरी थेरेसा की गोद में आमोद प्रमोद में व्यतीत हुआ था। छोटी अवस्था में ही उसका विवाह फ्रांस के राजकुमार लुई 16वें से हो गया था। विवाह के पाँच वर्ष बाद आन्तोनेत को साम्राज्ञी पद प्राप्त हुआ। वह राजसत्ता में दृढ़ आस्था

रखती थी, परन्तु फ्रास की राजनीति क्रान्ति की ओर अग्रसर हो रही थी, और राजसत्ता सकटमय स्थिति मे थी। उसका पति साहसी नही था। आत्वानेत ने अपने पति को अपने आदेशानुसार चलाना चाहा। वह नही चाहती थी कि सम्राट् के अधिकारो मे किसी प्रकार का नियत्रण हो। आत्वानेत के विचार फ्रास की प्रजा का रोष उभारने मे और भी सहायक बने।

फ्रास की आर्थिक स्थिति बहुत दुदशा ग्रस्त थी। सम्राट ने प्रसिद्ध अथशास्त्री तूर्गो के हाथ मे स्थिति सुधार का काय सौंपा था परन्तु साम्राज्ञी के हस्तक्षेप के कारण तूर्गो अधिक समय तक अथसचिव के पद पर न रह सका। आत्वानेत ने सम्राट से कहा कि तुम्हारा काय फ्रास निवासियो से न हो सकेगा—तुम्हे अन्य राष्ट्रो से सहायता लेनी चाहिए।

लुई वार्सेल्स नगर मे रहकर वही से राजकाय की देख रेख करता था। उसके कार्यो से पेरिस की जनता मे असन्तोष पदा हो रहा था और उपद्रव के लक्षण दीखने लगे थे। कुछ ही काल मे राज्य क्रान्ति आरम्भ हो गई। उन्ही दिनो पेरिस को भीषण दुर्भिक्ष का सामना करना पडा। क्रान्तिकारी विचारो के कारण पेरिस की जनता मे जाग्रति हो चुकी थी। उन्हे यह असह्य हो गया कि राजा और रानी तो आनन्द से जीवन बितायें और प्रजा भूखो मरे। भूखे जन-समूह ने वार्सेल्स के राजभवन को घेर लिया। विवश होकर राजा और रानी को पेरिस आना पडा। वहाँ वे राजभवन मे रहने लगे परन्तु उनके कार्यों पर दृष्टि रखी जाने लगी। राजा तो किसी प्रकार उस स्थिति मे रहने को प्रस्तुत था, परन्तु स्वतन्त्रता का अपहरण हो जाने से रानी का उस स्थिति मे रहना बडा कष्टप्रद प्रतीत होने लगा। वह वहाँ से निकल भागने का विचार करने लगी।

इन्ही दिनो फ्रास की राज्य-परिषद मे शासन विधान-सम्बन्धी बहुत से परिवर्तन हो गये थे, जिसके कारण राजसत्ता के समथक बहुत से कुलीन मनुष्य फ्रास की सीमा से बाहर चले गये थे। वे विदेशी राज्यो की सहायता से फ्रास मे राजसत्ता को निरापद करना चाहते थे। साम्राज्ञी गुप्त रीति से उनके कुचक्र मे सम्मिलित थी। उनके परामश और सहायता से उसने राजभवन छोडने का प्रबन्ध कर लिया। एक दिन सुयोग देखकर प्रहरियो

की आग मे धून झाक्कर राजवश ने सीमाप्रान्त की ओर प्रस्थान कर दिया। वहाँ उनकी महायता के लिए एक मनानायक 25000 सनिका के साथ उपस्थित था, परन्तु यह सब क मत्र माग म ही पकडे गय। वनिस गाव क पोस्टमास्टर के पुत्र न उन्ह पहचान लिया। रानी न हाथ जोडे, प्राथना की गिडगिडाइ और रोइ भी, परन्तु उसके आँसुआ का कुछ फल न निकला। सब के सब परिम लाये गय और कडे पहर मे बन्द कर दिये गय। राजा की स्थिति दुभाग्यपूण हो गई। उसकी इच्छा आत्मघात करन का होती थी। दस दिन तक निरन्तर उसने रानी से कोई बात न की। जब रानी से न रहा गया तो वह जाकर पति के चरणा मे गिर पडी आर दोना बच्चो की उसकी गोद म बठाकर कहन लगी—"भाग्य के विरुद्ध युद्ध जारी रखन के लिए हमे धैय धारण करना ही होगा। यदि हमारा अन्त अवश्यभावी है तो हम उसे रोक नही सकत, परन्तु मरन की कला हम अच्छी तरह जानते है। मरना ही है ता शासक की भाति मरें। बिना विरोध किय, बिना प्रतिशोध लिये ही हाथ पर हाथ रखकर बठना उचित नही है। हमे अपने स्वत्व के लिए झगडते रहना चाहिए।"

रानी के हृदय मे वीरता थी। वह झगडना जानती थी, परन्तु शासन करना उसे आता न था।

राजवश के परिस-परित्याग स पूव बहुत से मनुष्य राजा क पक्ष म थे, परन्तु उनके इस प्रकार जाने से उनका पक्ष निबल हो गया। जनता सम्राट को पदच्युत करन की बात साचन लगी। राज्य परिषद ने राजा के बहुत से अधिकार छीन लिए। उधर आस्ट्रिया और प्रशा के राजाआ न फ्रास के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। लाग और भी जल उठे। राजा के आदर-सूचक चिह्न बन्द कर दिय गय। वह एक साधारण मनुष्य के समान हो गया। प्रजा के प्रति राजा की शुभेच्छाओ के विषय म कितन ही मनुष्य अब भी विश्वास करते थे, परन्तु आत्वानेव के कारण वह कुछ काय नही कर मकता था। पत्नी क विरुद्ध काय करन का उम माहम न था। प्रजा का दृष्टि मे साम्रानी अवगुण, स्वेच्छाचार और विश्वासघात की सजीव प्रतिमूर्ति थी। नगर की स्त्रिया तक उसस घणा करती थी।

जब कभी वह राजभवन की खिडकी स बाहर झाकती तो लोग

उसका तिरस्कार करने लगते थे। उसके लिए अपशब्द कहने लगते थे।
एक दिन एक मनुष्य अपने भाले की नोक रानी को दिखाकर कहने लगा
—'मेरे जीवन में वह दिन शुभ होगा, जब तुम्हारा सिर इस भाले की
नोक पर लटकता देख सकूंगा।"

साम्राज्ञी के लिए बाहर की ओर देखना भी अपराध हो गया था।

फ्रांस की परिषद ने धर्मगुरुओं के विरुद्ध एक कानून बनाया। राजा
की इसमें सम्मति नहीं थी। रानी के परामर्श से उसने मन्त्रिमंडल को
विघटित कर दिया। पेरिस की जनता उत्तेजित हो गई। कुछ वक्ताओं
के कहने से उसने राजभवन पर आक्रमण किया।

उपद्रवी पांच घण्टों तक राजदम्पति का तिरस्कार करते रहे। बहुत-
सी स्त्रियाँ साम्राज्ञी के कमरे में घुस गईं और उसको नाना प्रकार से कष्ट
देने लगीं। एक सुन्दरी युवती ने रानी के प्रति कुछ अपशब्द कहे। रानी से
चुप न रहा गया। उसने उस युवती से कहा—'तुम मुझसे क्यों घृणा
करती हो, क्या मैंने अनजान में तुम्हारा कोई नुकसान या अपराध किया
है?"

युवती ने उत्तर दिया—"मेरी तो कोई हानि तुमने नहीं की, परन्तु
देश की दुर्दशा तुम्हारे ही कारण हुई है।'

रानी ने कहा—"अभागिनी! तुमको किसी ने मेरे विपरीत बहका
दिया है। लोगों के जीवन को दुखमय बनाने से मुझे क्या लाभ है? मैं लौटकर
अपने देश को नहीं जा सकती, यहाँ रहकर ही मैं सुखी या दुखी रह सकती
हूँ। जब तुम लोग मुझसे प्रेम करते थे मैं परम सुखी थी।'

युवती ने क्षमा मांगी, उसने कहा—"मैं तुम्हें नहीं जानती थी, परन्तु
आज मालूम हुआ कि तुम उतनी बुरी नहीं हो जितनी बुरी तुम्हें बतलाया
जाता है।"

उपद्रवियों के चले जाने पर रानी राजा के चरणों पर गिर पड़ी और
उसके घुटने पकड़कर घण्टों रोती रही।

राजा ने कहा—"आह! मैं तुम्हें यह दिन दिखाने के लिए तुम्हारे
देश से क्यों लिवा लाया?"

इस घटना के बाद राष्ट्रीय संरक्षक दल के सेनानायक ने अपनी

सहायता स उनको वह स्थान छोड़न का परामर्श दिया, परन्तु राजा वहाँ से जान को सहमत न हुआ। उसको विदेशी राष्ट्रों की सेनाओं का भरोसा था। राजा के प्रति जनता का श्रद्धा नित्य कम होती गई। उन्हें यह विश्वास हो गया कि राजा और रानी दोनो देशहित म बाधक हैं।

एक व्यक्ति न तो परिषद में कह दिया— "राजभवन ही सब अनर्थो का मूल है। उसका अन्त जल्द होना चाहिए।'

इसी बीच मे ब्रसविक के ड्यूक न फ्रांसीसियों को राजा के सम्मुख आत्मसमर्पण करन की धमकी दी। लोग भड़क गए। उन्होंन राजमहल पर आक्रमण कर दिया। राजवंश का जीवन बड़े संकट म था।

विद्रोही चिल्ला चिल्लाकर कहत थे—"बढे चलो, राजा रानी और उनके बच्चो का सिर काटकर भालो की नोक पर लटका दो, राजवंश का एक भी प्राणी जीता न बचने पाव।"

विद्रोहियो ने राजमहल के रक्षको को मार गिराया। रानी की दशा बड़ी खराब थी। एक ओर उसको पति और बालकों की चिंता थी, दूसरी ओर अपनी मृत्यु का भय। परन्तु उस समय भी उसम कुछ साहस मौजूद था। उसने राजा स कहा— 'मरने मारने का यही अवसर है तुम्हारे अधिकार म जो थोडी सी सेना है उसकी सहायता स विद्रोहियों को क्या नही भगा देत?

परन्तु उस समय ऐसा करना अपनी मृत्यु को समीप बुलाना था। राजा न रानी की बात पर ध्यान नही दिया। उन दोनो न समीपस्थ, परिषद भवन म जाकर अपन प्राण बचाए। उसी दिन सम्राट लुई पदच्युत कर दिया गया और राजवंश को पेरिस के टेम्पिल-कारागार मे रहने की आज्ञा हुई।

राजा रानी, दोनो बालक और राजा की बहन उस कारागार म रहन लग। इस बन्दी-जीवन मे पति के साथ रहन म रानी को विशेष दु ख नही हुआ पर दो ही दिन म राज परिवार के सब नौकर वहा स हटा दिए गए। जेल के कर्मचारियो का व्यवहार बड़ा कठोर और रूखा था। कुछ दिनो बाद रानी को राजसत्ता का अन्त होन की सूचना मिली, उसी दिन उससे राज्य सम्बन्धी वस्त्र आभूषणादि सब छीन लिए गए। उनके पहनन के

लिए वस्त्र तक का कुछ प्रबन्ध न किया गया। राजमहिषी प्रजा और बालकों के फटे कपड़ों को सीकर काम चलाने लगीं। रानी का जीवन बड़ा दुखपूर्ण हो गया। कहां एक राजमहिषी और कहाँ एक बन्दिनी। एक मास बाद लुई को वहां से हटाकर रानी से पृथक् रखा गया। रानी का अब अपना जीवन सचमुच बड़ा भार रूप प्रतीत होने लगा। वह दिन-भर उदास रहती और दोनों बच्चों को गले लगाकर रोया करती। परन्तु अपनी ननद एलिजाबेथ की सान्त्वना से उसका दुख कुछ कम हो जाता। अपने भाई और भावज को सुखी रखने के लिए एलिजाबेथ ने अपने सुख को ठुकरा दिया था। उसे अपने शरीर और आराम की जरा भी परवाह नहीं थी।

मुसीबत का पहाड़ एक साथ ही टूटता है। कुछ ही दिनों में शासन की आज्ञा से राजकुमार को भी रानी की गोद से छीन लिया गया। उसको राजा के पास रहने की आज्ञा हुई। शासकगण समझते थे कि रानी इस राजकुमार को भी क्रान्ति का शत्रु बना देगी। हृदय पर पत्थर रखकर रानी ने यह भी दुख सहा। इन प्राणियों को केवल भोजन के समय एकत्रित होने की आज्ञा मिल गई थी, परन्तु उनकी चौकसी पूरी पूरी होती थी। उनकी रोटियां तक को देखा जाता था कि कहीं इसमें कोई षड्यन्त्र तो नहीं भरा है। वे लोग धीरे धीरे बात नहीं कर सकते थे फ्रेंच के अतिरिक्त दूसरी भाषा में बोलना भी उनके लिए निषिद्ध था।

इसी बीच में राजभवन की खोज होने पर वहाँ कुछ ऐसे गुप्त कागज-पत्र मिले जिनसे राजा का विदेशी राजाओं और सरदारों से षड्यन्त्र करना सिद्ध होता था। परिषद ने लुई पर देश के प्रति विश्वासघात का दोष लगाया। राजा पर अभियोग चलाया गया। 11 दिसम्बर, 1792 को दोषी पाकर उसको मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी गई।

रानी यह समाचार सुनते ही लुई के समीप गई। आधे घण्टे तक सभी प्राणी चुप बैठे रहे, परन्तु उसके बाद रानी के आंसुओं और सिसकियों ने शान्ति भंग कर दी। रानी ने अपने आंसुओं से राजा के चरणों को तर कर दिया। दो घण्टे तक समस्त राज-परिवार अपने सुख दुख की बातें करता रहा। रानी ने पति के जीवन की उस अन्तिम रात्रि में पति के साथ

रहन की इच्छा की, परन्तु लुई सहमत नही हुआ। वह नहीं चाहता था कि मत्यु क समय उनक मन म किसी प्रकार का माह अथवा विकार उत्पन्न हो। अगले दिन प्रात वान मिलन का वचन देकर उन मववा विदा किया।

रात्रि भर उसके हृदय मे भावा का तुमुल मग्राम हाता रहा। उसन मारी रात जागकर बिता दी। दूमरे दिन बिना मिल ही, बिना कुछ कहे-मुन ही राजा उस स्थान स चला गया। वह जानता था कि अन्तिम विदाई क दृश्य की चोट को रानी सहन न कर सकेगी। अतिम ममय पति से भेंट न हो, इसस बढकर दुर्भाग्य पत्नी का और क्या हो सकता है? रानी का व्यवहार चाहे जसा रहा हो, वह लुई को हृदय म चाहती थी। उमके लिए उमका पति परमेश्वर के समान था। रानी न पति की मत्यु का ममाचार सुना तो मूर्च्छित हो गई। चेतना लौटन पर वह उन्मादिनी क ममान वकझक करने लगी। परतु ननद की सेवा शुश्रूषा से उसकी दशा शीघ्र ही ठीक हो गइ।

दस

जिस समय देहली के तख्त पर मुज्जिमशाह आसीन था, उस समय अफगानिस्तान के तीरा शहर का निवामी दाऊदखाँ भाग्य अजमाने भारत आया। दाऊदखाँ पठान था और उसमे वीरता की भावनाएँ उठ रही थी। उस समय उत्तर भारत मे कटहर प्रदश (अवध क उत्तर और गगा के पूव हिमालय की तराई मे रामपुर, मुरादाबाद, बरली और बिजनौर का मम्मिलित हरा भरा सुहावना प्रदेश) छोटे छाट ताल्लुका म बँटा हुआ था। ताल्लुकेदार राजपूत और ठाकुर थे जा परस्पर ईर्ष्या द्वेष तथा शक्ति सतुलन के लिए परस्पर मे लडते रहत थे। अपनी ओर म लडान के लिए वे कुछ अन्य वीर योद्धाओ को भी पारिश्रमिक देकर सहायता प्राप्त करते थे। दाऊदखा ने अपने कुछ वीर पठानो का सगठन करके एक याद्धादल बनाकर उन ताल्लुकेदारा की आपस की लडाई म उनका साथ देकर युद्ध

किया, जिससे उसकी वीरता की प्रसिद्धि हुई। वह जिस तालुकेदार की ओर से लड़ता, उसी की विजय होती थी। विजय होने पर उसे खूब रुपया मिलता था। एक बार बरेली के पास बाकौली गाव म दो जमींदारों म भयकर लड़ाई हुई। बाकौली गाव सैयदा का था। सयद जमकर लड़े, परन्तु अन्त में सब मारे गए। दाऊदखाँ ने इस लड़ाई म दूसर जमीदार का पक्ष लेकर युद्ध किया था। लड़ाई जीतकर जब उसने बाकौली गाव म प्रवेश किया तो उसे एक सून घर मे एक छ वर्ष का सुन्दर और तेजस्वी बालक एक कोने मे बैठा हुआ मिला। दाऊदखाँ ने बालक को अपनी गोद मे लेकर पूछा—"क्या तुम अकेले बच हो ?"

"हाँ।'

"तुम्हारा नाम ?"

"मोहम्मद अली।"

"तुम्हारे वालिद का ?"

'दिलदार अली।"

"अब वह कहाँ है ?"

"शायद लड़ाई मे मारे गए।'

"घर के और लोग ?'

"सब भाग गए।'

'क्या तुम मेरे साथ चलोगे ?"

बालक ने यह प्रश्न सुनते ही दाऊदखा के मुह की ओर देखा। उस समय उसमे वात्सल्य और प्रेम झलक रहा था। बालक ने कहा — तुम मुझे मारोगे तो नही ?"

"नहीं बेटे, मैं तुम्हें अपना बहादुर बेटा बनाऊँगा।'

दाऊदखाँ ने उसे अपने साथ ले लिया और दत्तक पुत्र बनाकर पालन-पोषण किया। उसका नया नाम रखा अली मोहम्मद खाँ। उसके पढ़ने-लिखने तथा युद्ध शिक्षा की उचित व्यवस्था की। युवा होने पर अली मोहम्मद खा दाऊदखा की भाँति साहसी और वीर योद्धा बना।

कुछ समय बाद दाऊदखाँ कुमायू के राजा के साथ हुए युद्ध म मारा गया। उसकी फौज ने अली मोहम्मद खाँ को अपना सरदार स्वीकार

किया। अली मोहम्मद खा ने अपनी फौज म और भी वृद्धि की तथा अपने पिता की मत्यु का बदला लेने के लिए कुमायू के राजा पर आक्रमण किया। कुमायू के राजा ने उसका सामना करने म असमथ समझ उसम सधि कर ली।

इससे अली मोहम्मद खा का साहस बढ गया। अत उसने कटहर प्रान्त के छोटे-छोटे जमीदारो से युद्ध करके उनकी जमीदारी छीन छीन-कर अपने अधिकार म करनी आरम्भ की। धीरे धीरे उसने सारा ही कटहर प्रात अपने प्रात म कर लिया। यही प्रात रुहेलखड कहलाने लगा।

इस समय दिल्ली के तख्त पर मोहम्मदशाह रंगीला आसीन था। बादशाह ने अली मोहम्मद को काम का आदमी समझकर एक शाही फरमान भेजा जिसम उसे खिदवी खास लिखा और कहा कि वह जाकर मुजफ्फरनगर के बारा गाव मे निजामुलमुल्क आसिफजाँ की उसके प्रति-द्वन्द्वी जमीदार सफुलदीन अली खा के विरुद्ध सहायता करे। अली मोहम्मद खा ने बादशाह का यह हुक्म तुरत पालन किया और आसिफखाँ की विजय कराकर लौट आया। बादशाह ने उसे पाँच हजारी मनसब, माहीमरातिब नौबतनिशाँ, चवर और नक्कारखाना की उपाधियाँ देकर रुहेलखड की सूबेदारी दी।

रुहेलखण्ड म उसे शासन करते थोडा ही समय हुआ था कि अली मोहम्मद खाँ की कुछ सख्तिया के जुल्म म तग होकर वहा के जमीदारो ने दिल्ली के बादशाह म उसकी शिकायत की। बादशाह ने राजा हरनन्द को पचास हजार सेना देकर अली मोहम्मद खाँ को कद करने के लिए भेजा। मुरादाबाद पहुँचकर हरनन्द ने बरेली और शाहबाद के शासक अब्दुलनबीखाँ को शाही सना म आ मिलने का हुक्म दिया। अब्दुलनबीखाँ अली मुहम्मद खाँ के साथ युद्ध नही करना चाहता था। उसने बहाना बनाकर अपने भाई दिलेर खाँ को राजा हरनन्द के पास भेज दिया। अली मोहम्मद राजा हरनन्द का आगमन सुन 12 हजार योद्धाओ को लेकर मुरादाबाद की ओर बढा। दोनो ओर जोर गाँगा के पास दोनो ओर की सेनाओ का आमना सामना हुआ। पहले ही दिन भयानक युद्ध हुआ जिसम

राजा हरनन्द, उसका पुत्र मोतीलाल और दिलेरखा मारे गए तथा अधिकाश सेना युद्ध मे कट मरी। अन्तत अब्दुलनबीखा अपने भाई दिलेर खाँ की मत्यु का बदला लेने के लिए क्रोध मे भरकर युद्ध-क्षेत्र मे आया। उसने अपने साथ चुने हुए 500 योद्धा लिए थे परन्तु युद्ध-क्षेत्र मे पहुँचते-पहुँचते उसके अधिकाश योद्धा बहाना बनाकर भाग मे ही उसका साथ छोडते गए। जिस समय वह युद्ध भूमि मे पहुँचा तब कठिनाई से सौ योद्धा भी उसके साथ न थे। अली मोहम्मद की सेना राजा हरनन्द के खेमा को लूट रही थी और वह किसी सरदार से बातें कर रहा था। अब्दुलनबीखा अकस्मात् उन पर टूट पडा और शत्रु के बहुत से सैनिक शीघ्रता से काट डाल गए। अली मोहम्मद ने अपनी सेना की तुरन्त व्यवस्था की और अब्दुलनबी से डटकर मुकाबला किया। अन्त मे अब्दुलनबी भी मारा गया। अली मोहम्मद विजय दुन्दुभी बजाता हुआ लौट गया। उसने अपने राज्य का विस्तार किया। उसकी सेना मे एक लाख सनिक थे। खजाने मे तीन करोड चार लाख रुपये और एक करोड सोलह लाख सात की मोहरें थी। उसके पाच बेटे थे। वे सब रुहेले प्रसिद्ध हुए। तीस वर्ष नवाबी करके कुछ महीने बीमार रहकर उसकी मृत्यु हो गई।

अवध के नवाब बहुत दिनो से रुहेलखण्ड को हथियाना चाहते थे, मगर जब कभी सब रुहेल-सरदार मिलकर युद्ध का डका बजाते थे, तब उनकी सख्या अस्सी हजार पहुँचती थी। इसके सिवा वे वीर भी थे अत नवाब को उन्हे छेडने का साहस न होता था। जब नवाब शुजाउद्दौला ने अग्रेजो की धनलिप्सा को देखा, तो उसने वारेन हस्टिग्स को लिखकर अग्रेजी सेना की मदद मागी। दोनो ने सलाह कर ली, और चालीस लाख रुपये और सेना का कुल खर्चा देना स्वीकार करके अग्रेजो ने भाडे पर रुहेलो के विरुद्ध अपनी सेना देना स्वीकार कर लिया। रुहेलो से अग्रेजो का कोई मतलब न था, न कुछ टण्टा था, इसके सिवा वे अन्य सूबेदारो की तरह बादशाह के अधिकार प्राप्त सूबेदार थे।

हेस्टिग्स ने कर्नल चैम्पियन की अधीनता मे तीन ब्रिगेड अग्रेजी सेना और चार हजार कडाबीनी रवाने किए। रुहेलो ने प्रथम तो बहुत-कुछ लिखा-पढी की, पर अन्त मे हारकर युद्ध की तैयारियाँ की, और हाफिज

ग्यारह

फ्रास क एक नगर मे एक मध्यम श्रेणी के जौहरी परिवार मे एक प्रतिभाशाली बालिका ने ज म लिया। बालिका के पिता एक महत्त्वाकाक्षी उद्योगी पुरुष थे और थोडी पूजी से ही अपनी उ नति करत जात थे। इन्ही पिता की देखरेख मे बालिका का शैशव काल बीता। पिता न पुत्री को उच्च से उच्च शिक्षा देने का प्रब ध कर दिया। उनके और कोई सन्तति नही थी, अतएव मा ने भी अपना सारा स्नेह बालिका के लालन पालन मे ही लगा दिया था पर तु अपने प्रेम के कारण क या की शिक्षा म उसने किसी प्रकार की त्रुटि न आने दी। उसन स्वय बालिका को वीरता और धय क भावा म बचपन ही मे परिपक्व कर दिया। शैशव काल मे ही बालिका मे भावी उ नति के अकुर प्रस्फुटित होन लग थे। अध्ययन की आर उसकी विशेष रुचि थी। अवकाश मिलने पर भी वह अपनी हम-जोलियो म जाकर खेलकूद न करती, वरन एकान्त मे बैठकर गम्भीरता-पूवक प्रत्यक बात पर विचार किया करती थी। किसी एक वस्तु की जानकारी म सन्तुष्ट होकर बैठ रहना उसके लिए कठिन था। उसका अध्ययन क्षेत्र विस्तत था। यौवन के आगम-काल मे ही उसको धम, इतिहास, दशन, सगीत, चित्रकारी, नत्य, विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि का ज्ञान हो गया था। दूसरे देशा की भापाआ को भी वह बडी रुचि स पढती थी। रूसो, वोल्टेयर, मोटिस्क्यू प्लूटाक जैसे प्रसिद्ध लेखको की पुस्तकें बडे ध्यान म पढती थी। उसने अपने पिता का व्यवसाय भी सीख लिया। मूर्तिया म खुदाई का काम करके वह उ ह अपने बाबा और दादी को दिया करती थी। वे दोनो वद्ध प्राणी पौत्री की उन्नति को देखकर फूले न समात थ और उम बढावा देने के लिए आभूपण दिया करत थे। घर का काम करत म भी उसे किसी प्रकार की हिचकिचाहट नही थी। बाजार से सौदा मोल ले आना, चौके मे बैठकर शाक-भाजी तैयार करना, मा की सहायता करना तो उसके नित्य के काम हो गए थे। सलग्नता और

परिश्रम का उसके जीवन पर बडा गहरा प्रभाव पडा।

उन विलासिता म बडी घणा थी। दूसर का मवस्व अपहरण करके जो लोग आनन्द करत थ, उनका देखकर उसका तन जल उठता था। वह एक बार अपनी दादी क साथ किसी कुलीन मनुष्य के घर गई। वहा का अपमान व्यवहार दखकर उसके हृदय को बडी ठेस लगी। बात-बात मे निम्न श्रेणी के मनुष्यो के प्रति कुलीना की उपक्षा का भाव उसन दखा। एक दूसरे अवसर पर उसको एक बार वार्सेल्स के राजभवन मे रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ परन्तु वहाँ के अपव्यय और विलासिता को दखकर उसे बडा दुख हुआ। वह जानती थी कि उनने इस ऐश्वय विलास म निधन मनुष्यो की आह भरी हुई है। उसका वहाँ रहना भार मालूम पडा, वहाँ स लौटन पर ही उसके हृदय का शान्ति मिली।

युवा होन पर उसके विवाह की चर्चा होन लगी। उसका पिता किसी सम्पन्न व्यापारी के साथ अपनी पुत्री का विवाह करना चाहता था परन्तु पिता के विचार स वह सहमत न थी। व्यापार म उसको घणा थी। वह व्यापार को लोभ का साधन समझती थी। उसको एसे पति की चाह थी, जिसके साथ उसके भावो और विचारो का साम्य हो सके। उसको एश्वय की चाह न थी वह आत्मा के साथ अपना बन्धन करना चाहती थी। जब उसके एक पडोसी धनी कसाई ने उसके साथ विवाह का प्रस्ताव किया तो उसन स्पष्ट शब्दो मे अपन पिता से कह दिया - 'मैं अपने विचार का नही बदल सकती। ऐसे मनुष्य से विवाह करन की अपेक्षा जीवन-भर अविवाहित रहकर कुमारी रहना मुझे अधिक पसन्द है।'

पिता ने बहुत समझाया धन का प्रलोभन दिखाया, परन्तु उसका कोई असर न हुआ।

कुछ समय के बाद उसका रोलाँ नामक एक व्यक्ति से परिचय हुआ। उसने रोलाँ मे अपने विचारो के अनुरूप पति के सभी लक्षण देखे। उसने उसके साथ विवाह करने का निश्चय किया, परन्तु पिता न इस विवाह मे सम्मति न दी। रोला की अवस्था उस समय लगभग पचास वष थी, उसका अधिकाश जीवन कठोर तपस्या म बीता था। ऐसे मनुष्य के हाथ मे अपनी कन्या को अपण करना उसने महान पातक समझा। कन्या को

बटा दुख हुआ। उसने घर-बार सब छोड दिया और एक देव-मन्दिर म जाकर तपस्वियो के समान जीवन बिताने लगी। अन्त म उसके विचारो की विजय हुई। छ मास बाद दोनो का विवाह हो गया। अवस्था भेद के कारण पत्नी अपने पति की शिष्या के समान जान पडती थी परन्तु मादाम रोलाँ को इस विवाह मे बडी प्रसन्नता थी। उनकी दृष्टि म विवाह नैसर्गिक और पवित्र बधन था, जहा दो आत्माओ का मिलन होता है।

विवाह के बाद मादाम रोला अपने पति के साथ एमिन्स नगर मे रहने लगी। पति की सेवा शुश्रूषा मे ही उसका सारा समय बीतता था। वह अपने पति का बडा सम्मान करती थी। वह स्वय ही उसको पौष्टिक भोजन बनाकर खिलाया करती। विवाह के दो वर्ष बाद उनके यहा एक पुत्री का जन्म हुआ। कुछ वष उपरान्त दोनों अपने गाव लियोन्स म रहने लगा। वहा पर मादाम रोलाँ ने आसपास के ग्रामीण कृषको से परिचय किया। समय समय पर वह उनकी सहायता भी करती थी और उनके घर जाकर स्वय औषधि का प्रबन्ध कर आती। पिता के घर पर औषधि-सम्बन्धी कुछ ज्ञान उसने प्राप्त कर लिया था। दूर दूर के गावा म लोग रोगी को औषधि कराने उनको लिवा ले जाते। रविवार के दिन बहुत स किसान अपनी अपनी तुच्छ भेंट देने के लिए उसके घर आते थे। इन भोले-भाले किसाना की सादगी और पवित्रता पर वह मुग्ध हो गई थी।

उन्ही दिना फ्रास मे राज्य क्रांति आरम्भ हो गई। पेरिस की घटनाओ के समाचार मादाम रोला के कानो म पडे। उसे विश्वास हो गया कि इस क्रांति से मनुष्य समाज का उद्धार होगा श्रमिक लोगा के दुख दूर होग और एक नवीन युग का आरम्भ होगा। मादाम रोलाँ के हृदय म अग्नि प्रज्वलित हो गई। अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए वह भी उद्यत हो उठी। उसने पति से अपने विचार कहे। दोना के समान विचार थे। एक बार रोला नगर-समिति की ओर से परिषद मे उपस्थित होने के लिए पेरिस गया। साथ मे उसकी पत्नी भी थी। पेरिस म बहुत शीघ्र अनेक मनुष्य मादाम रोलाँ के अनुयायी हो गये। ब्रिसो, पितियन, बूजो और रोब्सपीयर का उस समय बडा जोर था। ये सब मादाम रोलाँ के स्थान

पर इकट्ठे हो होकर राज्य की स्थिति पर विचार किया करते थे। ये लोग फ्रांस में प्रजातन्त्र शासन विधान स्थापित करना चाहते थे। इन लोगों ने समय पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करना निश्चय कर लिया। इस निश्चय पर अन्य सब मनुष्य तो दृढ़ न रह, परन्तु मादाम रोला ने अपनी बात का पालन किया। एक बार जब रोबसपीयर का जीवन संकट में पड़ गया तो मादाम रोला ने ही अपने यहाँ आश्रय देकर उसको बचाया था। कार्य की समाप्ति पर दोनों पति-पत्नी लियोंस लौट आए परन्तु मादाम रोलाँ वहाँ न रह सकी। वहाँ रहकर वह देश हित के कार्य में योग नहीं दे सकती थी। खूब सोच विचार के बाद दिसम्बर मास में दोनों पति पत्नी फिर पेरिस लौट आए।

इस बार मादाम रोला ने बड़े उत्साह से कार्य आरम्भ किया। उसका सब समय राजनैतिक कार्यक्रम की पूर्ति में बीतने लगा। फ्रांस में प्रजातन्त्र शासन विधान प्रचलित करना ही उसका उद्देश्य था। उसने अपने विचार उस समय के प्रमुख और प्रसिद्ध मनुष्यों पर प्रकट किये। उनके नेत्रों में आकर्षण था और वाणी में माधुर्य। उसके तेजस्वी मुख को देखकर किसी को भी उसका विरोध करने का साहस न होता था। कुछ ही समय में उसने अपने अनेक अनुयायी बना लिये। इसी समय गिरोण्डिस्ट दल ने शासन सूत्र अपने हाथ में कर लिया और रोला की अध्यक्षता में मन्त्रि-मण्डल का निर्माण किया।

रोला को राज्य मन्त्री के कार्यों में अपनी पत्नी से बड़ी सहायता मिलती थी। जिन गुत्थियों को सुलझाने में उनकी बुद्धि चकरा जाती, उन सबको मादाम रोला शीघ्र ही ठीक कर दिया करती थी। वह मनुष्य की परख बड़ी जल्दी कर लेती थी। कई बार उसने अपने पति को अपने सहकारियों से सचेत रहने के लिए कहा था।

दुमरा नामक व्यक्ति को देखकर उसने अपने पति से कहा—"इस मनुष्य पर अपनी दृष्टि रखना यह बड़ा भयंकर आदमी है। समय आने पर यह आपको मन्त्रिमंडल से बाहर निकाल देगा।"

रोलाँ की लापरवाही से भविष्य में ऐसा ही हुआ, परन्तु मादाम रोला के कारण गिरोण्डिस्ट दल परिषद में अपना पैर जमाए रहा। नित्य प्रति

उमके स्थान पर इन लागा की बैठक हुआ करती, कायक्रम, साधन आदि पर विचार होता। इन बैठको का प्राण मादाम रोलाँ ही थी। लोगो को नई-नई बातें सुनाना ही उसका काम था। उसकी अलौकिक बुद्धि और प्रख प्रतिभा को दखकर सब चकित होत थे।

परन्तु कुछ मनुष्य उसके विरुद्ध भी काय कर रह थे। उसम एक रोमपीयर भी था। सिद्धान्त के नाम पर वह गिराण्डिस्ट दल स अलग हो गया था। जब सम्राट लुई 16वें के अपराध पर परिषद मे विचार हो रहा था, उस समय रोमपीयर क कुछ साथिया न मादाम रोला पर यह दाप लगाया था कि राजा का बचान वालो मे मादाम रोला भी शामिल है। उस समय मादाम राला न स्वय सफाई पश करके अपनी निर्दोषता सिद्ध का थी, परन्तु गिराण्डिस्ट दल की नीति के असफल होने स मादाम राला का प्रभाव कम होना गया। जून, सन 1793 मे गिरोण्डिस्ट के हाथ स शासन-सूत्र छीन लिया गया।

गिरोण्डिस्ट दल के छिन-भिन होन के पश्चात रोलाँ राजनीति क्षेत्र म अलग हो गया। विराधिया न अपन भाषणा द्वारा जनता की दष्टि मे दोना पति-पत्निया को गिरा दिया था। इस अपयश के कारण परिस मे रहना मादाम रोलाँ क लिए कठिन हो गया। पति और पुत्री को लेकर उसन घर लौट जान का विचार किया, परन्तु घटना चक्र मे फस जाने के कारण वह परिस नगर को न छोड सकी।

इस बीच म क्रातिकारी यायालय न रोला का दोषी ठहराकर उस पर अभियाग चलाना निश्चित किया। गिरफ्तारी का वारण्ट लेकर कुछ कम चारी उसक मकान पर पहुँचे। उसन आत्म-समपण करने से इकार कर दिया। भावी अनथ की आशका से मादाम रोला को बडा कष्ट हुआ। उसन पति के छुटकार क लिए परिषद् के नाम एक प्राथना पत्र भेजा और स्वय जाकर अध्यक्ष से मिली। परिषद् मे बोलने के लिए उसन अध्यक्ष से आज्ञा माँगी। परन्तु वहा अधिकाश मनुष्य गिरोण्डिस्ट दल से जले भुने बठे थ, अतएव अध्यक्ष न रोलाँ को चुप रहन का आदेश किया।

घर लौटकर रोला अपन पति से मिली। उस समय उस पर से अभियाग हटा लिया गया था। उसी दिन रोला ने पेरिस नगर के बाहर एक

दूसरी जगह आश्रय लिया, परन्तु उसकी पत्नी वहा स न गई। सायकाल परिषद-भवन के समीप मादाम रोला ने कुछ मनुष्या के मुख से सुना कि गिरोण्डिस्ट दल के बाईस मनुष्य शीघ्र ही गिरफ्तार किए जाएँगे, उनम वह भी शामिल थी। वह खिन्न मन स घर लौट आइ। उसन अपनी सोई हुई पुत्री को छाती से लगाकर बार बार चूमा। मृत्यु से उसको किसी प्रकार भय न था। मृत्यु को वह चिर शाति का आश्रय समझती थी, परन्तु इस बालिका का मोह उसको सता रहा था। उसने अपने एक मित्र क यहा उसको छोडने का विचार किया। एक पत्र अपने पति के नाम लिखकर वह सो रही, परन्तु थोडी देर मे द्वार तोडकर कुछ पुलिस कमचारी उसके घर मे घुस आए। उन्होंने उसको गिरफ्तार कर लिया। मादाम रोला को अपन पति के सुरक्षित होने से बडी प्रसन्नता हुई। अपने भत्य को कन्या के सम्बन्ध म कुछ बाता का आदेश देकर मादाम रोलाँ कमचारी क साथ हो ली।

एक कमचारी ने उससे पूछा "क्या गाडी की खिडकिया बन्द कर दू?"

उसन कहा "कदापि नही, मैंने कोई अपराध नही किया है, मुझे कोई लज्जा नही जो अपना मुँह ढाकती फिरूँ।"

कमचारी ने उससे फिर कहा—"आप मे मनुष्यो से अधिक साहस है, आप शाति और धय से न्याय की प्रतीक्षा कीजिए।"

रोलाँ हँसी और कहने लगी—"न्याय ! न्याय होता तो मैं आज यहाँ न होती। मैं निभय चित्त से फाँसी के तख्त पर चढूगी। मुझे अब जीवन से घृणा हो गई है।'

गाडी कारागार के समीप खडी हो गई। मादाम रोला को एक कोठरी मे बन्द कर दिया गया।

परन्तु कारागार मे भी कमचारियो ने उसके लिए बहुत सी बाता की सुविधा कर दी। फल, फूल, पुस्तक, कलम, दवात, कागज, सभी चीजें उसे उपलब्ध थी। कुछ खास मनुष्य उसस मिलने के लिए आते थे। कारागार मे मादाम रोलाँ ने अपनी आत्मकथा लिखी और प्रहरियो की दृष्टि से छिपाकर उसे अपने एक मित्र बोस्क को दे दी। यह व्यक्ति कभी कभी

मादाम रोलाँ मे मिलने आया करता था। कुछ दिना वाद मादाम को वहाँ से एक दूसरे कारागार म हटा दिया गया, जहाँ उमको नगर की दुराचारिणी स्त्रियो के साथ रहना पडा, परतु कुछ कमचारिया की कृपा से उसे एक अच्छी सी कोठरी रहने को मिल गई। यहा पर उसन रोब्सपीयर के नाम एक पत्र लिखा—"अपराधी को प्राथना करन का कोई अधिकार नही है। गिडगिडाना मेरी प्रकृति के विरुद्ध है। मैं दुख अच्छी तरह सह सकती हूँ। मैं भाग्य का रोना नही रोती। मैं तुम्हारे मन म दया उत्पन्न करन के लिए यह पत्र नही लिख रही हूँ। मैं तुम्हें तुम्हारा कत्तव्य सुझाना चाहती हूँ। याद रखो, भाग्य हमेशा साथ नही देता है, यही बात सवसाधारण मे प्रिय होन के विषय मे भी है। इतिहास इस बात का साक्षी है, जो कभी जनता को प्रिय थे, वही जनता के पैरो से ठुकराए गए।'

परतु उसने यह पत्र रोब्सपीयर के पास नही भेजा। जिमके एक बार वह स्वय प्राण बचा चुकी थी, उमके सामने दीन बनन मे उसका बडी ग्लानि प्रतीत हुइ। उमन वह पत्र टुकडे टुकडे कर डाला तब स वह किसी न किसी प्रकार समय बिताती रही। एक बार विष-पान करके जीवन का अत करन का विचार भी उसके मन मे उदय हुआ। एक कमचारी की सहायता मे उसको कुछ विष मिल गया। मरने से पूव उसन पति, मित्रा के लिए कई पत्र लिखे, परन्तु पुत्री की स्मृति ने मरने न दिया। उसने विष का प्याला दूर फेंक दिया। वह कठिन से कठिन दुख सहने के लिए तैयार हो गई।

शीघ्र ही उस स्थान स वह एक तग, गदी और अधकारपूण कोठरी मे बन्द कर दी गई। केवल विचार के समय न्यायालय मे उपस्थित होन के लिए बाहर निकाली जाती थी। बडी निर्भीकता मे उसने विचारपति के प्रश्नो का उत्तर दिया।

मृत्यु दण्ड सुनकर उसने बडे कटु शब्दो मे विचारपति से कहा—"उन महात्मा पुरुषो का साथ देने मे, जिनके रक्त से आपके हाथ रगे हुए हैं, आपने मेरी जो सहायता की है, मैं उसके लिए आपको धन्यवाद देती हूँ।"

जब वह अन्य अपराधियो के साथ फाँसी के स्थान को जा रही थी,

नगर की बहुत-सी स्त्रिया चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी—"वध-स्थान के लिए, वध-स्थान के लिए।"

मादाम रोला से चुप न रहा गया। उसने उन स्त्रियो से कहा—'मैं तो वध-स्थान को जा रही हूँ और कुछ क्षणो मे ही वहाँ पहुँच जाऊँगी, पर वे जो मुझे वहाँ भेज रहे है, उन्हे भी शीघ्र ही मेरा अनुकरण करना होगा। मैं निर्दोष जा रही हू उनके सिर पर रक्त का अपराध होगा और तुम जो आज हम लोगो के ऊपर हस रही हो, आज से भी अधिक उन लोगो के दड पर हँसोगी।'

मादाम रोलों का कथन अक्षरश सत्य सिद्ध हुआ।

मादाम रोलों की गाडी मे एक वृद्ध मनुष्य भी था। वह मार्ग भर रोता रहा, परन्तु रोला ने उसको सान्त्वना देकर धीरज बँधाया। वध-स्थान पर सबसे पहले मादाम रोलों का ही फासी लगनी थी, पर उसने वधिक से प्रार्थना की कि—"पहले उस वृद्ध को फाँसी पर चढाओ, वह मेरी मृत्यु न देख सकेगा, उसका हृदय फट जायगा। मैं तो पीछे भी मर लूगी।'

वधिक ने उसकी बात मान ली। हृदय कडा करके मादाम रोला ने वृद्ध का सिर कटते देखा। वृद्ध के मरने के बाद वह अपने स्थान से हटी। पास ही मे स्वतन्त्रता देवी की मूर्ति रखी थी, उसके सामने नत-मस्तक होकर मादाम रोला ने दीर्घ निश्वास भरकर कहा—"स्वाधीनते! स्वतन्त्रते! तुम्हारे नाम पर मनुष्यो ने कितने अपराध किये है।'

इतना कहकर वह गिलटिन पर जाकर खडी हो गई और अपना गला छुरी के नीचे रख दिया। क्षण मात्र मे उसका सिर धड से अलग हो गया। यह 8 नवम्बर, सन् 1793 की घटना है।

रोला के पति ने जब अपनी स्त्री की मृत्यु का समाचार सुना तो उसके लिए एक क्षण भी इस ससार मे रहना कठिन हो गया। वह अपने स्थान से भाग निकला और आत्महत्या कर ली।

बारह

रुहेलखंड युद्ध के अत्याचारों की कहानी इंगलैण्ड में विभिन्न रूप धारण करके पहुँची। गवर्नर के कार्य को दोषपूर्ण कहा गया। अन्त में 1773 में लार्ड नार्थ के द्वारा पार्लियामेंट में एक बिल 'रेग्युलेटिंग एक्ट' पास हुआ जिसके द्वारा 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' के हाथ से भारतीय शासन इंगलैण्ड के राजा के हाथ में चला गया। बंगाल में एक गवर्नर जनरल नियुक्त करने का निश्चय हुआ। गवर्नर जनरल की कौंसिल में चार सदस्य भी नियत किए गए। एक गवर्नर जनरल की शासन काल की अवधि पाँच वर्ष नियत हुई। हेस्टिंग्स ही को गवर्नर जनरल पद दिया गया। उसका वेतन डेढ़ लाख वार्षिक नियत हुआ। उनकी कौंसिल के नये चार सदस्य जनरल क्लेवरिंग, कर्नल मानसून, सर फिलिप फ्रांसिस और रिचर्ड बारवल थे।

पार्लियामेंट के नये एक्ट के अनुसार भारत में एक नयी बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट खोली गई। इसके एक प्रधान न्यायाधीश और तीन न्यायाधीश नियत हुए। प्रधान न्यायाधीश का वेतन एक लाख बीस हजार रुपया तथा दूसरे न्यायाधीशों का 90 हजार रुपया वार्षिक वेतन नियत हुआ। इस कोर्ट का पहला प्रधान न्यायाधीश सर इलिजा इम्पे को बनाया गया। इम्पे हेस्टिंग्स के बाल-सहपाठी रहे थे।

गवर्नर जनरल और उनकी नई कौंसिल की पहली बैठक बैठी। पहले ही दिन हेस्टिंग्स को ज्ञात हो गया कि वह अब स्वतन्त्र नहीं रह गए हैं। बैठक आरम्भ होने पर हेस्टिंग्स ने अपनी शासन सम्बन्धी रिपोर्ट सदस्यों को सुनाई। जब रुहेला युद्ध और बनारस की सन्धि का प्रसंग आया तब कर्नल मानसून ने कहा—"गवर्नर जनरल और उनके एजेण्ट के बीच इस विषय में जो लिखा-पढ़ी उस दिन तक हुई, वह सब हमारे सामने रखी जाय।"

हेस्टिंग्स हतप्रभ होकर बोले—"वे अत्यन्त गोपनीय कागजात हैं, अतः सब नहीं दिखाए जा सकते। सभ्य केवल वह अंश देख सकते हैं जिसे

सर्व-साधारण मे दिखाये जाने से हानि की सभावना नही है ।'

इस उत्तर से गवर्नर जनरल और सदस्यो मे विग्रह उठ खडा हुआ । जो अधिकार गवर्नर जनरल को थे वही अधिकार प्रत्येक सदस्य को भी थे । गवर्नर जनरल मनमानी नही कर सकते थे । कर्नल मानसून, क्लेवरिंग और फ्रासिस ने लखनऊ के रेजीडेंट मिडिलटन को पदच्युत कर दिया, कम्पनी की अग्रेजी सेना तुरत लखनऊ से वापिस बुला ली गई और नवाब से फौरन रुपया तलब किया गया । रुहेला युद्ध की जाँच के लिए भी आदेश दिया गया ।

तेरह

फ्रास की राज्य क्रान्ति के दिनो मे वहाँ सभी दल शासन-सूत्र अपने हाथ मे लेने के लिए आपस मे झगडते रहते थे । जिस दल के हाथ मे शासन अधिकार आ जाता, वही भाग्य विधायक समझा जाता । इन्ही अधिकारियो के कारण उस समय फ्रास मे खून बहाया जा रहा था । विरोधियो के प्राण हरण के लिए सैकडो वधिक नियुक्त किये जाते थे । 1792 के सितम्बर मे ऐसे दो सौ वधिको द्वारा तीन दिन के भीतर चौदह सौ मनुष्यो का वध केवल पेरिस नगर मे हुआ । थक जाने पर इन वधिको को मद्य और भोजन देकर कार्य जारी रखने के लिए फिर उत्तेजित किया जाता था । इन वधिको पर 1463 लिवर मुद्रा व्यय किये गये थे । इतने मनुष्यो की गर्दन काटने के लिए गिलेटिन यन्त्र काम मे लाया जाता था । जून 1793 मे गिरोण्डिस्ट दल शासन से च्युत हो गया और दल के सदस्य छिपकर समय बिताने लगे । वे स्थान-स्थान पर भाषण देकर जनता को अपना पक्ष समझाते रहते थे ।

नार्मण्डी प्रात के कईन नगर की एक गरीब किसान परिवार की युवती कन्या इन भाषणो को बहुत उत्सुकता से सुनती थी । इसका नाम शार्लोत कोर्डे था । शार्लोट के पिता का राजनीति और साहित्य से प्रेम था ।

बाल्यावस्था म माता की मृत्यु होने पर पिता ने उसका लालन पालन किया और इस प्रकार तभी स वह भी अपने पिता के विचारो स प्रभावित होती गइ। गरीबी असह्य हान पर पिता अपन बच्चा का भार उठान म असमथ होकर गृह त्याग, एक मठ म ईश्वर चिन्तन करने लग। कोर्दे भी अपन पिता क साथ वही रहन लगी। इससे वह सयमी और कठोर जीवन की अभ्यस्त हो गई। उसन रुसा, रनल प्लूटाक आदि प्रसिद्ध लेखको की पुस्तको का अध्ययन किया। और देश सवा की भावना मन म भरकर उसम जूझ गइ। नए सत्तारूढ दल के नेता मारोत की अमानवीय क्रूरता न जनता मे भय का सचार कर दिया। गिरोण्डिस्ट दल मारोत को नष्ट करने के उपाय सोचने लगा। उन्होन उसके विरुद्ध एक राष्ट्रीय सेना की भरती आरम्भ की।

सनिका की सख्या म नित्य वद्धि होती जा रही थी। एक दिन कार्दे का एक परिचित युवक सना मे भर्ती होन के लिए आया। वह कोर्दे स स्नह करता था। कार्दे भी उसकी ओर आकृष्ट हुई थी, परन्तु वह अपना जीवन देश हित म अपण करन की प्रतिज्ञा कर चुकी थी अत उस युवक के सम्मुख आत्म समपण न कर सकी।

उसने अपना एक चित्र उस युवक को देकर कहा—"तुम्हे प्रेम करन का मुझे अधिकार नही ह, व्यावहारिक दष्टि से भी मुझे साथ रखन म तुम्हे कष्टो के सिवा और कुछ न मिल सकेगा। हाँ, इस चित्र क रूप मे ही तुम मुझसे प्रेम कर सकत हो।'

युवक को निराश और उदास जाते देखकर कोर्दे की आँखो स अनायास आँसू निकल पडे।

कार्दे को गीली दखकर सनापति पितियन न पूछा—"यदि यह मनुष्य यहाँ स न जाय तो तुम्हे प्रसन्नता होगी ?'

कोर्दे ने य शब्द सुन और लज्जा मे सिर झुका लिया। वह मुख म एक शब्द भी न निकाल सकी और वहाँ स चली गई।

इस घटना के बाद कोर्दे का वहाँ रहना कठिन हो गया और शीघ्रातिशीघ्र परिस पहुँचन की इच्छा प्रबल होती गई। नवीन सेना के परिस पहुँचन स पूव मारात का प्राणान्त कर देना ही उसका एकमात्र उद्देश्य

था। उसन अपना कायक्रम और साधन निश्चित किया। किसी को भी उसके विचारो का पता न था और न स्वय उसने किसी म इस विषय म कुछ कहा था, परन्तु हृदय के आवेग मे आकर उसन अपनी चाची स एक दिन कुछ ऐसे शब्द कह दिये, जिससे अप्रत्यक्ष रूप मे उसके विचारो का पता चल गया।

कोर्दे एकात म बैठी रो रही थी। चाची ने कारण पूछा।

कार्दे के मुह मे निकल पडा—'मैं अपन देश, अपन सम्बधियो और तुम्हारे दुर्भाग्य के लिए रोती हूँ। जब तक मारोत इस ससार म मौजूद है कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्र जीवन की आशा नही कर सकता।"

उसी दिन बाजार म कुछ मनुष्यो को ताश खेलत देखकर बडे तीव्र शब्दो मे कोर्दे ने उनसे भी कहा 'तुम लोगो को खेलन की सूझी है और तुम्हारा देश मृत्यु मुख मे पडा है।'

परिस जाने की तैयारी करने के बाद कोर्दे मठ म जाकर पिता और बहना से मिली। उसके दोना भाई राजा की सेवा मे चल गये थे। पिता से उसन इगलड जाने का बहाना किया। पिता न अनुमति दे दी। कोर्दे चाची के पास लौट आई। दो दिन चाची की सेवा करन के बाद अपनी सखी-सहेलियो और चाची से विदा होकर और अतिम बार उस स्थान का नमस्कार कर कोर्दे न परिस के लिए प्रस्थान किया। दो दिन के पश्चात वह पेरिस पहुँच गई और यहाँ एक होटल मे रहने का प्रबध किया।

परिस मे कोर्दे नगर मे एक प्रतिनिधि दूप्रे से मिली। उससे परिचय करने के लिए गिरोण्डिस्ट दल के एक सदस्य बारबरो स कार्दे न केइन नगर मे ही एक पत्र लिखा लिया था।

भेंट होने पर उसन प्रतिनिधि से कहा—'मुझे आप मत्री मारात स मिला दीजिए मुझे उनसे काम है।"

दूप्रे न अगले दिन कोर्दे को मारात के पास न चलने का वचन दिया। चलत समय कोर्दे ने बहुत धीमे स्वर म दूप्रे से कहा— आपका जीवन सुरक्षित नही है आप इस स्थान को छोड दीजिये और केइन नगर जाकर अपने साथियो म मिल जाइये, परिषद मे आप अब कोई भी अच्छा काम

नही कर सकते।"

दूप्रे ने कहा—"मैं पेरिस म नियुक्त हुआ हूँ मैं इस स्थान को नही छोड़ूगा।"

कोर्दे ने फिर कहा – "आप भूल करत है मेरा विश्वास कीजिय और आगामी रात्रि से पूव ही यहा से चले जाइय।"

परन्तु दूप्रे ने उस समय कोर्दे की बातो पर ध्यान नही दिया, परन्तु शीघ्र ही अधिकारियो की शनि-दृष्टि उस पर पड गई। उसका नाम संदिग्ध मनुष्यो की सूची मे लिख लिया गया।

दूसरे दिन बडे सबेरे ये दोनो मारोत स मिलने गये, परन्तु मारोत ने सध्या के पूव भेंट करने म असमथता प्रकट की। कोर्दे उससे मिलकर मारोत के विषय म कुछ बातें जानना चाहती थी, पर अब उसन अपना विचार बदल दिया। समय नष्ट करना उस व्यथ प्रतीत होने लगा। दूप्रे को धयवाद सहित विदा करके कोर्दे ने उसी दिन एक पैना छुरा खरीद कर अपन वस्त्रो मे छिपा लिया। उसकी इच्छा मारोत को खुलआम मारने की थी, परन्तु ऐसा अवसर मिलना कठिन था, अतएव उसने मारोत के स्थान पर ही उसका वध करने का निश्चय किया।

मारोत से भेट होना बडा कठिन था। कोर्दे को एक युक्ति सूझी। कोर्दे जानती थी कि मारोत प्राणपण म प्रजातन्त्र शासन विधान की रक्षा करेगा। यदि उससे कहा जाय कि अमुक स्थान पर शासन विधान के विरुद्ध लोगो न उपद्रव किया है, तो वह मेरी बात अवश्य सुनेगा। इसी बहाने म कोर्दे न मारोत से मिलना चाहा। इस आशय की सूचना उसने मारोत के पास भेजी, पर कोई सुनवाई न हुई। दो बार जान पर भी कोर्दे को लौट आना पडा, पर वह हताश न हुई। उसन मन ही मन प्रतिज्ञा की कि चाहे जस हो, तीसरी बार जाने पर अपना उद्देश्य अवश्य सिद्ध करूँगी।

कोर्दे उसी दिन सध्या-समय तीसरी बार फिर मारोत के मकान पर पहुँची। द्वार-रक्षक के द्वारा अन्दर जान से रोकने पर वह उससे झगडने लगी। द्वार-रक्षक कोर्दे का माग रोकता था और कोर्दे मारोत स मिलन के लिए अपन हठ पर अडी हुई थी। इन दोनो के वाक्युद्ध का शोर मकान के अन्दर मारोत के कानो म पडा। शब्दो द्वारा उसन इतना जान लिया

कि यह वही स्त्री है, जो आज ही मुझसे मिलने के लिए दो पत्र भेज चुकी है। मारोत ने वहीं से कोर्दे को भीतर जाने के लिए द्वार-रक्षक को आदेश दिया।

अन्दर जाने पर कोर्दे ने देखा कि मारोत अपने कमरे में उपस्थित है। उसके चारों ओर कागज-पत्र फैले हुए हैं और वह बड़े गौर से उनकी देख-भाल कर रहा है।

कुछ समय तक कोर्दे और मारोत में बातचीत होती रही। उपद्रवियों के नाम एक पर्चे पर लिखने के बाद बड़े निःशंक भाव से मारोत ने कहा —'एक सप्ताह पूर्व ही ये सब मौत के घाट उतार दिये जाएँगे।"

कोर्दे ऐसे शब्द सुनने की प्रतीक्षा में ही थी। मारोत के अभिमान को चूर्ण करने का उसे अवसर मिल गया। उसने बड़ी फुर्ती से अपने वस्त्रों में से छुरा निकाला और मारोत की छाती में पूरे वेग से घाव दिया। यह सब करने में कोर्दे को पल-भर का भी समय नहीं लगा। मारोत के मुँह से निकला 'सहायता' और फिर उसका प्राण पखेरू उड़ गया।

'सहायता' का शब्द सुनकर मारोत के कुछ भृत्य कमरे में दौड़ आये। उन्होंने कोर्दे को पकड़ लिया। एक मनुष्य ने एक कुर्सी उठाकर कोर्दे के शरीर पर दे मारी और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। उसकी अचेतन अवस्था में मारोत की प्रेयसी ने, जो उस समय वहाँ खड़ी थी, कोर्दे को अपने पैरों से रौंद डाला। मारोत का मृत्यु समाचार बिजली की तरह सारे नगर में फैल गया। थोड़ी देर में पास पड़ोसी, सरकारी कर्मचारी, नगर रक्षक आदि सभी घटना-स्थल पर आ पहुँचे, मारोत का मकान बाहर और भीतर नर समूह से भर गया।

बेहोशी दूर होने पर कोर्दे बिना किसी की सहायता के फर्श पर से उठ बैठी। उसने देखा, सैंकड़ों आदमी उसे देखकर दाँत पीस रहे हैं। लाल लाल आँखें दिखाकर अपने क्रोध में वे उसे भस्म कर देना चाहते हैं और घूँसों द्वारा मारने के लिए प्रस्तुत हैं। वास्तव में यदि उस समय पुलिस कर्मचारी वहाँ न होते तो कोर्दे की अस्थियाँ तक मिलना कठिन हो जाता। कोर्दे इस दृश्य को देखकर तनिक भी विचलित न हुई। केवल मारोत की प्रेयसी को देखकर उसे कुछ पीड़ा हुई परन्तु वह भी क्षणिक थी। पुलिस ने कोर्दे

को ले जाकर कारागार म बन्द कर दिया।

पुलिस न उससे प्रश्न किये—

तुम इस छुर को पहचानती हो ?"

'हाँ।"

'किस कारण तुमने यह भीषण अपराध किया है ?"

"मैंन देखा कि गृह-युद्ध से फ्रास नष्ट हुआ चाहता ह। मुझे यह विश्वास हो गया कि इन सब आपत्तियो का मुख्य कारण मारात ही ह। मैंन अपन देश को बचान के लिए अपना जीवन स्वेच्छा स बलिदान किया है।"

"जिन मनुष्या न तुम्हे इस काय म सहायता दी है, उनक नाम बताओ।"

"कोई भी मेर विचारा स अवगत न था, मैंन अपनी चाची और पिता तक को धोखा दिया। बहुत कम मनुष्य मेरे सम्बन्धिया से मिलन आत रह, किसी का भी मेरे विचारो के बार म जरा भी सन्देह न था।"

'क्या केईन नगर छोडने म पूव मारोत के मारन का तुमन पूण निश्चय नहीं कर लिया था ?'

"यही तो मेरा एकमात्र उद्देश्य था।"

एक पुलिस अधिकारी को प्रतीत हुआ कि कोर्दे की साडी के एक छोर मे कागज बँधा है। उसे जानन की उसे इच्छा हुई, परन्तु कोर्दे उसक विषय मे बिल्कुल भूल गई थी। उस अधिकारी को इस प्रकार घूरत देखकर कोर्दे ने समझा कि यह मेरे कौमाय पर दृष्टिपात करके मेरी पवित्रता का अनादर कर रहा है। उसके हाथ बधे हुए थे। वह किसी तरह भी अपन वस्त्रा को सँभाल नही सकती थी। उसन अपनी लज्जा को ढकन के लिए शरीर को दुहरा करने की चेष्टा की, परन्तु उसके वक्षस्थल पर से वस्त्र हट गया और उसके स्तन बाहर निकल पडे। कोर्दे को अपनी इस दशा स बडी लज्जा प्रतीत हुई। उसन बडे दीन शब्दो म अधिकारिया से अपन हाथ खोलने की प्रार्थना की।

उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई। हाथ खुलने पर दीवार की ओर मुह करके उसन झटपट अपने वस्त्रो को ठीक किया और अपन बयान पर

हस्ताक्षर कर दिए। रस्सी से बँधने पर उसके हाथों में नीले दाग पड़ गए थे। इस बार हाथ बाँधे जाने पर उसने दस्ताने पहनाने का अनुरोध किया, परन्तु उसकी वह प्रार्थना स्वीकृत न हुई।

मृत्यु मुख में पड़े रहने पर भी एक लड़की के ऐसे शिष्ट, संयत और निर्भीक उत्तर सुनकर अधिकारी दंग रह गये। उस कागज में कोर्दे ने फ्रांस निवासियों के प्रति अपना संदेश लिखा था। उस सन्देश की प्रत्येक पंक्ति में एक युवती के मार्मिक हृदय के उद्‌गार भरे हुए थे। सन्देश इस प्रकार था—"अभागे फ्रांस निवासियो! मतभेद और इस प्रकार की मुसीबतों में कब तक पड़े रहोगे? मुट्ठी भर मनुष्यों ने सर्व-साधारण का हित अपने हाथ में कर रखा है, उनके क्रोध का लक्ष्य क्यों बनते हो? अपने प्राणों को नष्ट करके फ्रांस के भग्नावशेष पर उनके अत्याचारों को स्थापित करना क्या तुम्हें उचित दीखता है? चारों ओर दलबन्दियाँ हो रही हैं और मुट्ठी-भर मनुष्य क्रूर और अमानुषिक कार्यों द्वारा हम पर आधिपत्य जमाए हुए हैं। वे नित्य हमारे विरुद्ध षड्‌यन्त्र रचते हैं। हम अपना नाश कर रहे हैं। यदि यही दशा रही तो कुछ समय में हमारे अस्तित्व की स्मृति के अतिरिक्त और कुछ शेष न रह जायगा।

फ्रांस निवासियो! तुम अपने शत्रुओं को जानते हो, उठो और उनके विरुद्ध प्रस्थान कर दो उन्हें शासनाधिकार से हटाकर फ्रांस में सुख और शांति स्थापित करो।

"ओ मेरे देश, तेरे दुखों से मेरा हृदय फटा जाता है। मैं तुझे अपने जीवन के अतिरिक्त और क्या दे सकती हूँ? मैं परमात्मा को धन्यवाद देती हूँ कि मुझे अपना जीवन अन्त करने की पूरी स्वतन्त्रता है। मेरी मृत्यु से किसी को भी हानि न होगी। मैं चाहती हूँ कि मेरा अन्तिम श्वास भी मेरे नागरिक भाइयों के लिए हितकर हो, मेरे कटे सिर को पेरिस नगर में मनुष्यों द्वारा इधर उधर घुमाते देखकर वे कार्य सिद्धि के लिए एक मत हो सकें, मेरे रक्त से अत्याचारियों का अन्त लिखा जाए और उनके क्रोध का अन्तिम निशाना बनूँ।

"मेरे संरक्षक और मित्रों को किसी प्रकार का कष्ट न दिया जाय, क्योंकि मेरे विचारों से कोई भी अवगत न था। देशवासियो! मैं अपने

उद्देश्य मे सफल नही हो सकी हूँ, पर मैंने आप लोगो को मार्ग दिखा दिया है। आप अपने शत्रुओ को जानते है। उठो और उनके विरुद्ध प्रस्थान करके उनका अन्त कर दो।"

दूसरे दिन क्रांतिकारी न्यायालय के अध्यक्ष उस वीरबाला कार्डे को देखने के लिए आये। कारागार की अँधेरी कोठरी मे वह उससे मिले। कोर्डे की युवा अवस्था और सुन्दरता को देखकर उनके हृदय मे बडी दया उत्पन्न हुई। उसने कोर्डे को बचाना चाहा, परन्तु कोर्डे ने झूठ बोलकर अपना प्राण बचाने से इन्कार कर दिया। कारागार मे कोर्डे को लिखने की सामग्री मिल गई थी। अपने मित्रो और पिता को उसने जो पत्र लिखे है, उनमे उसने अपने कार्य, दशा और विचारो का वर्णन किया है। पिता को उसने बडे संक्षिप्त शब्दो मे लिखा—"आपकी अनुमति बिना अपने जीवन का अन्त करने के लिए आप मुझे क्षमा करें। मेरे प्यारे पिता, विदा। आप मुझे भूल जाइये अथवा यदि उचित समझें तो मेरे भाग्य पर हर्ष मनाइये। मैंने बडे पवित्र कार्य के लिए अपना उत्सर्ग किया है। मैं अपनी बहन को हृदय से प्यार करती हूँ। बाबा कोर्नेल के इस वाक्य को कभी न भूलियेगा—"मनुष्य को फाँसी से नही, वरन अपने अपराधों से लज्जित होना चाहिए।"

कोर्नेल फ्रास का प्रसिद्ध नाटयकार हुआ है। वह कुशल कवि भी था। कोर्डे उसकी पौत्री थी। कदाचित कोर्डे की वीरता मे अप्रत्यक्ष रूप से कोर्नेल की कविता ही काम कर रही थी। कवि और वीर मे कोई विशेष भेद नही। एक भावो द्वारा अनुभव करके जिस बात को शब्दो मे व्यक्त करता है, दूसरा उसी को अपने कार्यों मे परिणित कर देता है।

क्रान्तिकारी न्यायालय मे कार्डे का विचार हुआ। नियमानुसार अपनी ओर से एक वकील करने का कोर्डे को अधिकार था, परन्तु जिस मनुष्य को उसने नियुक्त किया था, वह वहाँ पर नही दिखाई दिया। तब अध्यक्ष ने एक दूसरे मनुष्य को इस कार्य के लिए नियत किया।

कोर्डे ने कहा—"मैं मानती हूँ कि वह साधन मेरे उपयुक्त न था, परन्तु मारोत के सम्मुख पहुँचने के लिए धोखा देना आवश्यक था।"

जज ने कोर्डे से पूछा—"तुम्हारे हृदय मे मारोत के प्रति घृणा किसने

था। जब मृत्यु दण्ड सुनाया गया, तो उसका विरोध करने के लिए उसने अपने हाथ हिलाए, अपने स्थान से उठा भी, परन्तु असख्य जन-समुदाय मे कोर्दे का पक्ष-समर्थन करने की उसे हिम्मत न हुई। वह अपने स्थान पर बैठ गया। कोर्दे ने उसकी समस्त चेष्टाओ को देखा। जानकर परम सन्तोष हुआ कि कम से कम एक मनुष्य वहाँ ऐसा अवश्य मौजूद है, जिसे उसके कार्यो से सहानुभूति है। कोर्दे ने मन ही मन उसको धन्यवाद दिया। वह युवक जर्मनी का एक प्रजातन्त्रवादी व्यक्ति था। उसका नाम आदमलक्ष था। किसी कार्यवश वह उस समय पेरिस आया हुआ था।

कोर्दे कारागार को लौट गई। वहाँ पर अपने अपूर्ण चित्र को पूरा करने के लिए दूसरे दिन सवेरे चित्रकार उससे मिला। बडी देर तक कोर्दे चित्रकार से बातचीत करती रही। थोडी देर मे एक कैंची लेकर बधिक वहाँ पहुँचा। कोर्दे ने उससे वह कैंची ले ली और अपने रेशम के समान मुलायम बालो को काटकर चित्रकार को देते हुए उसने कहा—"आपके कष्ट के लिए किन शब्दो मे धन्यवाद दूँ। आपको देने के लिए इसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ नही है। कृतज्ञतास्वरूप इनको आप अपने पास रख लीजिए और मेरी स्मृति बनाए रखियेगा। आपसे एक अनुरोध है कृपया मेरा एक चित्र मेरे पिता के पास भेज दीजिएगा।"

बधिक ने कोर्दे के हाथ बाँध दिये और एक गाडी मे बैठाकर उसको वधस्थल की ओर ले चला। असख्य मनुष्यो की भीड उसके साथ थी। उस भीड मे आदमलक्ष भी था। अन्य सब मनुष्य तो कोर्दे की मृत्यु का कौतुक देखने के लिए जा रहे थे, परन्तु आदमलक्ष की धारणा दूसरे प्रकार की थी। उसका विश्वास था कि यदि मैं कोर्दे के निमित्त अपने प्राण विसर्जन कर दूँ, तो हम दोनो एक रूप होकर ब्रह्म मे लीन हो जायेंगे।

कोर्दे निर्भय चित्त से फाँसी के तख्ते पर चढी। बधिक ने उसकी गर्दन से कपडा हटा दिया, जिसके कारण उसकी छाती खुल गई। मृत्यु के समय भी इस अनादर से कोर्दे को अपार कष्ट हुआ परन्तु उसने शीघ्र ही छुरी के नीचे अपना गला रख दिया। क्षण मात्र मे ही उसका गला कटकर नीचे गिर पडा। यह 1793 के जुलाई मास की बात है। कोर्दे की मृत्यु पर गिरोण्डिस्ट दल के एक नेता बर्जोनियाँ ने कहा था—कोर्दे ने हमको मरन

का पाठ पढाया है।

कोर्दे की मत्यु के कुछ दिना बाद आदमलक्ष ने कोर्दे की निर्दोपता सिद्ध करते हुए एक विनप्ति प्रकाशित की थी, जिसमे लिखा था कि कोर्दे के काय मे मैंने भी महायता की है। लक्ष शीघ्र ही बन्दी कर लिया गया। मत्यु दण्ड न उसको समार स मुक्त कर दिया। मरत समय उसके मन म केवल एक ही भावना थी—"मैं एक आदश रमणी के निमित्त प्राण-दान कर रहा हूँ।"

मारोत की मत्यु के बाद दश म और भी अशान्ति हा गई। शासका का कोर्दे क काय स गुप्त पडयन्त्र की गन्ध आने लगी। उन्होंने अपन सब विरोधिया को मौत के घाट उतारन का निश्चय कर लिया। मारोत की मत्यु के दिन स ही फ्रास म 'आतक का राज्य' आरम्भ हुआ। फ्रास के कोन-कोन मे गिलेटिन का प्रचार हा गया। राज्य मत्ता के पक्षपाती, उदार-नीति के समथक सब मनुष्य कारागार मे डाल दिये गये, उपद्रविया को मृत्यु दण्ड दिया गया उनके गाव क गाँव नष्ट कर दिये गय।

चौदह

साम्राज्ञी आत्वानत कारागार मे सख्त पहरे मे रहती थी। शामका को उमस डरन का कोइ कारण नही था, परन्तु मारोत की मृत्यु क बाद वह भी उनकी दष्टि म पटयन्त्र म सम्मिलित प्रतीत हुई। शासन न उम पर भी अभियाग चलान का निश्चय किया। सम्राट के कत्ल क बाद उसका पुत्र माता म पथक कर बन्दी पिता क कमरे मे रखने की आना दी गई। रानी न अपन पुत्र को अपन मे अलग रखने का विरोध किया। दो घटे तक वह अधिकारिया स झगडती रही, परन्तु वे किसी भाँति नही मान। माता के ममत्व का उन निष्ठुर व्यक्तिया को तनिक भी ध्यान नहीं हुआ। माता न पुत्र को अपनी छाती स लगाकर भाग्य के भरास छोड दिया। अधिकारी उसे वहाँ स ले गये।

थी। 4 हजार तो माली थ। रसोई का खर्च ही 2-3 हजार रुपये रोजाना का था। सैकडा बावर्ची थे। शाहजादे वजीरअली की शादी मे 30 लाख रुपये खर्च किये थे। वह सिर्फ दाता और उदार ही नही, एक योग्य शासक और गुणग्राही भी थे। मीर, सौदा और हसरत आदि उर्दू के नामी कवि थे जो साल म सिर्फ एक बार दरबार मे हाजिर होकर हजारो रुपये पाते थे। संगीत और काव्य के ऐसे रसिक थे कि एक एक पद पर हजारो रुपये बरसाये जाते थे।

वारेन हेस्टिंग्स को रुपये की बडी जरूरत थी। अंग्रेज कम्पनी ने नवाब से कई बडी रकम बार-बार तलब की थी। विवश हो नवाब ने चुनार के किले म हेस्टिंग्स से मुलाकात की और बताया कि केवल सेना की मद्द म ही मुझे एक बडी रकम देनी पडती है।

अन्त म हेस्टिंग्स ने यह निश्चय किया कि चूकि स्वर्गीय नवाब शुजाउद्दौला मृत्यु के समय मे अपनी मा और विधवा बेगम को बडे-बडे खजाने दे गया है, और फैजाबाद के महल भी उन्ही के नाम कर गया है, तथा ये बेगमे अपने असख्य सम्बन्धियो, बाँदियो और गुलामो के साथ वही रहती थी—अत उनसे यह रुपया ले लिया जाय।

आसफउद्दौला यह शर्त सुनकर बहुत लज्जित हुआ, पर लाचार हो उसे सहमत होना पडा, और इसका प्रबन्ध अंग्रेज-अधिकारी स्वय कर लेंगे, यह भी निश्चय हो गया।

मृत नवाब शुजाउद्दौला अपनी इन बेगमो को अंग्रेजो की सरक्षकता म छोड गये थ। परन्तु उस मनुष्यता को भुलाकर और उनका रुपया हडपने का सकल्प करके इन विधवा बेगमो पर काशी के राजा चेतसिंह के साथ विद्रोह म सम्मिलित होने का अभियोग लगाया गया, और सर इलाइजाह इम्पे कहारो की डाक बैठाकर इस काम के लिए कलकत्ते से तेजी के साथ रवाना हुआ। लखनऊ पहुँचकर उसने गवाहो के हलफनामे लिये और बेगमो को विद्रोह म सम्मिलित होने का फैसला करके कलकत्ते लौट गया।

फैजाबाद के महलो को अंग्रेजी फौजो ने घेर लिया—और बेगमात को हुक्म दिया कि आप कैदी हैं, और आप तमाम जेवरात, सोना, चाँदी, जवाहरात दे दीजिए।

जब उन्होंने इन्कार किया, तो बाहर की रसद बन्द कर दी गई, और वे भूखी मरने लगीं। अन्त में बेगमों ने पिटारों पर पिटारे और खजाना पर खजाने देना शुरू कर दिया। यह रकम एक करोड़ रुपये के अनुमानत होगी।

इस घटना से अवध भर में तहलका मच गया, और आसफउद्दौला का दिल टुकड़े टुकड़े हो गया।

इसके बाद हेस्टिंग्स ने कर्नल हैनरी को नवाब के यहां भेजा और उसे बहराइच तथा गोरखपुर जिलों का कलक्टर बनवा दिया। उसने उन जिलों पर भयानक अत्याचार किया, और तीन वर्ष के अन्दर ही पैंतालीस लाख रुपया कमा लिया। नवाब ने तंग होकर उसे बर्खास्त कर दिया, पर हेस्टिंग्स ने फिर उसे नवाब के सिर मढ़ना चाहा।

नवाब ने लिखा—"मैं हज़रत मुहम्मद की कसम खाकर कहता हूँ कि यदि आपने मेरे यहां किसी काम पर कर्नल हैनरी को भेजा तो मैं सल्तनत छोड़कर निकल जाऊंगा।"

सत्रह

जब वारेन हेस्टिंग्स की स्वच्छन्दता नष्ट हुई और कौंसिल के साथ सहमत होकर शासन करने की कम्पनी ने आज्ञा दी, तब महाराज नन्द कुमार ने सर फिलिप फ्रांसिस द्वारा एक आवेदन पत्र कौंसिल में भेजा। उसमें उन्होंने लिखा था—

'हेस्टिंग्स साहब जैसे शत्रु की शिकायत करके आत्मरक्षा के लिए मैं ईश्वर की कृपा पर ही भरोसा करता हूँ। मैं आत्ममर्यादा को प्राण से भी बढ़कर मानता हूँ। और मैं यदि अब भी उनकी भेद न खोलूं और मौन रहूँ तो मुझे और भी अधिक विपत्तियाँ झेलनी पड़ेंगी, अतः मैं लाचार होकर यह रहस्य-भेद प्रकट करता हूँ।'

इस आवेदन पत्र में महाराज ने दिखाया कि हेस्टिंग्स साहब ने

354105 रुपए का गबन किया है और वे महाराज के सर्वनाश का षडयंत्र रच रहे हैं। महाराज के शत्रु जगतचन्द्र, मोहनप्रसाद, कमालुद्दीन आदि इस पापगोष्ठी में सम्मिलित हैं।

जब यह पत्र कौंसिल में पढ़कर सुनाया गया तो हेस्टिंग्स साहब का चेहरा फक हो गया। वे क्रोध में मतवाले होकर सम्बरों को सख्त बात कहने और महाराज को गालियां देने लगे। उस दिन कौंसिल बरखास्त हो गई। दो दिन पीछे जब कौंसिल बैठी तो महाराज का एक और पत्र खोला गया, जिसमें उन्होंने लिखा था कि कौंसिल यदि आज्ञा दे तो मैं स्वयं कौंसिल आकर अपनी बातों का प्रमाण पेश करूँ और घूस के रुपया की रसीद दाखिल करूँ।

पत्र सुनकर कर्नल सॉनसून ने प्रस्ताव किया कि महाराज को कौंसिल में उपस्थित होकर सुबूत पेश करने की आज्ञा देनी चाहिए। यह सुनकर गवर्नर साहब के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने कहा — "यदि नन्दकुमार हमारा अभियोक्ता बनकर कौंसिल में आयगा तो हम इस अपमान को प्राण जाने पर भी नहीं सह सकेंगे। हमारी अधीनस्थ कौंसिल के सदस्य हमारे कार्यों के विचारक बनकर यदि एक सामान्य अपराधी के समान हमारा विचार करेंगे तो हम इस बोर्ड में बैठेंगे ही नहीं।" बावल साहब ने सलाह दी कि इस मामले की जाँच सुप्रीम कोर्ट द्वारा कराई जाय।

बहुत वाद विवाद के अनन्तर बहुमत से महाराज का कौंसिल में बुलाया जाना निश्चित हुआ। गोरे गवर्नर पर काला आदमी दोषारोपण करे यह एक अनहोनी बात थी। हेस्टिंग्स साहब उठकर चल दिये। पर तीन सदस्यों ने जनरल क्लीवरिंग को सभापति बनाकर महाराज को कौंसिल में बुलाया और उनके प्रमाण सुनकर एकमत से हेस्टिंग्स को अपराधी ठहराया। साथ ही उन्होंने यह भी निश्चय किया कि उन्हें घूस के रुपये कौंसिल कम्पनी के खजाने में जमा करा देने चाहिए। परन्तु हेस्टिंग्स ने इस प्रस्ताव का तिरस्कार कर दिया, इस पर कम्पनी की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दावा दायर करने के लिए सब कागज कम्पनी के सालिसिटर जनरल के पास भेज दिये गये। सालिसिटर ने उन्हें देखकर जो राय

कायम की थी वह यह है—

"हमारी समझ में कलकत्ते की सुप्रीम कोर्ट में कम्पनी की ओर से हेस्टिंग्स साहब पर नालिश दायर की जानी चाहिए। ऐसा करने पर बंगाल के सब झगड़े एकदम तय हो जायेंगे और कम्पनी को भी अधिक लाभ होगा।

हेस्टिंग्स साहब ने यह रंग-ढंग देखकर चीफ जस्टिस इम्पे साहब की कोठी में एक गुप्त मंत्रणा की। उसके अगले दिन ही अचानक मोहनप्रसाद ने सुप्रीम कोर्ट में हलफिया बयान दाखिल करके एक जाल का दावा महाराज नन्दकुमार पर खड़ा कर दिया। दावे में कहा गया था कि महाराज नन्दकुमार ने जाली दस्तावेज बनाकर मृत बुलाकीदास की रियासत से रुपये वसूल किये हैं। बयान दाखिल होते ही महाराज नन्दकुमार की गिरफ्तारी के लिए कलकत्ते के शेरिफ के नाम सुप्रीम कोर्ट के विचारकों ने वारण्ट निकाल दिया और तत्काल ही महाराज नन्दकुमार गिरफ्तार करके जेल में डाल दिये गये। अपने पत्र में भण्डाफोड़ करते हुए महाराज ने जो भय प्रकट किया था, वह सम्मुख आ गया।

महाराज ब्राह्मण थे, इसलिए उन्होंने जिस स्थान पर ईसाई मुसलमान आते जाते थे, वहाँ सन्ध्या वन्दन और खान-पान से इन्कार किया। अड़सठ घण्टे वे बराबर निर्जल रहे। जब उनके वकील ने उन्हें किसी शुद्ध स्थान में नजरबन्द करने की अर्जी दी, तब बंगाल के पण्डितों को बुलाकर अंग्रेजों ने व्यवस्था ली कि महाराज की जाति जेल में खान-पान से नष्ट हो सकती है या नहीं? हेस्टिंग्स के नौकर मोदी-बाबू ने झटपट मुर्शिदाबाद को आदमी दौड़ाकर अपने पंडित हरिदास तर्क-पंचानन को कलकत्ते बुला भेजा। उन्होंने तथा अन्य ब्राह्मणों ने आत्म मर्यादा को तिलांजलि दे, व्यवस्था दी कि जेल में भोजन करने से ब्राह्मण की जाति नष्ट नहीं होती और अगर थोड़ा-बहुत दोष होता भी हो तो वह 'नहीं' के बराबर है, और जेल से छुटकारा पाने के बाद व्रत आदि रखने से उसका प्रायश्चित हो जाता है। एक देवता ने तो यहाँ तक कह दिया कि ब्राह्मण की जाति आठ बार मुसलमान का भात खाने के बाद नष्ट होती है। उपरोक्त व्यवस्था सुनकर इम्पे साहब ने महाराज की दरखास्त नामंजूर कर दी, परन्तु जब

महाराज ने भोजन से इन्कार कर दिया और वृद्ध होने के कारण उनके प्राण जाने का भय हुआ, तब जेल के आंगन में उनके लिए अलग खीमा खड़ा किया गया। इस बीच में अभियोग तैयार करके धूमधाम से चलाया गया।

1775 की तीसरी जून का कलकत्ता में अंग्रेजी न्याय की कलङ्कपूर्ण अदालत बैठी, और बेईमान जज पीली पोशाक पहनकर आ डटे। महाराज अभियुक्त के वेश में सामने खड़े हुए और उनके गुमाश्ता चैतन्यनाथ एवं उनके दामाद राय राधाचरण बहादुर और महाराज के बैरिस्टर फरार साहब उनके पीछे खड़े हुए। दूसरी ओर फर्यादी के गवाह कमाल पाद्दार आदि हेस्टिंग्स के सहचर दर्शकों की सीट पर आ डटे। महाराज पर जालसाजी के बीस अपराध लगाये गये। महाराज ने अपने को निर्दोष बतलाया।

उनसे पूछा गया—"आप किससे अपना विचार कराना चाहते हैं?"

महाराज ने कहा—"परमेश्वर हमारा विचार करे। हमारे देशवासी, हमारी श्रेणी के जन हमारा विचार करें।" पर उस समय देशी लोगों का अंग्रेजों के न्यायालय में वैसा सम्मान न था, अतः 12 जूरी बनाकर विचार शुरू हुआ।

कोर्ट के प्रधान द्विभाषिए विलियम चेम्बर किसी तरीके से गैर हाजिर कर दिये गये और गवर्नर के कृपा-पात्र ईलिएट साहब को उनका काम सौंपा गया।

महाराज के बैरिस्टर ने आपत्ति की तो इम्पे साहब ने उसे घुड़क दिया। क्लार्क आफ दी क्राउन के अभियोग-पत्र पढ़ने पर फरियादी के गवाहों की जबानबन्दी आरम्भ हुई। पहली गवाही मोहनलाल की हुई। यह वही आदमी था जिसकी पहली दरख्वास्त का मसौदा स्वयं कोर्ट के जजों ने बनाया था। पर यह बात फैसला हो चुकने पर प्रमाणित हुई। दूसरी साक्षी कमालुद्दीन खाँ की हुई। उसने कहा "महाराज ने मेरे नाम की मुहर मुझसे मांगी थी, आज 14 वर्ष हुए मुझे वह वापस नहीं मिली। जज के दस्तावेज दिखाने पर उसने अपनी मुहर की छाप को भी पहचान लिया। उसने यह भी कहा कि इस बात की खबर ख्वाजा पैट्रिक सदरुद्दीन और मेरे

नौकर हुसैनअली को भी है।"

दस्तावेज पर मुहर मे अब्दुल कमालुद्दीन की छाप थी। जिरह म जब उससे पूछा गया कि तुम्हारा नाम तो कमालुद्दीन खाँ है, यह मुहर कसी? तब गवाह ने कहा —"धर्मावतार, मैं कभी झूठ नही बोलूगा। मैं दिन म पाच बार नमाज पढता हूँ, मेरा नाम पहल अब्दुल कमालुद्दीन ही था। पर तब से अब मेरी हैसियत बढ गई है, इसलिए मैंने अपने नाम के आग का टुकडा छोडकर नाम के पीछे खा लगा लिया है।"

जिरह में जब पूछा गया कि तुम्ह कसे मालूम हुआ कि तुम्हारा नाम गवाहा म दज है? तब उसने कहा —"महाराज न मुझसे खुद जिक्र किया था कि हमने तुम्हारा नाम की मुहर गवाहा मे लगा दी है जरूरत पडे तो इसके सबूत मे तुम्ह गवाही देनी पडेगी। पर मैंन झूठी गवाही स साफ इन्कार कर दिया था। अल्ला अल्ला! भला मै झूठी गवाही द सकता था?"

हुसनअली ख्वाजा पैट्रिक और सदरुद्दीन न भी उसकी बात की पुष्टि की। दस्तावेज पर अब्दुल कमालुद्दीन शिलावत सिंह और माधवराव के दस्तखत थे। कमालुद्दीन की गवाही तो हो चुकी थी, बाकी दोनो मर चुके थे। शिलावतसिंह के दस्तखत पहचानने को राजा नवकृष्ण आये थे। य कायस्थ थे। इन्होने शपथपूवक कहा कि ये शिलावतसिंह के दस्तखत नही हैं।

इतनी साक्षी होन पर भी मामला जोरदार नही हुआ। वादी मोहन प्रसाद नौ बार और उसका गुमाश्ता कृष्ण जीवनदास चौबीस बार गवाहा के कटघरे म खडे किय गय। बार-बार जिरह किये जान पर कृष्णजीवन न घुझलाकर कहा—'पद्म मोहनदास के साथ का लिखा एक इकरारनामा बुलाकीदास ने स्वय लिखा था, उसमे बुलाकीदास ने महाराज क 1765 म 48021 रुपय क एक तमस्सुक की बाबत साफ लिखा था।

कृष्णजीवन के इस इजहार स कोर्ट के जजा और हेस्टिग्स के चेहरा का रग फक हो गया। पर इस मोहन न गम्भीरता स कहा—'कृष्णजीवन न अब तक जो गवाही दी थी, वह बरारेपन म दी थी, पर इस इकरारनाम की बात पहली बार उसका कण्ठ अवरुद्ध हुआ है। निस्सन्देह पद्ममोहन

ने महाराज नन्दकुमार की साजिश से एक इकरारनामा तैयार कर लिया था।"

उधर कान्त पाद्दार, मुंशी नवकृष्ण, गंगा गोविन्दसिंह, राजवल्लभ और स्वयं हेस्टिंग्स साहब नए-नए साक्षी तैयार कर रहे थे। और किसी तरह काम बनता न देखकर, उन्होंने आजिमअली को गवाह के कटघर में लाकर खडा किया।

आजिमअली नमक की कोठी के एजेण्ट एक अंग्रेज का खानसामा था। क्लाइव की प्रतिष्ठित सभा के सभ्य आवश्यकता होने पर इस सरकारी गवाह बनाते थे, क्योंकि उस समय सरकारी वकील नहीं होता था। जब किसी पर नमक की चोरी का अपराध लगाया जाता था तो आजिमअली गवाह बनता था। पर अब यह सभा बन्द हो गई थी। आजिमअली ने अब एक औरत से निकाह पढाकर लालबाजार में जूते की दूकान खोल ली थी।

तीसरी जून से सुबूत के गवाहों की जबानबन्दी आरम्भ हुई थी और 11वीं जून को सुबूत की गवाही समाप्त हुई थी। फिर भी 12वीं जून को आजिमअली गवाह पेश किया गया। यह कार्यवाही बेजाब्ता थी, पर इस मुकदमे में जाब्ता ही क्या था?

गवाहों के कटघर में आजिमअली को खडा होते देख महाराज के गुमाश्ते और उनके दामाद के देवता कूच कर गये। वह एक सिद्धहस्त गवाह था। वे समझ गये, बस यह चश्मदीद गवाह बनकर आया है। चैतन्य बाबू ने इस समय धूर्तता से काम लिया। उन्होंने हाथ के इशारे से आजिम को सौ फिर दो सौ, फिर तीन सौ रुपये देने का इशारा किया पर आजिम न माना। वह हलफ उठाकर कहने लगा—

"मैं महाराज नन्दकुमार का मकान जानता हूँ। उनके गुमाश्ता चैतन्यनाथ ने मेरी दूकान से जूता लिया था। मैं सन 1769 के जुलाई मास में चैतन्य बाबू से जूता के दामों का तकाजा करने महाराज नन्दकुमार के मकान पर गया। उसके दस दिन पहले बुलाकीदास की मृत्यु हो गई थी। वहाँ मैंने चैतन्य बाबू को काम में फँसे हुए पाया। पूछने पर उन्होंने कहा—'इस समय महाराज एक जाली दस्तावेज बना रहे हैं, उसी में मैं इस

समय फँसा हूँ।' इसके बाद देखा, महाराज बैठक में नाक पर चश्मा चढ़ाकर एक बक्स में से 25-30 मुहर निकालकर उनका नाम जोर-जोर से पढ़ रहे हैं। एक मुहर को उन्होंने कमालुद्दीन की कहकर चैतन्यनाथ को दिखाया भी था।'

आजिम का यह इजहार सुनकर कोर्ट के जजों की आनन्द से बत्तीसी खुल गई। वे उत्सुकता से कहने लगे—'गो आन।'

आजिमअली—हुजूर, इसके बाद तमस्सुक की शक्ल के कागज पर वह मुहर छाप दी गई।

एक जज—कहे जाओ, कहे जाओ।

आजिमअली—इसके बाद चैतन्य बाबू से महाराज ने कहा कि जहाँ मुहर लगाई है, उसके पास ही अब्दुल कमालुद्दीन का नाम भी लिख दो।

दूसरा जज—कहे जाओ।

आजिमअली—चैतन्य बाबू ने कमालुद्दीन का नाम लिख दिया।

तीसरा जज - क्या तुम पढ़ लिख सकते हो?

आजिमअली हुजूर, अब तो आँखों से दिखाई ही कम देता है, पर आगे फारसी पढ़ लिख सकता था।

सर इम्पे—आगे बोलो।

आजिमअली—हुजूर इसके बाद उसी कागज पर महाराज ने शिलावतसिंह और माधवराव के नाम भी गवाही में लिख दिये।

इस इजहार से घबराकर चैतन्य बाबू ने इशारे से एक हजार रुपये का इशारा किया। तब आजिम ने भी इशारे से कहा घबराओ मत, सब पर पानी फेर देता हूँ। उधर जज और फरियादी के वकील अधीर होकर — गो आन, गो आन कहने लगे।

आजिमअली—सब काम खत्म होने पर महाराज उसे पढ़ने लगे।

जजों ने आनन्दित होकर कहा - अच्छा अच्छा, फिर क्या हुआ?

आजिमअली—बस पढ़कर महाराज ने उसे अपने बक्स में रख लिया। तभी हमने सुना कि बुलाकीदास ने महाराज को तमस्सुक लिख दिया है।

सब जज—(एक साथ) फिर! फिर!!

आजिमअली—हुजूर, बस इसके बाद ही घर के भीतर मुर्गी बाली और मेरी नींद टूट गई। मेरी छोटी स्त्री ने कहा—मियां! आज क्या बिस्तर से नहीं उठोगे? देखा, कितनी धूप चढ़ गई है।

यह सुनते ही द्विभाषिये ईलिएट साहब ने आजिमअली के मुह की ओर देखा। सहसा उनके मुह से निकल पड़ा—आह!

इधर तो इम्पे साहब ने द्विभाषिय से अन्तिम बात समझाने को कहा—और उधर गवाह ने कहा—'गो आन'।

आजिमअली—हुजूर, इसके बाद मैंने अपनी छोटी औरत से कहा—मीर की लड़की, मैंने ख्वाब में देखा है कि मैं महाराज नन्दकुमार के मकान पर गया हूँ और वे बुलाकीदास के नाम से एक जाली दस्तावेज बना रहे हैं।

जब इलिएट साहब ने गवाह की बातों को इम्पे को समझाया तब तो सुप्रीम कोर्ट के सुयोग्य जज विमूढ़ हो आजिम के मुह को देखने लगे। पर अब आजिम ने 'गो ऑन' की प्रतीक्षा न कर कहना जारी रखा—

"धर्मावतार, मेरी बात सुनकर मेरी छोटी स्त्री ने कहा—मियां! तुम हमेशा राजा, उमरा साहबों के मकान पर आते-जाते हो, इसी से सपने भी तुम्हें ऐसे ही दीखते हैं।"

जज शून्य हृदय से बयान सुन रहे थे। अन्त में जज चेम्बर्स ने द्विभाषिय से कहा—गवाह से दरियाफ्त करो कि इसने हमारे सामने अभी जो कुछ कहा है वह सब ख्वाब की बात है?

प्रश्न करने पर आजिमअली ने कहा—हुजूर ख्वाब में जो मैंने देखा वह सब सच बयान कर दिया है। तीन चार दिन की बात है, इस ख्वाब की बात मैंने मोहनप्रसाद बाबू से कही थी। उन्होंने चट कहा कि तुम्हें गवाही भी देनी पड़ेगी। मैंने कहा जो देखा है सो कह दूंगा मेरा उसमें क्या हर्ज है। धर्मावतार! मैं कमीना नहीं हैसियतदार आदमी हूं। मेरी छोटी औरत मीर साहब की लड़की है। उनके पिता अब्दुल लतीफ एक जिले के मालिक हैं। और मौलवी अब्दुल रहमान रिश्ते में मेरे साले होते हैं।

आजिम की इस प्रशस्त विरुदावली को सुनकर चैतन्य बाबू से न रहा गया। वे पीछे से बोल उठे—चचा, आज तो तुम बड़े आली खानदान बन

गये। लाल बाजार की रहमानी की लडकी के साथ निकाह पढवाकर कहते हो कि मौलवी लतीफ हुसैन मर ससुर हैं।

आजिमअली—(क्रोध स) दुहाई है धर्मावतार की दिन-दहाडे सरे-इजलास एक शरीफ की इज्जत ली गई है। मैं इस पर तौहीन का मुकद्दमा चलाऊँगा। इसका इतना मकदूर कि मेरी पाकदामन सास साहबा का यह लाल बाजार की रहमानी कह। धर्मावतार! मेरी साम अब परदानशीन है। वे जाग अनकरीब आठ साल तक लाल बाजार म कुछ-कुछ बेपरदे थीं। पर छह महीन हुए मौलवी साहब न उनके साथ निकाह पढवाकर उन्ह अब परदानशीन बना लिया है। एक ऐस इज्जतदार घरान की पर्दानशीन औरत की शान म एसी वाहियात जबाब निकालना सरासर जुम मे दाखिल है। अदालत मेरी फरियाद सुन।

गवाह के रग-ढग देखकर सारी अदालत सन्नाटे म आ गई। अन्त म इम्प साहब न महाराज के बरिस्टर फरार साहब से पूछा, क्या आपको इस गवाह की साक्षी प्रमाण रूप मे ग्रहण करन म कुछ उज्र है?

बैरिस्टर न कहा— जब गवाह स्वप्न की बात कह रहा ह तो मैं नहीं समझ सकता कि उसकी साक्षी कैसे प्रमाणभूत मानी जाय।

इम्प—मि फरार! इस गम मुल्क मे पूरी पूरी नींद शायद ही किसी को आती हो। प्राय लोग अद्ध-तन्द्रा अवस्था मे रहते है। एसी दशा मे यदि कोई मनुष्य आँख कान आदि इन्द्रिया द्वारा कोइ विषय ग्रहण कर तो उसके कथन को लाड थारलो साक्षी रूप स ग्रहण किय जान म कोई आपत्ति उपस्थित न करेंगे।

बरिस्टर—मुझे लाड थारलो के मतामत मे कुछ मतलब नहीं यदि आप इसकी गवाही प्रमाण मानना ही चाहते है तो मेरा भी उज्र दज कर लिया जाय।

न्याय मूर्ति इम्पे साहब ने मातहत तीनो जजो से सलाह करके आजिम-अली की गवाही प्रमाण स्वरूप ग्रहण कर ली और आसामी क बरिस्टर को सफाई क गवाह पेश करने की आज्ञा दी। बरिस्टर न कहा कि आसामी पर जुम प्रमाणित ही नहीं हुआ तब सफाई कैसी? आसामी निर्दोष है। उसे रिहाई मिलनी चाहिए।

जज ने कहा – अपराध सिद्ध हुआ है आप सफाई पेश न करेंगे ता हमे जूरियो को समझाने के लिए सग्रहीत प्रमाणा की आलोचना करनी पडेगी।

जिस दस्तावेज के सम्बन्ध म झगडा उठा था उसकी यहा पर सक्षिप्त रूप से व्याख्या कर देना अप्रासगिक न होगा। मुर्शिदाबाद म एक भारी राजनैतिक विद्वान पडित बापूदेव जी शास्त्री रहते थे। नवाब अली-वर्दीखाँ उनका बडा सत्कार करते थे। और उनसे सदा राज-काज म परामश लेत रहत थे। इन शास्त्री जी के पास महाराज न 12 वप की उम्र तक आठ वर्ष सस्कृत शास्त्रो की शिक्षा पाई थी। जब महाराज 22 वप के हुए, तब नवाब अलीवर्दीखाँ न पडित जी के अनुरोध स उन्ह महिप-दल परगने का लगान वसूल करने पर नियुक्त कर दिया। धीर धीर वे अपनी योग्यता स हुगली के फौजदार बन गए। इस पर उन्हान लगभग 3 लाख रुपये कमाए। इसके बाद गुरु दशन की अभिलाषा स एक बार व मुर्शिदाबाद गए, उनकी कन्या क लिए, जिस वे अपनी धम भगिनी करके मानते थे, कुछ आभूषण साथ ले गए। परन्तु जब व मुर्शिदाबाद पहुचे, तब उन्ह खबर मिली कि गुरु-पत्नी का देहान्त हो चुका है, और उनकी लडकी विधवा हो गई है। ऐसी दशा मे उन्हान आभूषणो क लाने की चर्चा तक गुरुजी म नही की और उन गहनो को अपने परिचित बुलाकी-दास महाजन की दुकान म अमानत की तरह जमा करा दिया और मन म सकल्प किया कि किसी अवसर पर उन्ह वेचकर उनस जो रुपये आवेंगे उन्हें प्रमदा देवी को दे देंगे।

दैवयोग स मीरकासिम और अग्रेजा के युद्ध मे मुर्शिदाबाद लूट लिया गया। बुलाकीदास का भी सवस्व लूटा गया। बुलाकीदास धर्मात्मा थे। उन्होंने महाराज को उनकी अमानत के बदले मे 48021 रुपये का तमस्सुक लिख दिया। बुलाकीदास मर गए, और उसी दस्तावेज को जाली करार देकर महाराज पर मुकदमा चलाया गया।

खैर, महाराज की ओर से सफाई की गवाहियाँ पेश हुई। बडे बडे लोगो न गवाहियाँ दी। गवाही समाप्त हो चुकने पर जजा न जूरियो को मुकदमा समझाया और उस पर एक लम्बी वक्तृता भी दी। वक्तृता

करने से पत्र का महत्त्व बढ जायेगा। इसमे लिखी हुई बातें झूठी और जजो का अपमान करने वाली है। मेरी राय म वह पत्र शेरिफ साहब को द दिया जाय, ताकि वे इसी आम जगह म सब लागो के सामने किसी जल्लाद के हाथ स जलवा दें। दूसरे दिन सामवार को वह पत्र चौराहे पर जल्लाद के हाथ से जलवा दिया गया।

दण्डाना मुनान क बाइसवें दिन महाराज को फांसी लगाई गई। वह समय उन्हान ईश्वराधना मे व्यतीत किया। फांसी के दिन बडे सवेरे जब महाराज पूजा म बैठे थे, एकाएक कोठरी का द्वार खुला और सामन कलक्ते के मेकरब साहब शरीफ दीख पडे। उन्हाने द्विभाषिए स कहा—महाराज म निवदन करो कि आज हम आपस अन्तिम भेंट करन आये हैं। हम ऐसी चेष्टा करेंगे कि ऐस क्रूर समय म (फांसी म) महाराज को अधिक कष्ट न हो। मुझे इस घटना म शरीक होन का दुख है। महाराज विश्वास रखे कि अन्तिम समय तक मैं उनके साथ रहूँगा और उनकी अभिलाषाओ का पूरी करन की चेष्टा करूँगा।

महाराज न उन्हे धन्यवाद दत हुए कहा— मैं आशा करता हूँ कि मेरे कुटुम्बियो पर भी आपकी ऐसी कृपा बनी रहेगी। प्रारब्ध अटल है, आप मेरा सलाम कौंसिल के सभ्यो को कहना।

मेकरब लिखत है— बात करत वक्त महाराज न सांस भरते थ, न उदास मालूम हाते थे, और न उनका कण्ठ अवरुद्ध दिखलाई पडता था। उनका चेहरा गम्भीर था, उस पर विषाद का कुछ भी चिह्न न था। महाराज की दृढता देखकर मेकरब साहब अधिक देर तक न ठहर सके। बाहर आन पर जेलर ने कहा—जब से महाराज के मित्र उनस मिलकर गय हैं, तब स बराबर अपन हिसाब किताब की जाच-पडताल कर रह है और नोट लिख रह हैं।

फांसी का समय 6 बजे प्रात काल था। मेकरब साहब ठीक समय म आधा घण्टा पूव जल गये। वहाँ फांसी का सब सामान ठीक था। अंग्रेजो की अमलदारी म ब्राह्मण को फांसी लगन का यह प्रथम ही अवसर था। हजारो मनुष्य देखन आय थ। उन सबकी आंखो मे आंसू झलक रह थे। खबर पाकर महाराज उतरकर नीचे आये। इस समय भी उनका मुख

प्रसन्न था। शेरीफ साहब के बैठने पर वे भी एक कुर्सी पर बैठ गए। इतने में किसी ने घड़ी जेब से निकाल कर देखी। यह देख महाराज तत्काल उठ खड़े हुए और बोले मैं तैयार हूँ। पीछे घूमकर देखा तो तीन ब्राह्मण खड़े थे। वे उनका मृत शरीर लेने आये थे। महाराज ने उन्हें छाती से लगाया। महाराज प्रसन्न थे, पर ब्राह्मण फूट फूट कर रो रहे थे।

मेकरब ने घड़ी निकालकर कहा—समय तो हो गया किन्तु जब तक आप न कहेंगे तब तक यह पापिनी क्रिया आरम्भ न की जायगी। एक घंटे तक सब चुप बैठे रहे। बीच-बीच में महाराज कुछ बातचीत करते रहे और माला फेरते रहे इसके बाद महाराज उठे, शेरीफ की तरफ देखा और दोनों चल दिये। जेल के फाटक पर पालकी तैयार थी। महाराज पालकी पर सवार होकर जेल की तरफ चले। शेरीफ और डिप्टी शेरीफ पालकी के पीछे-पीछे चल रहे थे। भीड़ बहुत थी पर दंगा फसाद का कुछ लक्षण न था। टिकटी के पास पहुँचकर महाराज ने कुछ ब्राह्मणों के न आने के विषय में पूछा। महाराज उनके विषय में पूछ ही रहे थे कि वे भी आ गये। उनसे एकान्त में बात करने को मेकरब साहब ने अन्य अफसरों को हटाना चाहा, परन्तु महाराज ने उन्हें रोककर कहा—मैं सिर्फ बच्चों और घर की स्त्रियों के सम्बन्ध में उनसे कुछ कहना चाहता हूँ। इसके बाद उन्होंने कहा—"जो ब्राह्मण मेरी मृत-देह ले जायेंगे, उन्हें शेरीफ साहब अपनी निगरानी में रख लें। उनके सिवा कोई मेरे शरीर का स्पर्श न करे।"

शेरीफ ने पूछा—क्या आप अपने मित्रों से मिलना चाहते हैं?

महाराज ने कहा—मित्र तो बहुत हैं, पर उनसे मिलने का न यह स्थान है न समय।

शेरीफ ने फिर पूछा—फाँसी पर चढ़कर महाराज फाँसी का तख्ता हटाने का इशारा किस प्रकार देंगे?

महाराज ने कहा—हाथ हिलाते ही तख्ता सरका दिया जाय।

शेरीफ ने कहा—किन्तु नियमानुसार आपके हाथ तो बाँध दिये जायेंगे, आप पैर हिलाकर सूचना दे दें।

महाराज ने स्वीकार किया।

शेरीफ ने महाराज की पालकी को फाँसी के तख्ते तक लाने की आज्ञा

न्दी, पर महाराज पालकी छोडकर पैदल ही चल दिये। तख्ते के पास पहुँच कर उन्होंने दोनों हाथ पीछे कर दिये। अब उनके मुख पर कपड़ा लपेटने का समय आया। उन्होंने अंग्रेज के हाथ से कपड़ा लपेटने में आपत्ति की। शेरीफ ने एक ब्राह्मण सिपाही को रूमाल लपेटने का हुक्म दिया। महाराज ने उसे भी रोका। महाराज का एक नौकर उनके पैरों में लिपट रहा था, उसी को महाराज ने आज्ञा दी। इसके बाद वे चबूतरे पर चढ़कर अकड़कर खड़े हो गए। मेक्रब साहब लिखते हैं

"मैं खिन्न हो अपनी पालकी में घुस गया किन्तु बैठने भी न पाया था कि महाराज ने पूर्व-सूचना के अनुसार पैर का इशारा दे दिया, और तख्ता खींच लिया गया। बात की बात में महाराज के प्राण-पखेरू उड़ गये। नियत समय तक शव रस्सी पर लटका रहा, फिर ब्राह्मणों के हवाले कर दिया गया।"

ज्योंही महाराज के गले में फंदा डालकर तख्ता खींचा गया त्योंही लोग चीत्कार मार-मारकर भागने लगे। वे भागते जाते थे और कहते जाते थे — ब्रह्महत्या हुईल। कलिकाता अपवित्र हुईल। देश पापे परिपूर्ण हुईल। फिरिंगेर धर्माधर्म ज्ञान नाई !!! ब्राह्मणों ने उस दिन निर्जल व्रत रखा। बहुत से ब्राह्मण कलकत्ते को छोड़कर अन्यत्र रहने लगे। नगर में हाहाकार मच गया। उसकी गलियाँ लोगों के करुण-क्रन्दन से प्रतिध्वनित हो उठीं।

अट्ठारह

हेस्टिंग्स तीन वर्ष गवर्नर और दस वर्ष गवर्नर जनरल रहा। कम्पनी सरकार की अर्थलोलुपता को पूरी करने के लिए उसे अपने आदर्श भुला देने पड़े, फिर वह स्वयं भी प्रजा का शोषणकर्ता बना। उसने लाखों रुपया की अपने लिए भी रिश्वतें ली और मालामाल होकर इंग्लैंड गया। महाराज नन्दकुमार को फांसी देने से उसके अपयश में और भी वृद्धि

हुई। इंगलैंड जाकर उसके ऊपर रिश्वतें लेने और नन्दकुमार पर झूठा केस चलाने के केस चले, परन्तु अन्त में उन कार्यों को अंग्रेजी राज्य के हित में उचित समझकर उसे क्षमा कर दिया गया। क्लाइव और हेस्टिंग्स दोनों ही को अंग्रेजी राज्य की भारत में नींव जमाने का श्रेय प्राप्त है।

हेस्टिंग्स की भाँति क्लाइव ने भी प्रेम व्यापार किया था। जब वह इंगलैंड में रह रहा था, उसका मन एक सुन्दर अंग्रेज युवती की ओर आकर्षित हुआ। यह आकर्षण बढ़ता गया, परन्तु वह युवती शीलवती और पवित्र वृत्ति की स्त्री थी। क्लाइव ने जब जब उससे प्रणय निवेदन करना चाहा उसने अवज्ञा से ठुकरा दिया। क्लाइव हताश नहीं हुआ, वह सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगा। यद्यपि उसका प्रणय और भी युवतियों से चलता था परन्तु इस युवती की प्रभावशाली सौम्यता ने क्लाइव को व्याकुल बना दिया।

क्रिसमिस का त्यौहार आया। क्लाइव ने सुन्दर फूलों का एक गुच्छा और पत्र देकर अपने नौकर को उस महिला के घर भेजा और कहा कि यह पत्र और गुच्छा उसकी मेज पर रखकर चुपचाप लौट आना, कुछ कहना नहीं। नौकर गुच्छा रखकर लौट आया।

प्रातःकाल स्नान के बाद शृंगार करते समय युवती ने अपनी शृंगार मेज पर वह फूलों का गुच्छा और पत्र देखा। युवती ने पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था—

जादी को आरम्भ में व्यापार के काम में नियुक्त किया गया था। उस काम में अनन्त धन-वैभव प्राप्त किया जा सकता था, किन्तु जादी में युद्ध के लिए स्वाभाविक योग्यता और असाधारण प्रवृत्ति मौजूद थी। इसलिए एक वीर के सदृश धन वैभव का तिरस्कार करते हुए जादी ने अपनी भीतरी प्रेरणा से उन वीरों और मनुष्य जाति के उपकारकों के यशस्वी जीवन में प्रवेश किया, जो कि बादशाहों और कौमों को विजय करके अपने पराजितों को सुख और शान्ति प्रदान करते हैं। युद्ध के मैदान में जादी की सबसे पहली सफलता का परिणाम यह हुआ कि उसने एक धन सम्पन्न प्रान्त विजय कर लिया। इसके बाद उसने एक युद्ध-प्रेमी और

थी। 4 हजार ता माली थे। रसाई का खच ही 2-3 हजार रुपय रोजाना का था। सैकडा वावर्ची थ। शाहजादे वजीरअली की शादी मे 30 लाख रुपय खच किय थे। वह सिफ दाता और उदार ही नही, एक योग्य शासक और गुणग्राही भी थे। मीर, सौदा और हसरत आदि उदू के नामी कवि थे जो साल म सिफ एक बार दरबार मे हाजिर होकर हजारा रुपय पात थे। सगीत और काव्य के ऐसे रसिक थे कि एक एक पद पर हजारो रुपये बरसाय जात थे।

वारेन हेस्टिग्स का रुपय की वडी जरूरत थी। अग्रेज कम्पनी ने नवाब स कई वडी रकमे वार-बार तलव की थी। विवश हो नवाव न चुनार के किले मे हस्टिंग्स स मुलाकात की और बताया कि केवल सना की मद्द मे ही मुझे एक वडी रकम देनी पडती है।

अन्त मे हस्टिग्स न यह निश्चय किया कि चूकि स्वर्गीय नवाब शुजाउद्दौला मत्यु के समय मे अपनी मा और विधवा बेगम को वडे-वडे खजाने दे गया है, और फैजाबाद के महल भी उन्ही के नाम कर गया है, तथा ये बेगम अपन असख्य सम्बन्धिया, बाँदिया और गुलामा के साथ वही रहती थी—अत उनस यह रुपया ले लिया जाय।

आसफउद्दौला यह शत सुनकर बहुत लज्जित हुआ, पर लाचार हो उस सहमत हाना पडा, और इसका प्रबन्ध अग्रेज-अधिकारी स्वय कर लेंगे, यह भी निश्चय हो गया।

मत नवाब शुजाउद्दौला अपनी इन बेगमा को अग्रेजो की सरक्षकता मे छोड गय थे। परन्तु उस मनुष्यता को भुलाकर और उनका रुपया हडपन का सकल्प करके इन विधवा बेगमा पर काशी के राजा चेतसिंह के साथ विद्रोह म सम्मिलित हान का अभियोग लगाया गया, और सर इलाइजाह इम्पे वहारा की डाक बठाकर इस काम के लिए कलकत्ते स तजी के साथ रवाना हुआ। लखनऊ पहुँचकर उसने गवाहो के हलफनाम लिय और बेगमा को विद्रोह मे सम्मिलित होन का फैसला करके कलकत्ते लौट गया।

फैजाबाद क महला को अग्रेजी फौजा न घेर लिया—और बेगमात का हुक्म दिया कि आप कैदी ह, और आप तमाम जेवरात, सोना, चाँदी, जवाहरात दे दीजिए।

जब उन्होंने इकार किया, तो बाहर की रसद बन्द कर दी गई, और वे भूखा मरने लगी। अन्त मे बेगमा ने पिटारा पर पिटार और खजानो पर खजान देना शुरू कर दिया। यह रकम एक करोड रुपये के अनुमानत होगी।

इस घटना स अवध भर मे तहलका मच गया, और आसफउद्दौला का दिल टुकडे-टुकडे हो गया।

इसके बाद हस्टिंग्स न कनल हैनरी को नवाब क यहाँ भेजा और उस बहराइच तथा गोरखपुर जिला का कलक्टर बनवा दिया। उसने उन जिला पर भयानक अत्याचार किया, और तीन वष म अन्दर ही पैंतालीस लाख रुपया कमा लिया। नवाब न तग होकर उस बर्खास्त कर दिया, पर हस्टिंग्स न फिर उस नवाब क सिर मढ़ना चाहा।

नवाब न लिखा —"मैं हजरत मुहम्मद की कसम खाकर कहता हूँ कि यदि आपने मेरे यहाँ किसी काम पर कनल हैनरी को भेजा तो मैं सल्तनत छोडकर निकल जाऊँगा।"

सत्रह

जब वारेन हस्टिंग्स की स्वच्छन्दता नष्ट हुई और कौंसिल क साथ मशवरा करके शासन करने की कम्पनी न आज्ञा दी, तब महाराज नन्दकुमार ने सर फिलिप फ्रांसिस द्वारा एक आवेदन-पत्र कौंसिल म भेजा। उसम उन्होंने लिखा था —

हस्टिंग्स साहब जैसे शत्रु की निन्दा करके आत्मरक्षा क लिए मैं ईश्वर की कृपा पर ही भरोसा करता हूँ। मैं आत्मसमर्पण को प्राण स भी बढ़कर मानता हूँ। और मैं यदि अब भी अपनी रक्षा न करूँ और मौन रहूँ तो मुझे और भी अधिक विपत्तियाँ झेलना पड़ेगा, अत मैं लाचार होकर यह सब प्रकट करता हूँ।

इस आवेदन-पत्र म महाराज न दिखाया कि हस्टिंग्स साहब न

354105 रुपये का गबन किया है और वे महाराज के सर्वनाश का षडयंत्र रच रहे हैं। महाराज के शत्रु जगतचंद्र, मोहनप्रसाद कमालुद्दीन आदि इस पापगोष्ठी में सम्मिलित हैं।

जब यह पत्र कौंसिल में पढ़कर सुनाया गया तो हेस्टिंग्स साहब का चेहरा फक हो गया। वे क्रोध में मतवाले होकर मेम्बरों को सख्त बात कहने और महाराज को गालियाँ देने लगे। उस दिन कौंसिल बरखास्त हो गई। दो दिन पीछे जब कौंसिल बैठी तो महाराज का एक और पत्र खोला गया, जिसमें उन्होंने लिखा था कि कौंसिल यदि आज्ञा दे तो मैं स्वयं कौंसिल आकर अपनी बातों का प्रमाण पेश करूँ और घूस के रुपया की रसीद दाखिल करूँ।

पत्र सुनकर कर्नल मॉनसून ने प्रस्ताव किया कि महाराज को कौंसिल में उपस्थित होकर सबूत पेश करने की आज्ञा देनी चाहिए। यह सुनकर गवर्नर साहब के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने कहा — 'यदि नन्दकुमार हमारा अभियोक्ता बनकर कौंसिल में आएगा तो हम इस अपमान को प्राण जाने पर भी नहीं सह सकेंगे। हमारी अधीनस्थ कौंसिल के सदस्य हमारे कार्यों के विचारक बनकर यदि एक सामान्य अपराधी के समान हमारा विचार करेंगे तो हम इस बोर्ड में बैठेंगे ही नहीं।" बावल साहब ने सलाह दी कि इस मामले की जांच सुप्रीम कोर्ट द्वारा कराई जाय।

बहुत वाद विवाद के अनन्तर बहुमत से महाराज का कौंसिल में बुलाया जाना निश्चित हुआ। गोरे गवर्नर पर काला आदमी दोषारोपण करे, यह एक अनहोनी बात थी। हेस्टिंग्स साहब उठकर चल दिये। पर तीनों सदस्यों ने जनरल क्लीवरिङ्ग को सभापति बनाकर महाराज को कौंसिल में बुलाया और उनके प्रमाण सुनकर एकमत से हेस्टिंग्स को अपराधी ठहराया। साथ ही उन्होंने यह भी निश्चय किया कि उन्हें घूस के रुपये फौरन कम्पनी के खजाने में जमा करा देने चाहिए। परन्तु हेस्टिंग्स ने इस प्रस्ताव का तिरस्कार कर दिया, इस पर कम्पनी की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दावा दायर करने के लिए सब कागज कम्पनी के सालिसिटर जनरल के पास भेज दिये गये। सॉलिसिटर ने उन्हें देख कर जो राय

कायम की थी वह यह है—

हमारी समझ मे कलकत्ते की सुप्रीम कोट मे कम्पनी की ओर स हस्टिग्स साहब पर नालिश दायर की जानी चाहिए। ऐसा करने पर बगाल के सब झगडे एकदम तय हो जायेंगे और कम्पनी को भी अधिक लाभ होगा।

हस्टिग्स साहब न यह रग-ढग दखकर चीफ जस्टिस इम्प साहब की कोठी म एक गुप्त मत्रणा की। उसक अगले दिन ही अचानक मोहनप्रसाद न सुप्रीम कोट मे हलफिया बयान दाखिल करके एक जाल का दावा महाराज नन्दकुमार पर खडा कर दिया। दाव मे कहा गया था कि महाराज नन्दकुमार न जाली दस्तावेज बनाकर मत बुलाकीदास की रियासत स रुपये वसूल किय है। बयान दाखिल होत ही महाराज नन्दकुमार की गिरफ्तारी के लिए कलकत्ते के शेरिफ क नाम सुप्रीम कोट के विचारको ने वारण्ट निकाल दिया और तत्काल ही महाराज नन्दकुमार गिरफ्तार करके जेल मे डाल दिये गये। अपन पत्र म भण्डाफोड करते हुए महाराज ने जो भय प्रकट किया था, वह सम्मुख आ गया।

महाराज ब्राह्मण थे, इसलिए उन्होंने जिस स्थान पर ईसाई मुसलमान आते जाते थे, वहाँ सन्ध्या वन्दन और खान-पान से इन्कार किया। अडसठ घण्टे वे बराबर निजल रह। जब उनके वकील न उन्ह किसी शुद्ध स्थान मे नजरबन्द करने की अर्जी दी, तब बगाल के पण्डितो को बुलाकर अग्रेजो ने व्यवस्था ली कि महाराज की जाति जेल मे खान-पान से नष्ट हो सकती है या नही? हेस्टिग्स के नौकर मोदी-बाबू ने झटपट मुर्शिदाबाद को आदमी दौडाकर अपने पडित हरिदास तर्क-पचानन को कलकत्ते बुला भेजा। उन्होन तथा अन्य ब्राह्मणो न आत्म मर्यादा को तिलाजलि दे व्यवस्था दी कि जेल मे भोजन करने से ब्राह्मण की जाति नष्ट नही होती और अगर थोडा-बहुत दोष होता भी हो तो वह 'नही' के बराबर है, और जेल मे छुटकारा पाने के बाद व्रत आदि रखन स उसका प्रायश्चित हो जाता है। एक देवता न तो यहाँ तक कह दिया कि ब्राह्मण की जाति आठ बार मुसलमान का भात खाने के बाद नष्ट होती है। उपरोक्त व्यवस्था सुनकर इम्पे साहब न महाराज की दरखास्त नामजूर कर दी, परन्तु जब

महाराज न भोजन मे इन्कार कर दिया और वद्ध होन के कारण उनके प्राण जाने का भय हुआ, तब जेल के आगन म उनके लिए अलग खीमा खडा किया गया। इस बीच म अभियोग तैयार करके धूमधाम से चलाया गया।

1775 की तीसरी जून को कलकत्ता म अग्रेजी न्याय की कलरूप अदालत बैठी, और बेईमान जज पीली पोशाक पहनकर आ डटे। महाराज अभियुक्त के वेश मे सामन खडे हुए और उनके गुमाश्ता चैतन्यनाथ एव उनके दास राय राधाचरण बहादुर और महाराज के बैरिस्टर फरार साहब उनके पीछे खडे हुए। दूसरी ओर फर्यादी के गवाह कान्त पोद्दार आदि हेस्टिग्स के सहचर दशकों की सीट पर आ बठे। महाराज पर जालसाजी के बीस अपराध लगाये गय। महाराज न अपने को निर्दोष बतलाया।

उनस पूछा गया—"आप किसस अपना विचार कराना चाहत ह?"

महाराज ने कहा—"परमेश्वर हमारा विचार कर। हमार देशवासी, हमारी श्रेणी क जन हमारा विचार करें।" पर उस समय देशी लोगो का अग्रेजो के न्यायालय मे वैसा सम्मान न था अत 12 जूरी बनाकर विचार शुरू हुआ।

कोट के प्रधान द्विभाषिए विलियम चेम्बर किसी तरीके से गर हाजिर कर दिय गये और गवनर के कृपा-पात्र ईलिएट साहब को उनका काम सौंपा गया।

महाराज क बरिस्टर न आपत्ति की तो इम्प साहब न उस घुडक दिया। क्राक आफ दी क्राउन के अभियोग पत्र पढने पर फरियादी के गवाहो की जवानबन्दी आरम्भ हुइ। पहला गवाही मोहनलाल की हुइ। यह वही आदमी था, जिसकी पहली दरख्वास्त का मसौदा स्वय कोट क जजो ने बनाया था। पर यह बात फैसला हो चुकन पर प्रमाणित हुई। दूसरा साक्षी कमालुद्दीन खा की हुइ। उसन कहा "महाराज न मेरे नाम की मुहर मुझस मागी थी, आज 14 वष हुए मुझे वह वापस नही मिली। जब के दस्तावेज दिखान पर उसने अपनी मुहर की छाप को भी पहचान लिया। उसन यह भी कहा कि इस बात की खबर ख्वाजा पद्रिक सदरुद्दीन और मेर

नौकर हुसैनअली को भी है।"

दस्तावेज पर मुहर मे अब्दुन कमालुद्दीन की छाप थी। जिरह म जब उमम पूछा गया कि तुम्हारा नाम ता कमालुद्दीन खाँ है, यह मुहर कैसी ? तब गवाह न कहा – धर्मावतार, मैं कभी झूठ नहीं बोलूगा। मैं दिन म पाँच बार नमाज पढता हूँ, मरा नाम पहले अब्दुल कमालुद्दीन ही था। पर तब स अब मेरी हैसियत बढ गई है इमलिए मैंन अपन नाम के आग का टुकडा छोडकर नाम के पीछे खाँ लगा लिया है।"

जिरह मे जब पूछा गया कि तुम्हे कैसे मालूम हुआ कि तुम्हारा नाम गवाहा म दज है ? तब उसन कहा —"महाराज न मुझस खुद जिक्र किया था कि हमन तुम्हार नाम की मुहर गवाहा म लगा दी है जरूरत पडे ता इमके सबूत मे तुम्हे गवाही दनी पडेगी। पर मैंन झूठी गवाही स माफ इन्कार कर दिया था। अल्ला-अल्ला ! भला मैं झूठी गवाही दे सकता था ?'

हुसनअली ख्वाजा पट्रिक और सदरुद्दीन न भी उमकी बात की पुष्टि की। दस्तावेज पर अब्दुल कमालुद्दीन शिलावत सिंह और माधवराव क दस्तखत थे। कमालुद्दीन की गवाही तो हो चुकी थी, बाकी दाना मर चुके थे। शिलावतसिंह के दस्तखत पहचानन को राजा नवकृष्ण आय थे। य कायस्थ थे। इन्होंने शपथपूर्वक कहा कि य शिलावतसिंह के दस्तखत नहीं है।

इतनी साक्षी हाने पर भी मामला जारदार नहीं हुआ। वादी मोहन प्रसाद नौ बार और उसका गुमाश्ता कृष्ण जीवनदास चौबीस बार गवाहा क कटघरे म खडे किय गय। बार बार जिरह किये जान पर कृष्णजीवन न झुझलाकर कहा—"पद्म मोहनदास क साथ का लिखा एक इकरारनामा बुलाकीदास न स्वय लिखा था उसम बुलाकीदास ने महाराज के 1765 मे 48021 रुपये के एक तमस्सुक की बाबत साफ लिखा था।'

कृष्णजीवन के इस इजहार म कोर्ट क जजा और हेस्टिम्स के चेहरा का रग फक हो गया। पर इम्प साहब न गम्भीरता से कहा—' कृष्णजीवन न अब तक जो गवाही दी थी, वह करारेपन स दी थी, पर इम इकरारनामे की बात कहती बार उमका कण्ठ अवरुद्ध हुआ है। निस्सन्देह पद्ममोहन

ने महाराज नन्दकुमार की साजिश से एक इकरारनामा तैयार कर लिया था।"

उधर कान्त पाद्दार, मुंशी नवकृष्ण, गंगा गोविन्दसिंह राजवल्लभ और स्वयं हेस्टिंग्स साहब नए-नए साक्षी तैयार कर रहे थे। और किसी तरह काम बनता न देखकर, उन्होंने आजिमअली को गवाह के कटघरे में लाकर खड़ा किया।

आजिमअली नमक की कोठी के एजेण्ट एक अंग्रेज का खानसामा था। क्लाइव की प्रतिष्ठित सभा के सभ्य आवश्यकता होने पर इसे सरकारी गवाह बनाते थे, क्योंकि उस समय सरकारी वकील नहीं होता था। जब किसी पर नमक की चोरी का अपराध लगाया जाता था तो आजिमअली गवाह बनता था। पर अब यह सभा बन्द हो गई थी। आजिमअली ने अब एक औरत से निकाह पढ़ाकर लालबाजार में जूते की दूकान खोल ली थी।

तीसरी जून से सबूत के गवाहों की जबानबन्दी आरम्भ हुई थी और 11वीं जून को सबूत की गवाही समाप्त हुई थी। फिर भी 12वीं जून को आजिमअली गवाह पेश किया गया। यह कार्यवाही बेजाब्ता थी, पर इस मुकदमे में जाब्ता ही क्या था ?

गवाहों के कटघरे में आजमअली को खड़ा होते देख महाराज के गुमाश्ते और उनके दामाद के देवता कूच कर गये। वह एक सिद्धहस्त गवाह था। वे समझ गये, बस यह चश्मदीद गवाह बनकर आया है। चैतन्य बाबू ने इस समय धूर्तता से काम लिया। उन्होंने हाथ के इशारे से आजिम को सौ, फिर दो सौ, फिर तीन सौ रुपये देने का इशारा किया, पर आजिम न माना। वह हलफ उठाकर कहने लगा—

"मैं महाराज नन्दकुमार का मकान जानता हूँ। उनके गुमाश्ता चैतन्यनाथ ने मेरी दूकान से जूता लिया था। मैं सन 1769 के जुलाई मास में चैतन्य बाबू से जूतों के दामों का तकाजा करने महाराज नन्दकुमार के मकान पर गया। उसके दस दिन पहले बुलाकीदास की मृत्यु हो गई थी। वहाँ मैंने चैतन्य बाबू को काम में फँसे हुए पाया। पूछने पर उन्होंने कहा —इस समय महाराज एक जाली दस्तावेज बना रहे हैं, उसी में मैं इस

आजिमअली—हुजूर, बस इसके बाद ही घर के भीतर मुर्गी वाली और मेरी नींद टूट गई। मेरी छोटी स्त्री ने कहा—मियाँ ! आज क्या बिस्तर से नहीं उठोगे ? देखो, कितनी धूप चढ़ गई है।

यह सुनते ही द्विभाषिय ईलिएट साहब ने आजिमअली के मुह की ओर देखा। सहसा उनके मुह से निकल पड़ा—आह !

इधर तो इम्पे साहब ने द्विभाषिये से अन्तिम बात समझाने को कहा —और उधर गवाह ने कहा —'गो आन'।

आजिम अली—हुजूर, इसके बाद मैंने अपनी छोटी औरत से कहा—मीर की लड़की, मैंने ख्वाब में देखा है कि मैं महाराज नन्दकुमार के मकान पर गया हूँ और वे बुलाकीदास के नाम से एक जाली दस्तावेज बना रहे हैं।

जब इलिएट साहब ने गवाह की बातों को इम्पे को समझाया तब तो सुप्रीम कोर्ट के सुयोग्य जज विमूढ़ हो आजिम के मुह को देखने लगे। पर अब आजिम ने 'गो आन' की प्रतीक्षा न कर कहना जारी रखा —

"धर्मावतार, मेरी बात सुनकर मेरी छोटी स्त्री ने कहा—'मियाँ ! तुम हमेशा राजा, उमरा, साहबों के मकान पर आने-जाते हो, इसी से सपने भी तुम्हें ऐसे ही दीखते हैं।"

जज शून्य हृदय से बयान सुन रहे थे। अन्त में जज चेम्बर्स ने द्विभाषिये से कहा—गवाह से दरियाफ्त करो कि इसने हमारे सामने अभी जो कुछ कहा है, वह सब ख्वाब की बात है ?

प्रश्न करने पर आजिमअली ने कहा—हुजूर, ख्वाब में जो मैंने देखा, वह सच-सच बयान कर दिया है। तीन चार दिन की बात है इस ख्वाब की बात मैंने मोहनप्रसाद बाबू से कही थी। उन्होंने चट कहा कि तुम्हें गवाही भी देनी पड़ेगी। मैंने कहा जो देखा है सो कह दूगा, मगर उसमें क्या हर्ज है। धर्मावतार ! मैं कमीना नहीं, हैसियतदार आदमी हूँ। मेरी छोटी औरत मीर साहब की लड़की है। उनके बिरादर अब्दुल लतीफ एक जिले के मालिक है। और मौलवी अब्दुल रहमान रिश्ते में मेरे साले होते है।

आजिम की इस प्रशस्त विरुदावली को सुनकर चैतन्य बाबू से न रहा गया। वे पीछे से बोल उठे—चचा, आज तो तुम बड़े आली खानदान बन

समय फँसा हूँ।' इसक वाद देखा, महाराज बठक म नाक पर चश्मा चढा कर एक बक्स म स 25-30 मुहर निकालकर उनका नाम जोर-जोर स पढ रह ह। एक मुहर को उन्हान कमालुद्दीन की कहकर चतन्यनाथ को दिखाया भी था।'

आजिम का यह इजहार सुनकर कोट क जजो की आनन्द म बत्तीसी खुल गइ। वे उत्सुकता स कहन लग—'हा आग।'

आजिमअली—हुजूर, इसक बाद तमस्सुक की शक्ल क कागज पर वह मुहर छाप दी गई।

एक जज—कह जाओ, कह जाओ।

आजिमअली—इसके बाद चतन्य बाबू स महाराज न कहा कि जहाँ मुहर लगाई है, उसक पास ही अब्दुल कमालुद्दीन का नाम भी लिख दो।

दूसरा जज—कह जाओ।

आजिमअली—चतन्य बाबू न कमालुद्दीन का नाम लिख दिया।

तीसरा जज—क्या तुम पढ लिख सक्त हो ?

आजिमअली - हुजूर, अब तो आँखो म दिखाई हो कम दता है, पर आग फारसी पढ़ लिख सकता था।

सर इम्प—आग वाला।

आजिमअली—हुजूर, इसक बाद उसी कागज पर महाराज न शिताबतसिंह और माधवराव क नाम भी गवाहो म लिख दिय।

इन इजहार म घबराकर चतन्य बाबू न इशार स एक हजार रुपय का इनाम दिया। तब आजिम न भी इशार म कहा घबराओ मत, सब पर पानी फेर दता हूँ। उधर जज और फरियादी क वकील आतुर होकर — हा आग, हा आग' कहन लग।

आजिमअली — तब काम खत्म होन पर महाराज उस पढ़न लग।

जजो न आनन्दित होकर कहा अच्छा अच्छा, फिर क्या हुआ ?

आजिमअली—बस पढकर महाराज न उस अपन बक्स म रख लिया। तभी हमन सुना कि बुलाकीदास न महाराज का तमस्सुक लिख लिया है।

सब जज —(एक साथ) फिर ! फिर !!

आजिमअली—हुजूर, बस इसके बाद ही घर के भीतर मुर्गी वाली और मेरी नींद टूट गई। मेरी छोटी स्त्री न कहा—मियां! आज क्या विस्तर म नही उठोगे ? देखो, कितनी धूप चढ गई ह।

यह सुनते ही द्विभाषिये इलिएट साहब न आजिमअली क मुह की ओर देखा। सहसा उनके मुह म निकल पडा—आह!

इधर तो इम्पे साहब ने द्विभाषिय म अतिम बात समझाने को कहा —और उधर गवाह म कहा --'गो आन'।

आजिमअली—हुजूर, इसक बाद मैंन अपनी छोटी औरत स कहा — मीर की लडकी, मैंन ख्वाब म देखा है कि मैं महाराज नन्दकुमार क मकान पर गया हूँ और वे बुलाकीदास क नाम म एक जाली दस्तावेज बना रह है।

जब इलिएट साहब ने गवाह की बातों का इम्प को समझाया तब तो सुप्रीम कोट के सुयोग्य जज विमूढ हो आजिम के मुह को देखने लगे। पर जब आजिम न 'गो आन' की प्रतीक्षा न कर कहना जारी रखा —

"धमावतार, मरी बात सुनकर मेरी छोटी स्त्री न कहा— मियाँ! तुम हमेशा राजा, उमरा, साहबों क मकान पर आते जाते हो इसी स सपने भी तुम्ह ऐसे ही दीखत ह। "

जज शून्य हृदय स बयान सुन रह थे। अन्त म जज चेम्बस न द्विभाषिये म कहा—गवाह से दरियाफ्त करो कि इसने हमारे सामने अभी जो कुछ कहा है, वह सब ख्वाब की बाते ह ?

प्रश्न करने पर आजिमअली न कहा—हुजूर, ख्वाब म जो मैंन देखा, वह सच-सच बयान कर दिया ह। तीन चार दिन की बात है इस ख्वाब की बात मैंन मोहनप्रसाद बाबू स कही थी। उन्होंने चट कहा कि तुम्हे गवाही भी देनी पडेगी। मैंन कहा जो देखा है सो कह दूगा मेरा उसम क्या हज है। धमावतार! म कमीना नही, हैसियतदार आदमी हू। मेरी छोटी औरत मीर साहब की लडकी ह। उनक पिदर अब्दुल लतीफ एक जिल के मालिक ह। और मौलवी अब्दुल रहमान रिश्त म मेरे साल होते ह।

आजिम की इस प्रशस्त विरुदावली को सुनकर चैतय बाबू स न रहा गया। व पीछे म बोल उठे—चचा, आज तो तुम बडे आली खानदान बन

गये। लाल बाजार की रहमानी की लडकी के साथ निकाह पढवाकर कहते हो कि मौलवी लतीफ हुसन मेरे ससुर है।

आजिमअली—(क्रोध में) दुहाई है धर्मावतार की दिन दहाडे भरे इजलास एक शरीफ की इज्जत ली गई है। मैं इस पर तौहीन का मुकद्दमा चलाऊँगा। इसका इतना मकदूर कि मेरी पाकदामन सास साहबा को यह लाल बाजार की रहमानी कहे। धर्मावतार! मेरी सास अब परदानशीन है। वे आगे अलबत्ता आठ साल तक लाल बाजार में कुछ कुछ बेपरदे थीं। पर छह महीने हुए मौलवी साहब ने उनके साथ निकाह पढवाकर उन्हें अब परदानशीन बना लिया है। एक ऐसे इज्जतदार घराने की पर्दानशीन औरत की शान में ऐसी वाहियात जबाब निकालना सरासर जुर्म में दाखिल है। अदालत मेरी फरियाद सुने।

गवाह के रंग ढंग देखकर सारी अदालत सन्नाटे में आ गई। अन्त में इम्पे साहब ने महाराज के बैरिस्टर फरार साहब से पूछा, क्या आपको इस गवाह की साक्षी प्रमाण-रूप से ग्रहण करने में कुछ उज्र है?

बैरिस्टर ने कहा—जब गवाह स्वप्न की बात कह रहा है तो मैं नहीं समझ सकता कि उसकी साक्षी क्यों प्रमाणभूत मानी जाय।

इम्पे—मि० फरार! इस गर्म मुल्क में पूरी-पूरी नींद शायद ही किसी को आती हो। प्रायः लोग अर्द्ध-तन्द्रा अवस्था में रहते हैं। ऐसी दशा में यदि कोई मनुष्य आँख कान आदि इन्द्रियों द्वारा कोई विषय ग्रहण करे तो उसके कथन को लार्ड थारलो साक्षी रूप से ग्रहण किये जाने में कोई आपत्ति उपस्थित न करेंगे।

बैरिस्टर—मुझे लार्ड थारलो के मतामत से कुछ मतलब नहीं यदि आप इसकी गवाही प्रमाण मानना ही चाहते हैं तो मेरा भी उज्र दर्ज कर लिया जाय।

न्याय मूर्ति इम्पे साहब ने मातहत तीनों जजों से सलाह करके आजिम-अली की गवाही प्रमाण स्वरूप ग्रहण कर ली और आसामी के बैरिस्टर को सफाई के गवाह पेश करने की आज्ञा दी। बैरिस्टर ने कहा कि आसामी पर जुर्म प्रमाणित ही नहीं हुआ तब सफाई कैसी? आसामी निर्दोष है। उसे रिहाई मिलनी चाहिए।

जज ने कहा – अपराध सिद्ध हुआ है। अब मुकदमे पेश न करने पर हम जूरियों को समझाने के लिए सम्पूर्ण प्रमाणों की आलोचना करनी पड़ेगी।

जिस दस्तावेज के सम्बन्ध में झगड़ा उठा था, उसका यहाँ पर संक्षिप्त रूप से व्याख्या कर देना अप्रासंगिक न होगा। मुर्शिदाबाद में भारी राजनीतिक विद्वान पंडित वासुदेव जी शास्त्री रहते थे। नवाब अलीवर्दीखाँ उनका बड़ा सत्कार करते थे। और उनसे सदा राज-काज में परामर्श लेते रहते थे। इन शास्त्री जी के पास महाराज ने 12 वर्ष की उम्र तक आठ वर्ष संस्कृत शास्त्रों की शिक्षा पाई थी। जब महाराज 22 वर्ष के हुए, तब नवाब अलीवर्दीखाँ ने पंडित जी के अनुरोध में उन्हें महिषदल परगने का लगान वसूल करने पर नियुक्त कर दिया। धीरे-धीरे वे अपनी योग्यता से हुगली के फौजदार बन गए। इस पद पर उन्होंने लगभग 3 लाख रुपये कमाए। इसके बाद गुरु दर्शन की अभिलाषा से एक बार वे मुर्शिदाबाद गए, उनकी कन्या के लिए, जिसे वे अपनी धर्म भगिनी करके मानते थे, कुछ आभूषण साथ ले गए। परन्तु जब वे मुर्शिदाबाद पहुँचे, तब उन्हें खबर मिली कि गुरु पत्नी का देहान्त हो चुका है, और उनकी लड़की विधवा हो गई है। ऐसी दशा में उन्होंने आभूषणों के लाने की चर्चा तक गुरुजी से नहीं की और उन गहनों को अपने परिचित बुलाकीदास महाजन की दुकान में अमानत की तरह जमा करा दिया और मन में संकल्प किया कि किसी अवसर पर उन्हें बेचकर उनसे जो रुपये आवेंगे उन्हें प्रसन्न देवी को दे देंगे।

दुर्योग से मीरकासिम और अंग्रेजों के युद्ध में मुर्शिदाबाद लूट लिया गया। बुलाकीदास का भी सर्वस्व लूटा गया। बुलाकीदास धर्मात्मा थे। उन्होंने महाराज को उनकी अमानत के बदले में 48021 रुपये का तमस्सुक लिख दिया। बुलाकीदास मर गए, और उसी दस्तावेज को जाली करार देकर महाराज पर मुकदमा चलाया गया।

खैर, महाराज की ओर से सफाई की गवाहियाँ पेश हुई। बड़े-बड़े लोगों ने गवाहियाँ दीं। गवाही समाप्त हो चुकने पर जजों ने जूरियों को मुकदमा समझाया और उस पर एक लम्बी वक्तृता भी दी। वक्तृता

समाप्त होने पर जूरी लोग दूसरे कमरे में उठ गए। आधे घण्टे बाद उन्होंने लौटकर कहा—"महाराज नन्दकुमार अपराधी है।"

यह सुनते ही महामति इम्पे साहब ने महाराज को फाँसी का हुक्म दे दिया।

हुक्म सुनाकर महाराज फिर जेल में भेज दिए गये। इस बार खेमे के बजाय एक दुतल्ला मकान उन्हें दिया गया। हजारों लोग शत्रु मित्र उनसे मिलने आते थे। नवाब मुबारकुद्दौला ने कौंसिल की सेवा में एक पत्र भेजा था। उसमें उसने प्रार्थना की थी कि इंग्लैण्ड के बादशाह की आज्ञा आने तक महाराज की फाँसी रोकी जाय।

स्वयं महाराज ने भी जनरल क्लीवरिंग और सर फ्रांसिस के पास एक पत्र इस आशय से भेजा था—

"सर्वशक्तिमान ईश्वर के बाद आप पर मुझे आशा है। मैं ईश्वर के नाम पर नम्रतापूर्वक आपसे अनुरोध करता हूँ कि इंग्लैण्ड के बादशाह की आज्ञा आ लेने तक आप मेरी मृत्यु आज्ञा को मुल्तवी करा दें। हिन्दुओं के मतानुसार मैं न्याय के दिन इस संकट से उबारने के लिए आपको आशीष दूँगा।'

सुप्रीम कोर्ट में फैसला होने पर भी कौंसिल की इतनी शक्ति थी कि वह इंग्लैण्ड से आज्ञा आने तक फाँसी रोक दे। परन्तु कौंसिल के सभ्यों ने इस मामले में पड़ना पसन्द नहीं किया। नवाब मुबारकुद्दौला के अलावा महाराज के भाई शम्भुनाथ राय आदि कई व्यक्तियों ने भी आवेदन-पत्र भेजे, उनका कुछ फल न हुआ।

महाराज को पाँचवीं अगस्त को फाँसी दी गई। किन्तु जनरल क्लीवरिंग ने 18 अगस्त को महाराज का वह पत्र कौंसिल में रक्खा, जिस दिन महाराज का दसवाँ संस्कार हो चुका था। 16 अगस्त को एक मन्तव्य बनाकर उस पत्र की प्राप्ति कौंसिल के कागज पत्रों में से निकाल दी गई।

क्लीवरिंग को जो पत्र उर्दू में महाराज ने लिखा था उसके विषय में हेस्टिंग्स ने कहा कि इसमें जजों के आचरण की आलोचना की गई है, अतः यह जजों के पास भेज देना चाहिए। परन्तु फ्रांसिस साहब ने कहा, ऐसा

करने से पत्र का महत्त्व बढ जायेगा। इसमें लिखी हुई बातें झूठी और जजों का अपमान करने वाली है। मेरी राय में वह पत्र शेरिफ साहब को दे दिया जाय, ताकि वे इसी आम जगह में सब लोगों के सामने किसी जल्लाद के हाथ से जलवा दें। दूसरे दिन सोमवार को वह पत्र चौराहे पर जल्लाद के हाथ मे जलवा दिया गया।

दण्डाज्ञा सुनाने के बाइसवें दिन महाराज को फांसी लगाई गई। वह समय उन्होंने ईश्वराधना मे व्यतीत किया। फांसी के दिन बड़े सवेरे जब महाराज पूजा में बैठे थे, एकाएक कोठरी का द्वार खुला और सामने कलकत्ते के मेकरब साहब शेरीफ दीख पडे। उन्होंने द्विभाषिए से कहा— महाराज से निवेदन करो कि आज हम आपसे अन्तिम भेंट करने आये हैं। हम ऐसी चेष्टा करेंगे कि ऐसे बुरे समय में (फांसी मे) महाराज को अधिक कष्ट न हो। मुझे इस घटना में शरीक होने का दुख है। महाराज विश्वास रखें कि अन्तिम समय तक मैं उनके साथ रहूंगा और उनकी अभिलाषाओं को पूरी करने की चेष्टा करूँगा।

महाराज ने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा— मैं आशा करता हूँ कि मेरे कुटुम्बियों पर भी आपकी ऐसी कृपा बनी रहेगी। प्रारब्ध अटल है, आप मेरा सलाम कौंसिल के सभ्यों को कहना।

मेकरेब लिखते हैं — बात करते वक्त महाराज न साँस भरते थे न उदास मालूम होते थे, और न उनका कण्ठ अवरुद्ध दिखलाई पडता था। उनका चेहरा गम्भीर था, उस पर विषाद का कुछ भी चिह्न न था। महाराज की दृढता देखकर मेकरेब साहब अधिक देर तक न ठहर सके। बाहर आने पर जेलर ने कहा—जब से महाराज के मित्र उनसे मिलकर गये हैं, तब से बराबर अपने हिसाब किताब की जांच पडताल कर रहे हैं और नोट लिख रहे हैं।

फाँसी का समय 6 बजे प्रात काल था। मेकरब साहब ठीक समय से आधा घण्टा पूर्व जेल गये। वहां फांसी का सब सामान ठीक था। अंग्रेजों की अमलदारी में ब्राह्मण को फाँसी लगने का यह प्रथम ही अवसर था। हजारों मनुष्य देखने आये थे। उन सबकी आँखों में आँसू छलक रहे थे। खबर पाकर महाराज उतरकर नीचे आये। इस समय भी उनका मुख

प्रसन्न था। शेरीफ साहब के बैठने पर वे भी एक कुर्सी पर बैठ गए। इतने में किसी ने घड़ी जेब में निकाल कर देखी। यह देख महाराज तत्काल उठ खड़े हुए और बोले मैं तैयार हूँ। पीछे घूमकर देखा तो तीन ब्राह्मण खड़े थे। वे उनका मृत शरीर लेने आये थे। महाराज ने उन्हें छाती से लगाया। महाराज प्रसन्न थे, पर ब्राह्मण फूट-फूट कर रो रहे थे।

मेकरेब ने घड़ी निकालकर कहा—समय तो हो गया, किन्तु जब तक आप न कहेंगे, तब तक यह पापिनी क्रिया आरम्भ न की जायगी। एक घंटे तक सब चुप बैठे रहे। बीच-बीच में महाराज कुछ बातचीत करते रहे और माला फेरते रहे इसके बाद महाराज उठे, शेरीफ की तरफ देखा, और दोनों चल दिये। जेल के फाटक पर पालकी तैयार थी। महाराज पालकी पर सवार होकर जेल की तरफ चले। शरीफ और डिप्टी शेरीफ पालकी के पीछे-पीछे चल रहे थे। भीड़ बहुत थी पर दंगा फसाद का कुछ लक्षण न था। टिक्टी के पास पहुँचकर महाराजा ने कुछ ब्राह्मणों के न आने के विषय में पूछा। महाराज उनके विषय में पूछ ही रहे थे कि वे भी आ गये। उनसे एकान्त में बात करने को मेकरेब साहब ने अन्य अफसरों को हटाना चाहा परन्तु महाराज ने उन्हें रोककर कहा—मैं सिर्फ बच्चों और घर की स्त्रियों के सम्बन्ध में उनसे कुछ कहना चाहता हूँ। इसके बाद उन्होंने कहा—'जो ब्राह्मण मेरी मृत-देह ले जायेंगे, उन्हें शेरीफ साहब अपनी निगरानी में रख लें। उनके सिवा कोई मेरे शरीर का स्पर्श न करे।"

शेरीफ ने पूछा—क्या आप अपने मित्रों से मिलना चाहते हैं?

महाराज ने कहा—मित्र तो बहुत हैं, पर उनसे मिलने का न यह स्थान है न समय।

शेरीफ ने फिर पूछा—फांसी पर चढ़कर महाराज फाँसी का तख्ता हटाने का इशारा किस प्रकार देंगे?

महाराज ने कहा—हाथ हिलाते ही तख्ता सरका दिया जाय।

मेकरेब ने कहा—किन्तु नियमानुसार आपके हाथ तो बाँध दिये जायेंगे आप पैर हिलाकर सूचना दे दें।

महाराज ने स्वीकार किया।

शेरीफ ने महाराज की पालकी को फाँसी के तख्ते तक लाने की आज्ञा

दी, पर महाराज पालकी छोड़कर पैदल ही चल दिए। तख्त के पास पहुँचकर उन्होंने दोनों हाथ पीछे कर दिए। जब उनके मुख पर कपड़ा लपेटने का समय आया। उन्होंने अंग्रेज के हाथ से कपड़ा लपेटने में आपत्ति की। शरीफ ने एक ब्राह्मण सिपाही को रूमाल लपेटने का हुक्म दिया। महाराज ने उसे भी रोका। महाराज का एक नौकर उनके पैरों में लिपट रहा था, उसी को महाराज ने आज्ञा दी। इसके बाद वे चबूतरे पर चढ़कर अकड़कर खड़े हो गए। मैकरेब साहब लिखते हैं

"मैं खिन्न हो अपनी पालकी में घुस गया, किन्तु बैठने भी न पाया था कि महाराज ने पूर्व-सूचना के अनुसार पैर का इशारा दे दिया, और तख्ता खींच लिया गया। बात की बात में महाराज के प्राण पखेरू उड़ गए। नियत समय तक शव रस्सी पर लटका रहा, फिर ब्राह्मणों के हवाले कर दिया गया।"

ज्योंही महाराज के गले में फंदा डालकर तख्ता खींचा गया त्योंही लोग चीख मार मारकर भागने लगे। वे भागते जाते थे और कहते जाते थे ब्रह्महत्या हुईल। कलिकाता अपवित्र हुईल। देश पापे परिपूर्ण हुइल! फिरिंगेर धर्माधर्म ज्ञान नाईं!!! ब्राह्मणों ने उस दिन निर्जल व्रत रखा। बहुत से ब्राह्मण कलकत्ते को छोड़कर अन्यत्र रहने लगे। नगर में हाहाकार मच गया। उसकी गलियाँ लोगों के करुण-क्रन्दन से प्रतिध्वनित हो उठीं।

अट्ठारह

हेस्टिंग्स तीन वर्ष गवर्नर और दस वर्ष गवर्नर जनरल रहा। कम्पनी सरकार की अर्थलोलुपता को पूरी करने के लिए उसे अपने आदर्श भुला देने पड़े, फिर वह स्वयं भी प्रजा का शोषणकर्त्ता बना। उसने लाखों रुपया की अपने लिए भी रिश्वतें लीं और मालामाल होकर इंगलैंड गया। महाराज नन्दकुमार को फाँसी देने से उसके अपयश में और भी वृद्धि

हुई। इगनड जाकर उसक ऊपर रिश्वतें लेन और नन्दकुमार पर झूठा कम चलान क केस चल, परन्तु अन्त म उन कार्यों को अग्रेजी राज्य के हित म उचित समझकर उन्ह क्षमा कर दिया गया। क्लाइव और हस्टिग्स दोनो ही का अग्रेजी राज्य की भारत म नीव जमान का श्रेय प्राप्त है।

हस्टिग्स की भांति क्लाइव न भी प्रेम व्यापार किया था। जब वह इगलड म रह रहा था, उसका मन एक सुन्दर अग्रेज युवती की ओर आकर्षित हुआ। यह आकर्षण बढ़ता गया, परन्तु वह युवती शीलवती और पवित्र वृत्ति की स्त्री थी। क्लाइव न जब-जब उसस प्रणय निवदन करना चाहा उसन अवज्ञा स ठुकरा दिया। क्लाइव हताश नही हुआ, वह सुअवसर की प्रतीक्षा करन लगा। यद्यपि उसका प्रणय और भी युवतियो से चलता था, परन्तु इस युवती की प्रभावशाली सौम्यता न क्लाइव को व्याकुल बना दिया।

क्रिसमिस का त्योहार आया। क्लाइव न सुन्दर फूलो का एक गुच्छा और पत्र दकर अपन नौकर को उस महिला क घर भेजा और कहा कि यह पत्र और गुच्छा उसकी मेज पर रखकर चुपचाप लौट आना, कुछ कहना नही। नौकर गुच्छा रखकर लौट आया।

प्रात काल स्नान क बाद श्रृगार करत समय युवती न अपनी श्रृगार मेज पर वह फूलो का गुच्छा और पत्र दखा। युवती न पत्र पढा। उसम लिखा था—

जादी को आरम्भ म व्यापार के काम म नियुक्त किया गया था। उस काम म अनन्त धन-वभव प्राप्त किया जा सकता था, किन्तु जादी म युद्ध के लिए स्वाभाविक योग्यता और असाधारण प्रवत्ति मौजूद थी। इसलिए एक ओर क सदश धन वभव का तिरस्कार करत हुए जादी न अपनी भीतरी प्रेरणा स उन वीरो और मनुष्य जाति क उपकारको क यशस्वी जीवन म प्रवश किया जो कि बादशाहो और कौमो को विजय करक अपन पराजितो को सुख और शान्ति प्रदान करत ह। युद्ध क मदान म जादी की सबस पहली सफलता का परिणाम यह हुआ कि उसन एक धन सम्पन्न प्रान्त विजय कर लिया। इसक बाद उसने एक युद्ध-प्रेमी और

बलवान शत्रु के हाथों में एक महत्त्वपूर्ण दुर्ग विजय किया, जिसके द्वारा उसने अपने नये विजित प्रान्त को सुरक्षित कर लिया। यह दुर्ग एक तुच्छ अन्यायी नरेश का प्रधान दुर्ग था, जिसके जंगी जहाजी बेड़ा ने योरोप और एशिया के व्यापार को आपत्ति में डाल रखा था। यह दुर्ग जादी की विजयी सेना के सामने न ठहर सका। जादी ने शीघ्र ही उस स्थान को, जहां पर कि एक निर्दय असभ्य और विश्वासघातक नरेश ने भयंकर हत्याकाण्ड मचाया था, फिर से प्राप्त करके अपने देशवासियों की निर्दय हत्या का बदला लिया। जादी ने उस स्वेच्छाचारी, अन्यायी नरेश की प्रबल सेना को परास्त कर उसे तख्त से उतार दिया। जादी के चित्त में अपने लिए बादशाहतें प्राप्त करने की कोई इच्छा न थी, इसलिए इसके बाद उसने दूसरों को बादशाहतें प्रदान कीं। इस प्रकार वह एशिया का भाग्य-विधाता बन गया। जादी की विजय की कीर्ति गंगा के तटों से लेकर योरोप की पश्चिमी सीमा तक फैल गई। जादी फिर अपनी जन्मभूमि को लौटा, वहाँ पर जादी को यह देखकर सन्तोष हुआ कि उन लोगों ने, जिन्हें जादी ने एक धन-सम्पन्न प्रायद्वीप का स्वामी बना दिया था, खुले तौर पर जादी की सेवाओं का आदर किया, और वहां के अनुग्रहशील बादशाह ने जादी को इनाम दिया। इस पर जादी ने उदारता के साथ उस विशाल धन के समस्त सुखों को तिलाञ्जलि देकर, जो कि उसने अपने व्यवहार और अपनी वीरता से उपार्जन किया था, फिर भारत लौटकर अभागे देशी नरेशों को उनके पैतृक राज्य वापिस दिलाने और इन पूर्वीय प्रदेशों में, जहाँ पर कि जादी इतनी बार विजय प्राप्त कर चुका था, स्थायी और गौरवान्वित शान्ति स्थापित करने का निश्चय किया। किन्तु इन समस्त स्मरणीय वीरकृत्यों के बाद और उनके कारण जादी के महान् यश प्राप्त करने के बाद, उच्च आत्माओं की सर्वोच्च भावना, अर्थात प्रेम ने जादी की समस्त महत्वाकांक्षाओं पर पानी फेर दिया। जादी ने मिरजा को देखा है, और जब से जादी ने मिरजा का दिव्य मुखड़ा देखा है, तब से जादी को एक क्षण के लिए भी सुख अथवा चैन नसीब नहीं हुआ। यद्यपि जादी के पास धन और उसका यश इतना अधिक है कि शायद योरोप तथा एशिया के अन्दर अनेक सुन्दर स्त्रियाँ उससे प्रगाढ़ प्रेम दर्शाने को तैयार हो जातीं,

तथापि जादी के हृदय म किसी दूसरी स्त्री के लिए अणुमात्र विचार अथवा स्थान नही है। जादी क समस्त मन, हृदय और आत्मा व अन्दर प्रियतमा मिरजा ही भिरना भरी हुई है। जादी क लिए मिरजा ही उसका विश्व है। यदि जादी को यह पता लग जाय कि वह प्रश्न माहिनी, अर्थात मिरजा जादी की प्रतिमा म प्रसन्न है, तो जादी नष्टि म अपन को सबस अधिक भाग्यवान समझेगा और अपना समस्त धन और वैभव मिरजा क चरणा पर अपण कर दगा। जादी के लिए मिरजा ही इस पथ्वी पर सबस बडी सुन्दरी है। जब तक जादी को मिरजा के अन्तिम निश्चय का पता नही लगता, उस चन नही मिल सकता। प्रेम क मामल म सन्देह और शका की अवस्था इतनी अधिक कष्टकर होती है कि उसका वणन नही किया जा सकता। इसलिए जादी अपने प्रशसा पात्र मिरजा से प्रार्थना करता है कि जादी की अधीरता को दखत हुए वह इस पत्र का शीघ्र ही उत्तर द। दयालु परमात्मा मिरजा के चित्त म वह दया उत्पन्न कर कि मिरजा जादी की सनप्त आत्मा को फिर म शाति प्रदान कर सके। जहा पर आपको यह अप्रकट लख मिले, वही पर इसका उत्तर रख दीजिए। उत्तर जादी क हाथा मे सुरक्षित पहुँच जायगा।'

पत्र पढकर युवती न तुरत अनुमान कर लिया कि इस पत्र को भेजन वाला कौन है। उसन इस बात की जाच करना उचित न समझा कि जादी का यह पत्र जिसम उसन अपने प्रेम और यश दोना की डीग हाँकी थी, मेरे सोने के कमरे म किस तरह पहुँच गया। उसन स्वभावत यह समझा कि जादी क किसी आदमी ने मेरी किसी नौकरानी को रिश्वत देकर अपनी ओर कर लिया ह। जादी के इन प्रेम प्रदशना स छुटकारा पाने क लिए और इस विचार से कि जादी मेरे चुप रहन का यह अथ न समझे कि म उसके प्रेम को स्वीकार करन के लिए तयार हूँ, उस युवती ने निम्नलिखित पत्र उत्तर म भेजा—

'मिरजा इमानदार परिश्रमी और प्रतिष्ठित माता पिता की लडकी है। उसके माता पिता ने अपनी आखा क सामने उस समस्त आवश्यक सद्गुणा की शिक्षा दी है। मिरजा जादा क पूर्वीय अत्युक्तिपूण पत्र का उत्तर दन का कष्ट न उठाती, चाह जादी का पद कितना भी उच्च क्या न

हो किन्तु मिरजा को यह विश्वास न हुआ कि जादी मिरजा के उत्तर न देन का यह ाय समय लगा या नही कि मिरजा जादी के प्रेम-प्रदशन और धृष्टता का घृणा की दृष्टि से देखती है। मिरजा का इस बात की कोइ आकाक्षा नही है कि वह अपन पिता की जीविका अर्थात वाणिज्य-व्यापार मे बढकर इस तरह के किसी नीच काम की ओर जाय। मिरजा उस धन के प्रलोभना को घृणित समझती है, जो धन दूसरा को लूटकर और बबाद करके कमाया गया हा, विशेषकर जबकि वह धन निर्दोष स्त्रिया को बहकाने और उनके निष्कलक चरित्र को कलकित करन के लिए काम मे लाया जाय। यदि जादी की क्रियात्मक बुद्धि और उसका युद्ध-कौशल अब लडाई के मदान म और अधिक नही चमक सकता तो उसे चाहिए कि शान्ति के उद्योगा को उन्नति दे और शान्ति मे शासन करते करोडो दुखित जनता को फिर से शाति और समद्धि प्रदान करे। सच्च वीर वास्तव म वे हैं, जो मनुष्य-जाति क मित्र ह, उसके नाशक नही। यदि जादी वतमान मानव-समाज और उसकी भावी सतति की दृष्टि म उनका मित्र दिखाई दना चाहता है, ता मेरी राय म उस चाहिए कि वह अपने उन कृत्या का इतिहास, जिनकी वह डीग हाकता है अपन हाथ म लिखे। कायर देशी नरेशो को वश म किया गया, उन्ह धोखा दिया गया और अन्याय द्वारा उन्ह गद्दी से उतार दिया गया। निदय लुटेरा न उनकी दुखित प्रजा को सताया। अब चाहिए कि उनके देश की जिन पदावारा पर गरा न अपना अनन्य अधिकार जमा लिया है वे फिर म देशवासिया का दे दी जावें। मिरजा जादी के उन सब भयकर कृत्या को दुहरान का प्रयत्न न करेगी, जिनम कि जन सहार, बर्बादी, एक अन्यायी को गद्दी से उतारकर उसकी जगह दूसरे अन्यायी का गद्दी पर बठाना इत्यादि शामिल ह। समय ही इस बात का साबित कर सकेगा कि योरोप और एशिया मे जादी की कीर्ति न्याय द्वारा प्राप्त की गई है, अथवा अन्याय द्वारा और जादी के सग्राम मानव जाति स अधिकारा का समथन करन के लिए लडे गए हैं अथवा अपनी धन-पिपासा और महत्त्वाकाक्षा का शान्त करन क लिए। रहा उपाधिया और सम्मान की बात, सो य चीजें इतनी अधिक बार अयोग्य मनुष्या को प्रदान की जाती ह कि उन्ह सच्ची

याग्यता और न्यायपरता का पारितापिक नही कहा जा सकता। जादी को चाहिए कि वह नि स्वाथ सवा और दयालुता द्वारा भारतवासिया को इस बात का विश्वास दिलावे कि वह उनको दु ख देने के लिए नही, वल्कि उनकी रक्षा करन के लिए आया था। यदि भारतवासी क्षणिक शान्ति का सुख भाग रह है, ता उसक साथ ही वे याय विरुद्ध, लूट-खसोट और दुष्काल क भयकर कष्टा का भी अनुभव कर रह है। जादी को चाहिए कि वह अपनी निजया की छाया म स्वय ही आनन्द स वठ और प्रतिष्ठित घराना का अपमानित और कलकित करन का विचार न कर। सच्चा और हार्दिक प्रेम वास्तव म उच्च आत्माआ की एक वासना है, किन्तु वह पाशविक वासना नही, जोकि निर्दोष और सच्चरित्र लोगा को चरित्र भ्रष्ट करन का अपन को अधिकारी समझती है। मिरजा चाहती है कि जादी पूववत् आनद स रह और फिर कभी इस तरह क एक व्यक्ति का अपमान न कर जो अपन सदाचार क लिए जादी का पात्र है। जादी के धन और उसकी शान से चकाचौंध हो जाना वेश्याआ का काम है, मिरजा को जादी क धन और उसके प्रम-प्रदशन स हार्दिक घृणा है।"

इस उत्तर न क्लाइव क पत्र-व्यवहार को समाप्त कर दिया। फिर कभी उसन उस महिला को पत्र लिखन का साहस नही किया।

उन्नीस

सर जान कमार तीसर अग्रेज गवनर थे। उन्हान अवध क नवाव की पुरानी सधि को तोड डाला, और नवाव पर जोर दिया कि आप साढ़े पाँच लाख रुपया सालाना खच पर एक अग्रजी पल्टन अपन यहाँ और रखें। नवाव 'सवसीडियरी मना' क लिए पचास लाख रुपया सालाना प्रथम ही दता था। उसन इसम इन्कार कर दिया। तव अग्रजा न जवदस्ती वजीर खाऊलाल का पकडकर कद कर लिया। पीछ जव सर जॉन शार लखनऊ पहुच ता नइ फौज का खर्चा नवाव क सिर मढ़ दिया गया।

इस धीगा मुश्ती स नवाब के दिल को सदमा पहुँचा । वह बीमार हो गया और दवा खाने से भी इन्कार कर दिया । इसी रोग म उसकी मृत्यु हो गई ।

उसन 23 वष राज्य करके शरीर त्यागा । उसकी वसीयत पर मिरजा वजीरअली गद्दी पर बठ । पर उन्होंने एक ही वष मे सबको नाराज कर दिया । अत म ईस्ट इण्डिया कम्पनी न उ ह बनारस म नजरबन्द कर दिया । वहा उन्होंने विद्रोह की तैयारिया की, तो अग्रजो न उन्ह कलकत्ता बुलाया ।

जब रेजीडेण्ट मि० चोरी उन्ह यह सदेश देने गय तो बात बढ चली और नवाब ने अपनी तलवार निकालकर चोरी साहब को कत्ल कर दिया । मेम साहब भागकर बच गइ ।

कत्ल करने के बाद मिरजा नेपाल के जगलो म भेष बदले मुद्दत तक फिरत रह । अत मे नगर के राजा के विश्वासघात स गिरफ्तार किय गय, और लखनऊ म उन पर कत्ल का मुकद्दमा चला । पर कोई गवाह न मिलने से फाँसी से बच गय । इसके बाद उन्ह दुबारा कलकत्त म कद कर लिया गया, जहाँ वह 26 वष की आयु म मृत्यु को प्राप्त हुए ।

इनके बाद नवाब आसफउद्दौला क भाई सआदतअलीखा गद्दीनशीन हुए । उस समय उनकी उम्र 60 वष की थी । वे बडे बुद्धिमान, दूरदर्शी, ईमानदार और योग्य शासक थे । पर, लोग उन्ह कजूस कहा करत थ, क्योकि वे आसफउद्दौला की भाति शाह खच न थ । परन्तु खच की जगह पीछे न हटत थे । व अग्रज सरकार के बड भक्त थे क्योकि उन्ह अग्रज सरकार ने ही गद्दीनशीन किया था ।

कम्पनी सरकार को कुल मिलाकर एक करोड रुपय से ऊपर तथा इलाहाबाद का किला एक वष ही क अन्दर मिल गया । एक शत यह भी थी कि सिवा कम्पनी के आदमियो के अन्य कोइ भी यूरोपियन अवध-राज्य म न रहने पाये ।

इसके बाद जब लाड वेलजली गवनर होकर आये, तब उन्होंने दो वष बाद ही यह सधि तोड दी । उसने नवाब को अपनी सेना म कुछ सशोधन करने की भी अनुमति दी । उस सशोधन का अभिप्राय यह था कि माल-

गुजारी की वसूली आदि के लिए जितनी सेना दरकार हो, उसे छोड़कर शेष सब सेना तोड़ दी जाय, और उसके स्थान पर कम्पनी के प्रबन्ध और नवाब के नाम से कुछ ऐसी सेनाएँ रखी जायें जिनका खर्च 75 लाख रुपये सालाना हो।

नवाब ने इसके उत्तर में एक तर्क पूर्ण और कड़ा उत्तर लिखा, और अंग्रेज सरकार को इस प्रकार हस्तक्षेप करने के लिए मीठी फटकार दी।

इस पत्र को लार्ड वेलेजली ने तिरस्कारपूर्वक वापिस कर दिया और नवाब को लिख दिया कि कुछ पेंशन सालाना लेकर सल्तनत से हट जाओ, या जो पल्टनें भेजी जा रही हैं, या उनके खर्च के लिए आधा राज्य कम्पनी के हवाले करो।

ये पलटनें भेज दी गई और रजीडेण्ट को लिख दिया गया, कि यदि नवाब ची चपड़ करे तो सेना द्वारा राज्य पर कब्जा कर लो। वेलेजली ने यह भी स्पष्ट लिख दिया कि नवाब की सैनिक-शक्ति खत्म कर दी जाय, और अवध की सारी सल्तनत के दीवानी और फौजदारी अधिकार कम्पनी के हो जायें।

नवाब ने बहुत चिल्ल पों मचाई, पर नतीजा कुछ न हुआ, और नवाब को अपनी सल्तनत का आधा भाग, जिसकी आय एक करोड़ पतीस लाख रुपये सालाना थी, और जिससे वर्तमान उत्तर प्रदेश की बुनियाद पड़ी सदा के लिए कम्पनी को सौंप देने पड़े।

इसके कुछ दिन बाद ही फरुखाबाद के नवाब को, जो अवध का सूबा था, एक लाख साठ हजार रुपया सालाना पेंशन देकर गद्दी से उतार दिया गया।

सआदतअली में एक दुर्गुण भी था। वह शराबी और विलासी थे। पर पीछे से तौबा कर ली थी। उन्होंने लखनऊ में बहुत सी सुन्दर इमारतें बनवाई। वह लखनऊ को एक खूबसूरत शहर की शक्ल में देखना चाहते थे। उन्होंने बहुत-से मुहल्ले और बाजार भी बनवाये।

उनकी मृत्यु पर उनके बड़े बेटे नवाब गाजीउद्दीन हैदर गद्दी पर बैठे। अवध का नवाब दिल्ली मुगल सम्राट की अधीनता में एक सूबेदार और मुगल दरबार का वजीर होता था, परन्तु वारन हेस्टिंग्स ने लखनऊ में

दरबार करके नवाब गाजीउद्दीन हैदर को बाजाब्ता 'बादशाह' घोषित किया और उसकी दिल्ली दरबार की अधीनता समाप्त कर दी। बादशाही पदवी प्राप्त करके उन्होंने अपना नाम 'अबुल मुजफ्फर मइजुद्दीन शाह जिमनगाजीउद्दीन हैदर बादशाह' रखा। उन्होंने अपने नाम का सिक्का भी चलाया। परन्तु स्वतन्त्र बादशाह बनकर न नवाब के अधिकार बड़े, न स्वतन्त्रता। यह केवल एक हास्यास्पद प्रहसन था।

वह भी उदार, साहित्यिक और गुणग्राही बादशाह थे। मिरजा मुहम्मदजानवी किरमानी उनके दरबारी थे। उर्दू के प्रसिद्ध कवि आतिश और नासिख उन्हीं के जमाने में थे। ईद के अवसर पर कवियों को बहुत इनाम मिलता था। उस समय के प्रसिद्ध गवैये रजकअली और फजलअली का भी दरबार में पूरा मान था। वे दोनों 'ख्याल' गाने में अपनी सानी नहीं रखते थे। एक दक्षिणी वेश्या का भी उनके यहाँ बहुत मान था।

उनके प्रधानमन्त्री नवाब मोतमिउद्दौला आगा मीर थे जो बुद्धिमान् थे। उन्होंने राज्य की बड़ी उन्नति की। खजाना रुपयों से भरपूर रहा। करोड़ों रुपये ईस्ट-इण्डिया कम्पनी को कर्जा देते रहे।

बादशाह की प्रधान बेगम बादशाह-बेगम कहलाती थी, और बड़े ठाठ से अलग महल में रहती थी। उनमें किसी बात पर बादशाह की खटक गई थी। बेगम ने भी कई अच्छी इमारतें बनवाई। प्रसिद्ध शाह नजफ बेगम ने ही बनवाया था। गोमती नदी पर लोहे का पुल विलायत से बनवाकर मँगवाया था पर बेगम उसे तैयार न करा सकी। बीच में ही उनकी मृत्यु हो गई।

उस जमाने में कम्पनी की आर्थिक स्थिति बहुत ही नाजुक थी। उसकी हुण्डियाँ की दर बाजार में बारह फीसदी बट्टे पर निकलती थी। उन दिनों मेजर बेली लखनऊ में रेजीडेण्ट थे, जिनके बुरे व्यवहार से नवाब तंग आ गये थे। नवाब ने गवर्नर से इनकी शिकायतें कीं। गवर्नर लखनऊ आये, पर नतीजा उल्टा हुआ।

नवाब मेजर बेली के उद्धत प्रभुत्व के नीचे हर घण्टे आहें भरता था। उसे आशा थी कि गवर्नर उसे इस अन्याय से छुटकारा दिला देंगे। किन्तु उसने तो मेजर बेली का प्रभुत्व और भी पक्का कर दिया। मेजर बेली

छोटी-स छाटी वाता पर नवाव पर हुकूमत चलाता था। जव कभी मजर वली को नवाव म कुछ कहना हाता था, वह चाह जव विना सूचना किय महल म जा धमकता था । उसन अपन आदमियो का बडी-बडी तनख्वाहा पर नवाव के यहाँ लगा रखा था, जा जासूसी का काम करत थ। मजर वली जिस हाकिमाना शान क साथ हमशा नवाव न वातें करता था, उसक कारण नवाव कुटुम्बियो और प्रजा की नजरा म गिर गया था।

इस यात्रा म गवनर न नवाव स ढाई करोड रुपय नक्द नपाल युद्ध के खच के लिए वसूल किय । इनक वदल नपाल म मिली भूमि का एक टुकडा नवाव को दिया गया था, जो वास्तव मे लगभग वजर था ।

गाजीउद्दीन के वाद ज्यष्ठ पुत्र गाजी नसीरुद्दीन हैदर गद्दी पर वठे। उन्हान अपना नाम अब्दुलसर कुतुवुद्दीन सुलेमान जाह नसीरुद्दीन हैदर वाद शाह रखा । वह पच्चीस वप के युवक थे। उन्हाने गद्दी पर वठत ही पिता क वजीर को वर्खास्त करके एक पीलवान को वजीर वनाया और एतमुद्दौला का खिताव दिया पर वह वजीर शीघ्र ही मर गया। तव नवाव मुत्तजि मुद्दौला हकीम ऐहदीअली खाँ वजीर हुए। उन्हाने एक अस्पताल और एक खरातखाना तथा एक लीथो छापाखाना खुलवाया । एक अंग्रेजी स्कूल भी खुला।

नसीरुद्दीन वडे ऐयाश थे। इनके महल म कई यूरोपियन लडियाँ थी। छतर मजिल उन्होन ही वनवाई थी और भी वहुत सी कोठिया वनवाइ। उन्हान कनल विलकास की अधीनता म एक वधशाला भी वनवाइ जो 1857 क विद्रोह मे नष्ट हो गई।

उनके जमान म गवनर लाड वैंटिंग थ। उन्हान अवध के दौर म नवाव वादशाह को खूव डरा धमकाकर राज्य म वहुत स उलट फेर किय। यह अफवाह फल गई थी कि अग्रेज अव नवावी का अन्त किया चाहत ह। नवाव न घवराकर इगलिस्तान की पार्लियामेण्ट म अपील करन क इरादे से कनल यूनाक नामक फ्रासीसी को इगलण्ड भेजा। पर वटिंग न नवाव को डरा धमकाकर वीच ही म उसकी वर्खास्तगी का परवाना भिजवा दिया। उन्हाने दस वप राज्य किया।

उनक वाद वादशाह की वेश्या का पुत्र मुन्नाजान गद्दी पर वठा। पर

नसीरुद्दीन की माता ने उसका भारी विरोध कर, उसे गद्दी से उतरवाया। कुछ खून खराबी भी हुई। अन्त में उसे चुनार में कैद कर लिया गया। उसके बाद नवाब सआदतअलीखाँ के द्वितीय पुत्र मिरजा मुहम्मदअली गद्दी पर बैठे। वह विद्या-व्यसनी और शान्त पुरुष थे। हुसैनाबाद का इमामबाड़ा उन्होंने बनवाया था। उन्होंने पाँच वर्ष राज्य किया।

इनके बाद मिरजा मुहम्मद अमजदअलीखाँ गद्दी पर बैठे। वह शाह मुहम्मद अली के बेटे थे। वह भी 5 वर्ष राज्य कर, मृत्यु को प्राप्त हुए।

उनके बाद प्रसिद्ध और अन्तिम बादशाह वाजिदअली शाह 25 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे। वह बड़े शौकीन, नाजुक मिजाज और विनोद-प्रिय थे। उन्होंने नये फैशन के अँगरखे, कुरते, टोपी ईजाद किये। ठुमरी भी उन्हीं की ईजाद है। उनके जीवन में 24 घण्टे नाच गाने का रंग रहता। स्वयं भी नाचने-गाने में उस्ताद थे। सिकन्दरबाग, कैसरबाग आदि इमारतें उन्हीं की बनवाई हुई हैं।

लार्ड डलहौजी ने भारत के गवर्नर जनरल बनकर आते ही देसी रियासतों को समेटकर अंग्रेजों के कदमों में ला पटका। सबकी स्वतन्त्र सत्ता नष्ट करके उन्हें अंग्रेजों के आधीन बना दिया। अवध भी उसकी दृष्टि से नहीं बचा। लार्ड डलहौजी के पिता, जब वे कंपनी की भारतीय सेना के कमांडर इन चीफ थे, अपनी पत्नी सहित लखनऊ आये और नवाब से भेंट की। उन्होंने अपनी पत्नी का परिचय नवाब से कराया और देर तक पत्नी की बड़ाइयों की चर्चा करता रहा। नवाब उस समय हल्के सरूर में थे, उन्होंने समझा कि यह अंग्रेज इस अंग्रेज औरत को बेचना चाहता है। नवाब ने तंग आकर अपने खिदमतगार से कहा—"बहुत हुआ, इस औरत को भगाओ।"

डलहौजी के पिता इसे अपना अपमान समझकर लौट आये। लार्ड डलहौजी अपने पिता के उस अपमान का बदला लेने के लिए हैदराबाद और बरार को हड़पकर अवध की ओर बढ़े।

वाजिदअली शाह युवा, उत्साही और बुद्धिमान शासक थे। उन्होंने अंग्रेजों की नीयत समझकर अपनी सेना का संगठित करना आरम्भ किया। वे नित्य ही परेड कराने लगे। लखनऊ दरबार की सारी पलटन प्रतिदिन

सूर्योदय से पहले ही परेड भूमि में एकत्र हो जाते। वाजिदअली भी फौजी वर्दी पहनकर घोड़े पर सवार पहुँच जाते और दोपहर तक कवायद कराते। परेड में सैनिक की अनुपस्थिति अथवा विलम्ब उन्हें सहन नहीं था। उस पर भारी जुर्माना किया जाता था।

डलहौजी ने वाजिदअली को इस प्रकार की सैनिक व्यवस्था करने से मना किया। नवाब ने उसकी बात पर ध्यान न देकर अपना कार्य जारी रखा। परन्तु अन्त में डलहौजी की बात उन्हें माननी पड़ी। और वे निराश होकर दिन रात महलों में पड़े रहने लगे।

महलों में सुन्दरी सुरा ने उनके खाली वक्त को पूरा किया। युवक हृदय की देश भावना विषय वासना में बदल गई।

लार्ड डलहौजी ने गवर्नर होते ही घोषणा कर दी कि नवाब शासन के योग्य नहीं अतः अवध की सल्तनत कम्पनी के राज्य में मिला ली जाय। गवर्नर के हुक्म से रेजीडेण्ट उटरम महल में वह परवाना लेकर गया और उस पर नवाब को दस्तखत करने को कहा। नवाब ने इसमें बिल्कुल इन्कार कर दिया। उसको और प्रलोभन भी दिये गये। तीन दिन गुजर गये, पर नवाब ने दस्तखत करना स्वीकार न किया।

अंग्रेजों ने भेदनीति से काम लिया और नवाब के खिदमतगारों और मित्रों को लालच और भय से अपनी ओर किया। जब नवाब सुखसागर में डूब चुके तब उन्हें पकड़ने का जाल फैला दिया गया, जिसकी कल्पना भी नवाब ने नहीं की थी। अवध को हड़पने का उनका स्वप्न पूरा होने वाला था। उटरम ने नवाब के अतरंग मित्रों की सहायता लेकर उन्हें कैद करने का दूसरा उपाय किया।

लखनऊ के अमीनाबाद पार्क में इस समय जहाँ घंटाघर है, वहाँ अब से सौ वर्ष पूर्व एक छोटी-सी टूटी हुई मस्जिद थी, जो भूतावाली मस्जिद कहलाती थी, और अब जहाँ बालाजी का मन्दिर है, वहाँ एक छोटा-सा कच्चा एक मंजिला घर था। चारों तरफ न आज की-सी बहार थी न बिजली की चमक, न बढ़िया सड़क, न मोटर, न मेम साहबाओं का इतना जमघट।

वाजिदअली शाह की ऐयाशी और ठाट बाट के दौरदौरे थे। मगर इस

मुहल्ले में रौनक न थी। उस घर में टूटी सी कोठरी में एक बुढ़िया मनहूस सूरत, मन के समान बालों को बिखेरे बैठी किसी की प्रतीक्षा कर रही थी। घर में एक दीया धीमी आभा से टिमटिमा रहा था। रात के दस बज गये थे, जाड़ों के दिन थे, सभी लोग अपने-अपने घरों में रजाइयों में मुंह लपेटे पड़े थे। गली और सड़क पर सन्नाटा था।

धीरे धीरे बढ़िया वस्त्रों से आच्छादित एक पालकी इस टूटे घर के द्वार पर चुपचाप आ लगी, और काले वस्त्रों से आच्छादित एक स्त्री-मूर्ति ने पालकी से बाहर निकलकर धीरे-से द्वार पर थपकी दी। तत्काल द्वार खुला और स्त्री ने घर में प्रवेश किया।

बुढ़िया ने कहा—"खैर तो है?'

"सब ठीक है, क्या मौलवी साहब मौके पर मौजूद हैं?"

"कब के इंतजारी कर रहे हैं, कुछ ज्यादा जाफिशानी तो नहीं उठानी पड़ी?"

जाफिशानी? चखुश, जान पर खेलकर आई हूँ। करती भी क्या, गर्दन थोड़े ही उतरवानी थी?"

'होश में तो है?"

'अभी बेहोश है। किसी तरह राजी न होती थी। मजबूरन यह किया गया।"

'तब चलो।'

बुढ़िया उठी। दोनों पालकी में जा बैठी। पालकी सख्त पर चलकर मस्जिद की सीढ़ियाँ चढ़ती हुई भीतर चली गई।

मस्जिद में सन्नाटा और अंधकार था, मानो वहाँ कोई जीवित पुरुष नहीं है। पालकी के आरोहियों को इसकी परवाह न थी। वे पालकी को सीधे मस्जिद के भीतरी भाग में एक कक्ष में ले गये। वहां पालकी रखी। बुढ़िया ने बाहर आकर बगल की कोठरी में प्रवेश किया। वहाँ एक आदमी सिर से पैर तक चादर ओढ़े सो रहा था।

बुढ़िया ने कहा—"उठिये मौलवी साहब, मुरादों की तावीज इनायत कीजिए। क्या अभी बुखार नहीं उतरा?"

"अभी तो चढ़ा ही है," कहकर मौलवी साहब उठ बैठे। बुढ़िया ने

कुछ कान मे कहा—मौलवी साहब सफेद दाढी हिलाकर बाल—समय गया, कुछ खटका नहा। हैदर खाजा मौके पर रागनी लिये हाजिर मिलेगा। मगर तुम लोग वहाशी की हालत म उस किस तरह—

'आप बेफिक्र रह। बस, सुरग की चाबी इनायत करें।"

मौलवी साहब ने उठकर मस्जिद के बाइ ओर के चबूतर के पीछे वाले भाग म जाकर एक क्ब्र का पत्थर किसी तरकीब म हटा दिया। वहाँ सीढियाँ निकल आइ। बुढिया उसी तग तहखाने के रास्त उसो काले वस्त्र से आच्छादित लम्बी स्त्री के सहारे एक बेहोश स्त्री का नीचे उतारन लगी। उनके चले जाने पर मौलवी साहब न गौर स इधर-उधर दखा, और फिर किसी गुप्त तरकीब से तहखाने का द्वार बन्द कर दिया। तहखाना फिर कब्र बन गया।

चार हजार फानूसो मे काफूरी बत्तियाँ जल रही थी, और कमर की दीवार गुलाबी साटन के पर्दो स छिप रही थी। फश पर ईरानी कालीन बिछा था, जिस पर निहायत नफीस और खुशरग काम बना हुआ था। कमरा खूब लम्बा चौडा था। उसम तरह-तरह के ताजे फूलो के गुलदस्ते सजे हुए थ और हिना की तज महक स कमरा महक रहा था। कमरे के एक बाजू मे मखमल का बालिश्त भर ऊचा गद्दा बिछा हुआ था, जिस पर कारचौबी का उभरा हुआ बहुत ही खुशनुमा काम था। उस पर एक बडी सी मसनद लगी थी जिन पर सुहरी खभो पर मोती की झालर का चदोवा तना था।

मसनद पर एक बलिष्ठ पुरुष उत्सुकता स, किन्तु अलसाया बठा था। इसके वस्त्र अस्त व्यस्त थे। इसका मोती के समान उज्ज्वल रग, कामदेव को मात करने वाला प्रदीप्त सौदय, चब्बेदार मूछें, रसभरी आख और मदिरा मे प्रस्फुरित होठ कुछ और ही समा बना रहे थ। सामने पानदान म सुनहरी गिलौरियाँ भरी थी। इत्रदान म शीशियाँ लुढक रही थी। शराब की प्याली और सुराही क्षण क्षण पर खाली हो रही थी। वह सुगधित मदिरा मानो उसके उज्ज्वल रग पर सुनहरी निखार ला रही थी। उसके कठ म पन्ने का एक बडा सा कठा पडा था और उँगलियो म हीरे की अगूठियाँ बिजली की तरह दमक रही थी। यही लोगो म दशनीय पुरुष

लखनऊ के प्रख्यात नवाव वाजिदअली शाह थे।

कमरे म कोइ न था। वे वडी आतुरता से किसी की प्रतीक्षा कर रह ये। यह आतुरता क्षण-क्षण वढ रही थी। एकाएक एक खटका हुआ। बादशाह ने ताली वजाई और वही लम्बी स्त्री-मूर्ति, सिर से पैर तक काल वस्त्र स शरीर का लपेटे, माना दीवार फाडकर आ उपस्थित हुई।

"ओह मरी गवरू! तुमन तो इतजारी ही म मार डाला। क्या गि गै-रियाँ लाई हो?"

"म हुजूर पर कुर्बान।" इतना कहकर उसन वह काला लवादा उतार डाला। उफ, गजव! उस काले आवेष्ठन मे मानो सूय का तेज छिप रहा था। कमरा चमक उठा। वहुत वढिया चमकीले विलायती साटन की पोशाक पहन एक सादय की प्रतिमा इस तरह निकल आई, जैसे राख क ढेर म स अगार। इस अग्नि सादय की रूप-रखा कैसे वयान की जाए? इस अग्रेजी राज्य और अग्रेजी सभ्यता म जहाँ क्षणभर चमककर वादला म विलीन हो जान वाली बिजली सडक पर अयाचित ढेरो प्रकाश विखेरती रहती है, इस रूप-ज्वाला की उपमा कहा ढूढी जाए? उस अधकारमय रात्रि म यदि उस खडा कर दिया जाए तो वह कसौटी पर स्वण-रेखा की तरह दिप उठे, और यदि वह दिन क ज्वलन्त प्रकाश मे खडी कर दी जाए तो उस देखन का साहस कौन करे? किन आखो म इतना तज है?

उस सुगधित और मधुर प्रकाश म मदिरा रजित नेत्रो से उस रूप-ज्वाला को देखत ही वाजिदअली की वासना भडक उठी। उन्होंने कहा—"रूपा, नजदीक आओ। एक प्याली शीराजी और अपनी लगाई हुई अवरी पान की बीडियाँ दो तो। तुमन तो तरसा-तरसा कर ही मार डाला।"

रूपा आग वढी, सुराही से शराव उडेली और जमीन म घुटन टक कर आ वढा दा। इसके वाद उसन चार सोने के वक-लपटी बीडियाँ निकालकर वादशाह क सामने पश की और दस्तवस्ता अज की—"हुजूर की खिदमत म लौडी वह तोहफा ल आई है।"

वाजिदअली शाह की बाँछें खिल गइ। उन्होन रूपा को घूरकर कहा—"वाह! तव तो आज ।" रूपा ने सकेत लिया। हैदर खोजा उस फूल-सी मुरझाई-कुसुमकली को फूल की तरह हाथो पर उठाकर, पान गिलौरी

की तश्तरी की तरह बादशाह के रूबरू कालीन पर डाल गया। ख्वाजा ने बाँकी अदा में कहा —"हुजूर, का आदाब" और चल दी।

एक चौदह वर्ष की भयभीत, मूर्छित, असहाय कुमारी बालिका अकस्मात आख खुलने पर सम्मुख शाही ठाठ म सजे हुए महल और दैत्य के समान नरपशु को पाप वासना म प्रमत्त देखकर क्या समझेगी ? कौन अब इस भयानक क्षण की कल्पना कर। पर वही क्षण होश म आते ही उस बालिका के सामने आया। वह एकदम चीत्कार करके फिर बेहोश हो गई। पर इस बार शीघ्र ही उसकी मूर्छा दूर हो गई। एक अतर्क्य साहस, जो ऐसी अवस्था म प्रत्यक जीवित प्राणी म हो जाता है, बालिका के शरीर मे भी उदय हो आया। वह सिमटकर बैठ गई, और पागल की तरह चारो तरफ एक दृष्टि डालकर एकटक उस मत्त पुरुष की ओर देखने लगी।

उस भयानक क्षण मे भी उस विशाल पुरुष का सौदर्य और प्रभा देख कर उसे कुछ साहस हुआ। वह बोली तो नही पर कुछ स्वस्थ होने लगी।

नवाब जोर से हस दिये। उन्होंने गले का वह बहुमूल्य कंठा उतार कर बालिका की ओर फेंक दिया। इसके बाद वे नेत्रो के तीर निरन्तर फेंकते रहे।

बालिका ने कंठा देखा भी नहीं, छुआ भी नही। वह वैसी ही सिकुडी हुई, वैसी ही निर्निमेष दृष्टि से भयभीत हुई नवाब को देखती रही।

नवाब ने दस्तक दी। दो बादियाँ दस्तबस्ता आ हाजिर हुई। नवाब ने हुक्म दिया, इसे गुस्ल कराकर और सब्जपरी बनाकर हाजिर करो। उस पुरुष पाषाण की अपेक्षा स्त्रियो का सग गनीमत जानकर बालिका मत्र मुग्ध-सी उठकर उनके साथ चली गई।

इसी समय एक खोजे ने आकर अर्ज की — 'खुदावद ! रेजीडेट उटरम साहब बहादुर बडी देर से हाजिर है।

"उनसे कह दो, अभी मुलाकात नही होगी।"

आलीजाह ! कलकत्ता से एक जरूरी "

दूर हो मुर्दार।

खोजा चला गया।

लखनऊ के खास चौकबाजार की बहार देखने योग्य थी। शाम हो

चली थी, और छिड़काव हो गया था। इसकी और बहलिया, पालकियां और घोड़ों का अजीब जमघट था। आज तो उजड़े अमीनाबाद का रंग ही कुछ और है। तब यही रौनक चौक को प्राप्त थी। बीच चौक में रूपा की पान की दुकान थी फानूसा और रंगीन झाड़ों से जगमगाती गुलाबी रोशनी के बीच, स्वच्छ बोतल में मदिरा की तरह, रूपा दुकान पर बैठी थी। दो निहायत हसीन लौंडियां पान की गिलौरियां बनाकर उनमें सोने के वर्क लपेट रही थीं। बीच-बीच में अठखेलियां भी कर रही थीं। आजकल के कलकत्ता दिल्ली के रंगमंचों पर भी ऐसा मोहक और आकर्षक दृश्य नहीं देख पड़ता, जैसा उस समय रूपा की दुकान पर था। ग्राहकों की भीड़ का पार न था। रूपा खास-खास ग्राहकों का स्वागत कर पान दे रही थी। बदले में खनाखन अशर्फियां से उसकी गंगा-जमनी की तश्तरी भर रही थी। वे अशर्फियां रूपा की एक अदा, एक मुस्कराहट—केवल एक कटाक्ष का मान थीं। पान गिलौरियां तो लोगों को घाटे में पड़ती थीं। एक नाजुकअदाज नवाबजादे तामजाम में बैठे अपने मुसाहबों और कहारों के झुरमुट के साथ आये और रूपा की दुकान पर तामजाम रोका।

रूपा ने सलाम करके कहा—मैं सदके शाहजादा साहब, जरी बांदी की एक गिलौरी कुबूल फरमायें।

रूपा ने लौंडी की तरफ इशारा किया। लौंडी मटकती हुई, सोने की रकाबी में पांच-सात गिलौरियां लेकर तामजाम तक गई। शहजादे ने मुस्कराकर दो गिलौरियां उठाई, और एक मुट्ठी अशर्फियां तश्तरी में डालकर आगे बढ़े।

एक खां साहब बालों में मेंहदी लगाए, दिल्ली के जरी के जूते पहने, तनजेब का चमकन कसे, सिर पर लैसदार ऊँची टोपी लगाए आए। रूपा ने बड़े तपाक से कहा—अख्खा खां साहब। आज तो हुजूर रास्ता भूल गए। अरे कोई है, आपको बैठने को जगह दो। अरी, गिलौरियां तो लाओ।

खां साहब रूपा के रूप की तरह चुपचाप गिलौरियों के रस का घूंट पीने लगे।

थोड़ी देर में एक अधेड़ मुसलमान अमीरजादे की शक्ल में आए। उन्हें देखते ही रूपा ने कहा—अरे हुजूर तशरीफ ला रहे हैं। मेरे सरकार।

आप तो ईद के चाँद हो गए। कहिए, खराफियत है ? अरी मिर्जा साहब को गिलौरियाँ दी ?

तश्तरी म खनाउन हो रही थी, और रूपा का रूप और पान की हाट खूब गरमा रही थी। ज्या ज्या अधकार बढता जाता था, त्यो-त्यो रूपा पर रूप की दुपहरी चढ रही थी। धीरे-धीरे एक पहर रात बीत गइ। ग्राहका की भीड कुछ कम हुई। रूपा अब सिफ कुछ चुन हुए प्रेमी ग्राहका स घुल घुल कर बातें कर रही थी। धीरे धीरे एक अजनबी आदमी दुकान पर आकर खडा हो गया। रूपा न अप्रतिभ होकर पूछा—

'आपको क्या चाहिए ?"

आपके पास क्या-क्या मिलता है ?"

बहुत-सी चीजें। क्या पान खाइएगा ?'

'क्या हज है।

रूपा के सकेत स दासी बालिका न पान की तश्तरी अजनबी के आगे धर दी।

दो बीडिया हाथ म लेते हुए उसने कहा—"इनकी कीमत क्या है बी साहबा।

"जो कुछ जनाब द सके।

यह बात है ? तब ठीक, जो कुछ मै लेना चाहूँ वह लूगा भी।" अजनबी हँसा नही। उसने भेदभरी दृष्टि स रूपा को देखा।

रूपा की भृकुटी जरा टेढी पडी, और वह एक बार अजनबी को तीव्र दृष्टि स दखकर फिर अपने मित्रो क साथ बातचीत म लग गई। पर बातचीत का रग जमा नही। धीरे धीरे मित्रगण उठ गए। रूपा न एकात पाकर कहा—

'क्या हुजूर का मुफ्त कोइ खास काम है ?'

"मेरा तो नही, मगर कम्पनी बहादुर का है।"

रूपा काँप उठी। वह बोली—'कम्पनी बहादुर का क्या हुक्म है ?"

"भीतर चलो तो कहा जाए।'

"मगर माफ कीजिए—आप पर यकीन कैसे ?"

"ओह! समझ गया। बडे साहब की यह चीज तो तुम शायद

पहचानती ही होगी ?"

यह कहकर उन्होंने एक अगूठी रूपा को दूर से दिखा दी।

"समझ गई। आप अन्दर तशरीफ लाइए।"

रूपा न एक दासी को अपन स्थान पर बठाकर अजनबी के साथ दुकान के भीतर कक्ष म प्रवश किया।

दोना व्यक्तिया म क्या-क्या बातें हुईं, यह तो हम नही जानत, मगर उसके ठीक तीन घटे बाद दो व्यक्ति काला लबादा ओढे दुकान स निकले, और किनारे लगी हुई पालकी म बठ गए। पालकी धीरे धीरे उसी भूता-वाली मस्जिद म पहुँची। उसी प्रकार मौलवी न कब्र का पत्थर हटाया, और एक मूर्ति ने कब्र के तहखान म प्रवेश किया। दूसर व्यक्ति न एकाएक मौलवी को पटककर मुश्कें बाँध ली, और एक सकत किया। क्षण भर मे पचास सुसज्जित काली-काली मूर्तियाँ आ खडी हुइ और बिना एक शब्द मुह स निकाल चुपचाप कब्र के अन्दर उतर गई।

अब फिर चलिए अनददेव के उसी रग-मन्दिर म। सुख-साधना से भरपूर वही कक्ष आज सजावट खत्म कर गया था। सहस्रो उल्कापात की तरह रगीन हाँडियाँ, बिल्लौरी फानूस और हजार झाड सब जल रहे थे। तत्परता स, किन्तु नीरव बाँदियाँ और गुलाम दौड धूप कर रहे थ। अन-गिनत रमणियाँ अपन मदभर होठो की प्यालियो मे भाव की मदिरा उँडेल रही थी। उन सुरील रागा की बौछारा म बठे बादशाह वाजिदअली शाह सराबोर हो रह थे। उस गायनोन्माद मे मालूम होता था, कमर के जड पदार्थ भी मनवाल होकर नाच उठेंगे। नाचनवालियो के ठुमके और नूपुर की ध्वनि सोत हुए यौवन स ठोकर मारकर कहती थी – उठ, उठ, ओ मत-वाले, उठ। उन नतकियो के बढिया चिकनदोजी के सुवासित दुपट्टा स निकलती हुई सुग ध उसके नत्यवग स विचलित वायु के साथ घुल मिल-कर गदर मचा रही थी। पर सामन का सुनहरी फव्वारा, जो स्थिर ताल पर बीस हाथ ऊपर फेंककर रगीन जलबिंदु राशिया स हाथापाइ कर रहा था, देखकर कलजा बिना उछल कस रह सकता था।

उसी मसनद पर बादशाह वाजिदअली शाह बठे थ। एक गगा-जमनी काम का अलबला वहाँ रखा था, जिसकी खमीरी मुश्की तम्बाकू जलकर

अनोखी सुगन्ध फैला रही थी। चारों तरफ सुन्दरियों का झुरमुट उन्हें घेर कर बैठा था। सभी अधनंगी, उन्मत्त और निर्लज्ज हो रही थीं। पास ही सुराही और प्यालियां रखी थीं, और बारी-बारी से वे उन दुलभ होठों को चूम रही थीं। आधा मद पी-पीकर वे सुन्दरियां उन प्यालियों को बादशाह के होठों में लगा देती थीं। वे आंखें बन्द करके उन्हें पी जाते थे।

कुछ सुन्दरियां पान लगा रही थीं, कुछ अलबेल की निगाली पकड़े हुए थीं। दो सुन्दरियां दोनों तरफ पीकदान लिये खड़ी थीं, जिनमें बादशाह कभी-कभी पीक गिरा देते थे।

इस उन्नमित आमोद के बीचोंबीच एक मुरझाया हुआ पुष्प, कुचली हुई पान की गिलोरी। वही बालिका, बहुमूल्य हीरे-खचित वस्त्र पहन, बादशाह के बिल्कुल अंक में लगभग मूर्छित और अस्तव्यस्त पड़ी थी। रह-रहकर शराब की प्याली उसके मुख से लग रही थी, और वह खाली कर रही थी। निर्जीव दुशाले की तरह बादशाह उसे अपने बदन से सटाए मानो अपनी तमाम इन्द्रियों को एक ही रस से सराबोर कर रहे थे। गम्भीर आधी रात बीत रही थी। सहसा इसी आनन्द वर्षा में बिजली गिरी। कक्ष के उसी गुप्त द्वार को विदीर्ण कर क्षण भर में वही रूपा, काले आवरण में नख शिख ढके निकल आई। दूसरे क्षण में एक और मूर्ति वैसे ही आवेष्टन में गुप्त बाहर निकल आई। क्षण भर बाद दोनों ने अपने आवेष्टन उतार फेंके। वही अग्नि शिखा ज्वलन्त रूपा और उसके साथ नौरोना कर्नल उटरम।

नर्तकियों ने एकदम नाचना गाना रोक दिया। बांदियां शराब की प्यालियां लिये काठ की पुतली की तरह खड़ी रह गईं। केवल फव्वारा ज्यों का-त्यों आनन्द से उछल रहा था। बादशाह यद्यपि बिल्कुल बदहवास थे मगर यह सब देख वे मानो आधे उठकर बोले—ओह! रूपा दिलरुबा तुम? और ऐं—मेरे दोस्त कर्नल—इस वक्त? यह क्या माजरा है?

आगे बढ़कर और अपनी चुस्त पोशाक ठीक करते हुए तलवार की मूठ पर हाथ रख उटरम ने कहा—"कल आलीजाह की खिदमत में हाजिर हुआ था, मगर"

ओफ मगर—इस वक्त इस रास्ते में? ऐं, माजरा क्या है? अच्छा

बैठो, हां, जोहरा, एक प्याला—मेरे दास्त कनल के ।"

"माफ कीजिए हुजूर। इस वक्त मैं आनरेबल कम्पनी सरकार के एक काम से आपकी खिदमत मे हाजिर हुआ हूँ।"

"कम्पनी सरकार का काम ? वह काम क्या है ?" बादशाह ने कहा।

"मैं तखलिए म अर्ज किया चाहता हूँ।"

"तखलिया। अच्छा, अच्छा जोहरा। ओ कादिर।"

धीरे धीरे रूपा को छोडकर सभी बाहर निकल गए। उमी सौन्दय-स्वप्न मे अवशिष्ट रह गई अकेली रूपा। रूपा को लक्ष्य करके बादशाह ने कहा—यह तो गैर नही। रूपा! दिलरुबा, एक प्याला अपन हाथो स दो तो रूपा न सुराही स शराब उँडेल लबालब प्याला भरकर बादशाह के होठो म लगा दिया। हाय! लखनऊ की नवाबी का वही अन्तिम प्याला था। उसे बादशाह न पीकर कहा—"वाह प्यारी। हां अब कहो वह बात। मरे दोस्त '

' हुजूर का जरा रजीडेसी तक चलना पडेगा।"

बादशाह न उछलकर कहा—"ऐं, यह कसी बात। रजीडिमी तक मुझे ?'

"जहापनाह, मैं मजबूर हूँ, काम ऐसा ही है।"

"गरमुमकिन। गरमुमकिन।" बादशाह गुस्स स होठ काटकर उठे और अपन हाथ स सुराही से उँडेलकर तीन चार प्याल शराब पी गए। धीरे धीर उसी दीवार स एक एक करके चालीस गोरे सैनिक सगीन और किच सजाए, कक्ष म घुस आए।

बादशाह दखकर बोल— खुदा की कसम यह तो दगा है। कादिर!"

"जहांपनाह अगर खुशी स मेरी अर्जी कुबूल न करगे, तो खून-खराबी होगी। कम्पनी के बहादुर के गारा ने महल घेर लिया है। अज यही है कि सरकार चुपचाप चले चलें।

बादशाह धम से बठ गए। मालूम हाता है, क्षण भर क लिए उनका नशा उतर गया। उन्हान कहा—"तब तुम क्या मेर दुश्मन हाकर मुझे कद करन आए हो ?'

' मैं हुजूर का दास्त, हर तरह हुजूर के आराम और फरहत का ख्याल

रखता हूँ और हमेशा रखूगा।"

बादशाह न रूपा की ओर देखकर कहा—"रूपा! रूपा! यह क्या माजरा है? तुम भी क्या इस मामले म हो? एक प्याला—मगर नहीं, अब नहीं, अच्छा सब साफ साफ सच कहो। कनल—मेरे दोस्त—नहीं-नहीं, अच्छा कनल उटरम। अब खुलासावार बयान करो।"

"सरकार, ज्यादा मैं कुछ नहीं कह सकता। कम्पनी बहादुर का खास परवाना लेकर खुद गवनर-जनरल के अडर सैक्रेटरी तशरीफ लाए ह, वे आलीजाह से कुछ मशवरा किया चाहत ह।"

"मगर यहाँ।"

"यह नामुमकिन है।'

बादशाह ने कनल की तरफ देखा। वह तना खडा था और उसका हाथ तलवार की मूठ पर था।

"समझ गया, सब समझ गया।" यह कहकर बादशाह कुछ देर हाथो से आखें ढाँपकर बठ गए। कदाचित उनकी सुदर रसभरी आँखों म आँसू भर आए।

रूपा न पास आकर कहा—"मेरे खुदाबद, बाँदी "

'हट जा ऐ नमकहराम रजील, बाजारू औरत।"

बादशाह न यह कहकर उस एक लात लगाई, और कहा—"तब चलो। मैं चलता हूँ। खुदा हाफिज।"

पहले बादशाह, पीछे कनल उटरम उनके पीछे रूपा और सबसे अन्त मे एक एक करके सिपाही उसी दरार म विलीन हो गए। महल म किसी को कुछ मालूम न था। वह मूर्तिमान सगीत, वह उमडता हुआ आनन्द-समुद्र सण के लिए मानो किसी जादूगर न निर्जीव कर दिया।

कलकत्ता क एक उजाड-स भाग म, एक बहुत विशाल मकान म, वाजिदअली शाह को नजरबद कर दिया गया। ठाठ लगभग वही था। सकडा दासियाँ, बाँदियाँ और वश्याएँ भरी हुई थी। पर वह लखनऊ का रग कहाँ!

खाना खान का वक्त हुआ और जब दस्तरखान पर खाना चुना गया, तो बादशाह न चख चखकर फेंक दिया। अग्रेज अफसर न पूछा—'खाने

मे क्या नुक्स है ?"

नवाब के खास खिदमतगार ने जवाब दिया—"नमक खराब है।"

"नवाब कैसा नमक खाते हैं ?"

"एक मन का डला रखकर उस पर पानी की धार छोड़ी जाती है। जब घुलते घुलते छोटा सा टुकड़ा रह जाता है, तब नवाब के खाने में वह नमक इस्तेमाल होता है।"

अंग्रेज अधिकारी मुस्कराता चला गया।

वाजिदअली के बाद अवध के ताल्लुकेदारों की रियासतें छीन ली गईं और अवध का तख्त सदा के लिए धूल में मिल गया।

□□